हिन्दी दैनिक
तीसरा विकल्प न्यूज़
(लखनऊ से प्रकाशित)
वर्षः- 02, अंकः-213, पृष्ठः-08, मूल्यः- 2 रु.
लखनऊ, गुरुवार 16 जनवरी 2025

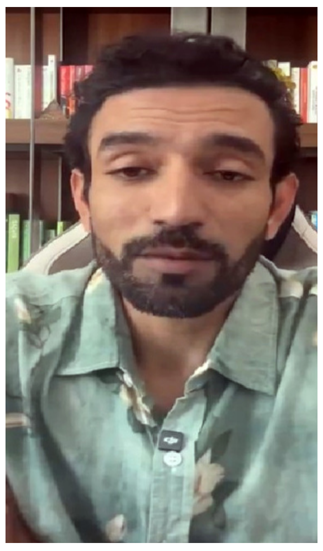

‘बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ’ का संदेश देकर उड़ाई पतंगें मकर...02

मकर संक्रांति पर लोगों ने सरयू नदी में लगाई आस्था...06

हल्दीराम में हिस्सेदारी खरीदना चाहती है पेप्सिको

मेटा 5 प्रतिशत लोगों को नौकरी से निकालेगी

सोने-चांदी के दाम में तेजी

संक्षिप्त

छत्तीसगढ़ शराब घोटाले में ईडी की कार्रवाई, पूर्व आबकारी मंत्री कवासी लखमा को किया गिरफ्तार

नयी दिल्ली, एजेंसी। प्रवर्तन निदेशालय ने बुधवार को छत्तीसगढ़ के पूर्व आबकारी मंत्री कवासी लखमा को कथित करोड़ों रुपये के शराब घोटाले में गिरफ्तार कर लिया। एजेंसी के एक सूत्र ने बताया कि सुकमा के कोंटा से छह बार के विधायक लखमा से पिछले कुछ दिनों से ईडी के रायपुर में पूछताछ की जा रही थी। आरोप है कि यह घोटाला पिछली कांग्रेस सरकार के तहत हुआ था, जिसमें लखमा भी शामिल थे। अदालत ले जाते समय लखमा ने खुद को निर्दोष बताते हुए संवाददाताओं से कहा कि मेरे पास से एक पैसा भी नहीं मिला है, लेकिन फिर भी उन्होंने मुझे गिरफ्तार कर लिया है। मैं उनका सहयोग कर रहा था। लेकिन मैं बस्तर के मुद्दे उठाता रहूंगा। 28 दिसंबर को ईडी ने लखमा से जुड़े परिसरों पर छापेमारी की, जिसमें छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में उनका आधिकारिक आवास और सुकमा में उनके बेटे हरीश का आवास भी शामिल था।

सिसोदिया व सत्येंद्र जैन ने किया नामांकन

नयी दिल्ली, एजेंसी। आम आदमी पार्टी (आप) के जंगपुरा से प्रत्याशी मनीष सिसोदिया और शकूरबस्ती से सत्येन्द्र जैन ने बुधवार को अपना-अपना नामांकन किया। श्री सिसोदिया ने कहा कि आपके बीच आपका आशीर्वाद लेने आया हूं। आपके आशीर्वाद से विधायक बनकर दिल्ली सरकार के बैठूंगा तो जंगपुरा के सारे काम तेजी से होंगे और किसी भी काम के लिए फंड की कमी नहीं होगी। उन्होंने कहा कि हर तरफ से लोगों का समर्थन मिल रहा है। जंगपुरा की जनता से इतना प्यार और सम्मान मिल रहा है, यह मेरे लिए बहुत बड़ा दिन है। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के पास कुछ बताने के लिए नहीं है। दिल्ली में कानून व्यवस्था की जिम्मेदारी उनकी है। अगर कहीं कोई एनजीओ या कोई व्यक्ति कुछ कर रहा है तो वे लोग क्या कर रहे थे?

भीषण ठंड का कहर जारी, घने कोहरे में लिपटा उत्तर प्रदेश

कई जिलों में बूंदाबांदी के आसार

घना कोहरा छाने की संभावना

बांदा, चित्रकूट, फतेहपुर, गाजीपुर, मऊ, बलिया, देवरिया, गोरखपुर, संतकबीरनगर, बस्ती, कुशीनगर, महाराजगंज, सिद्धार्थनगर, गोंडा, बलरामपुर, श्रावस्ती, बहराइच, लखीमपुर खीरी, सीतापुर, हरदोई, फर्रुखाबाद, कन्नौज, कानपुर देहात, कानपुर नगर, उन्नाव, लखनऊ, बाराबंकी, गाजियाबाद, हापुड, गौतम बुद्ध नगर, बुलन्दशहर, अलीगढ़, मथुरा, हाथरस, कासगंज, एटा, आगरा, फिरोजाबाद, मैनपुरी, इटावा, औरैया, संभल, बदायूं, जालौन, हमीरपुर, महोबा, झांसी, ललितपुर व आसपास इलाकों में घने कोहरे की भविष्यवाणी की गई है।

लखनऊ, संवाददाता। उत्तर प्रदेश में बुधवार को ज्यादातर इलाके घने कोहरे की चपेट में रहे। यूपी के तमाम तराई और दक्षिणी जिलों में मंगलवार और बुधवार को धूप नहीं हुई और बादलों की आवाजाही संग दिन भर गलन भरी ठंडी हवाओं का प्रकोप रहा। कोहरे की घनी चादर की वजह से बुधवार की सुबह कानपुर में दृश्यता शून्य तक सिमट गई। वहीं, राजधानी लखनऊ समेत प्रयागराज, मेरठ, आगरा आदि शहरों में दृश्यता 50 मीटर से भी कम रही। बदले हुए मौसम के बीच मौसम विभाग की ओर से बुधवार को पश्चिमी यूपी, बुंदेलखंड और आगरा क्षेत्र में छिटपुट बूंदाबांदी का पूर्वानुमान जारी किया गया है। वहीं, प्रदेश के 27 जिलों में अत्यधिक घने कोहरे के ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। आंचलिक मौसम विज्ञान केंद्र लखनऊ के वैज्ञानिक एम. दानिश का कहना है कि बुधवार से पश्चिमी विक्षोभ के असर से बुंदेलखंड और आगरा क्षेत्र में बूंदाबांदी के संकेत हैं।

यहां है बुधवार की रात घने कोहरे का ऑरेंज अलर्ट

प्रयागराज, प्रतापगढ़, सोनभद्र, मिर्जापुर, चंदौली, वाराणसी, कौशाम्बी, भदोही, जौनपुर, आजमगढ़, रायबरेली, अमेठी, सुल्तानपुर, अयोध्या, अम्बेडकरनगर, सहारनपुर, शामली, मुजफ्फरनगर, बागपत, मेरठ, बिजनौर, अमरोहा, मुरादाबाद, रामपुर, बरेली, पीलीभीत, शाहजहांपुर व आसपास इलाकों में।

बुधवार को गरज चमक संग बिजली गिरने की संभावना

गाजियाबाद, हापुड़, गौतम बुद्ध नगर, बुलंदशहर, अलीगढ़, मथुरा, हाथरस, कासगंज, एटा, आगरा, फिरोजाबाद मैनपुरी, इटावा एवं आसपास इलाकों में।

दिल्ली की जनता इस बार भी काम की राजनीति को चुनेगी: केजरीवाल

नयी दिल्ली, एजेंसी। आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने बुधवार को नयी दिल्ली विधानसभा सीट से अपना नामांकन पत्र दाखिल करने के बाद कहा कि दिल्ली की जनता इस बार भी काम की राजनीति को चुनेगी। श्री केजरीवाल ने नामांकन पत्र दाखिल करने के बाद कहा कि दिल्ली की जनता इस बार भी काम की राजनीति को चुनेगी। पिछले 10 वर्षों में दिल्ली की जनता ने जो प्यार और आशीर्वाद दिया, उसने मुझे पूरी लगन और सेवाभाव से काम करने की शक्ति और प्रेरणा दी है। उन्होंने दिल्ली की जनता से कहा कि आप सभी काम के लिए वोट दीजिएगा। एक तरफ काम करने वाली पार्टी है और एक तरफ गाली-गलौज करने वाली पार्टी है। गालियां देने से कोई फायदा नहीं होता है। गालियां देने से कोई तरक्की और विकास नहीं होता है। हम इस बात पर चुनाव लड़ रहे हैं कि हमने पिछले 10 साल में क्या काम किया, आगे पांच साल में क्या काम करेंगे और हमारा दिल्ली का विजन क्या है? दूसरी तरफ, भाजपा सुबह से शाम तक केवल हमें गालियां देती है।

डल्लेवाल के ‘स्वास्थ्य सुधार’ दावे पर पंजाब सरकार से सुप्रीम कोर्ट नाराज

नयी दिल्ली, एजेंसी। उच्चतम न्यायालय ने करीब 50 दिनों से अनशन पर बैठे किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल रिपीट डल्लेवाल के स्वास्थ्य मापदंडों में ‘सुधार’ के पंजाब सरकार दावे पर बुधवार को नाराजगी जताई और एम्स से राय लेने के लिए उनकी (डल्लेवाल) स्वास्थ्य रिपोर्ट की एक प्रति पेश करने का निर्देश दिया। न्यायमूर्ति सूर्य कांत और न्यायमूर्ति एन कोटिश्वर सिंह की पीठ ने राज्य सरकार के दावे पर आश्चर्य जताया कि करीब 50 दिनों से अनशन कर रहे व्यक्ति के स्वास्थ्य मापदंडों में कैसे सुधार हुआ। पीठ ने पंजाब सरकार का पक्ष रख रहे वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल से पूछा, ऐसा कैसे हो सकता है...और एक तरफ आप कह रहे हैं कि आपके डॉक्टर वहां (धरना स्थल पर) मौजूद हैं... हम जानना चाहते हैं कि मापदंडों (स्वास्थ्य) में कैसे सुधार हो रहा है। पीठ की ओर से यह कहने पर कि ‘वह (डल्लेवाल) 49 दिनों से अनशन कर रहे हैं, उनके स्वास्थ्य मापदंडों में कैसे सुधार हो रहा है’, श्री सिब्बल ने स्पष्ट किया कि स्वास्थ्य संबंधी मापदंड स्थिर हैं और उनमें सुधार नहीं हो रहा है। पीठ ने उनसे कहा, पिछली बार जब आपने हमें चार्ट दिया था तो आपका दावा था कि उनकी हालत में सुधार हो रहा है। पीठ को बताया गया कि पंजाब सरकार ने दल्लेवाल की व्यापक चिकित्सा जांच के लिए एक मेडिकल बोर्ड का गठन किया है। पीठ ने श्री सिब्बल से आगे पूछा, तो, आपके अनुसार, 24 दिसंबर, 2024 को प्लेटलेट्स (जो 2,22,000 थे), अब सुधर कर 2,54,000 हो गए हैं।

नड्डा का पलटवार

राहुल ने उजागर किया कांग्रेस का सच, इनका देशविरोधी ताकतों को बढ़ाने का इतिहास

नई दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस नेता राहुल गांधी के लड़ाई भाजपा ही नहीं हर भारतीय राज्य से वाले बयान को लेकर सियासत शुरू हो गई है। भाजपा ने राहुल गांधी पर पलटवार किया है। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष और केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा ने कहा कि कांग्रेस का इतिहास रहा है कि उसने देश को कमजोर करने वाली ताकतों को बढ़ावा दिया है। जेपी नड्डा ने एक्स पर पोस्ट में लिखा कि कांग्रेस का घिनौनी सच किसी से छिपा नहीं है। अब उनके अपने नेता ने ही इसका पर्दाफाश कर दिया है। मैं राहुल गांधी की सराहना करता हूं कि उन्होंने वह बात साफ-साफ कही जो देश जानता है कि वह भारतीय राज्य से लड़ रहे हैं। यह कोई रहस्य नहीं है कि राहुल गांधी और उनके तंत्र का शहरी नक्सलियों और डीप स्टेट के साथ घनिष्ठ संबंध है। जो भारत को बदनाम करना चाहते हैं। उनके बार-बार के कार्यों ने भी इस विश्वास को मजबूत किया है। उन्होंने जो कुछ भी किया या कहा है वह भारत को तोड़ने और हमारे समाज को विभाजित करने वाला है। भाजपा अध्यक्ष नड्डा ने कहा कि कांग्रेस का इतिहास उन सभी ताकतों को बढ़ावा देने का रहा है, जो एक कमजोर भारत चाहते हैं। सत्ता के लिए उनके लालच का मतलब देश की अखंडता से समझौता करना और लोगों के विश्वास को धोखा देना था। लेकिन भारत के लोग समझदार हैं। उन्होंने तय कर लिया है कि वे हमेशा राहुल गांधी और उनकी सड़ी हुई विचारधारा को खारिज कर देंगे। भाजपा प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने भी राहुल गांधी पर हमला बोला। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी का बयान महज संयोग नहीं है बल्कि जॉर्ज सोरोस द्वारा पूर्व नियोजित और प्रायोजित है। आज कांग्रेस पार्टी और राहुल गांधी ने साफ कर दिया है कि भाजपा और पीएम मोदी का विरोध करते-करते वे देश का विरोध करने लगे हैं। वे भारत और भारतीय राज्यों के खिलाफ लड़ रहे हैं। यह संयोग नहीं बल्कि एक सोचा-समझा प्रयोग है। यह एक उद्योग बन गया है, जिसे सोरोस (जॉर्ज सोरोस) प्रायोजित करते हैं। राहुल गांधी भारत तोड़ो के एजेंडे पर चलते हैं।

दुनिया की बड़ी समुद्री ताकत बन रहा है भारतः प्रधानमंत्री मोदी

मुंबई, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि तीन अत्याधुनिक और प्रमुख प्लेटफार्म का एक ही दिन नौसेना के बेड़े में शामिल किया जाना मजबूत तथा आत्मनिर्भर रक्षा क्षेत्र के निर्माण तथा नौसेना को 21 वीं सदी के अनुरूप सशक्त बनाने के लिए भारत की अटूट प्रतिबद्धता को दिखाता है। श्री मोदी ने बुधवार को यहां नौसेना डॉकयार्ड में तीन प्रमुख नौसैनिक युद्धपोतों - आईएनएस सूरत, आईएनएस नीलगिरि और आईएनएस वाघशीर को नौसेना के बेड़े में शामिल किये जाने के मौके पर यह बात कही। उन्होंने कहा कि 21 वीं सदी की नौसेना को सशक्त बनाने की तरफ हम एक बड़ा कदम उठा रहे हैं और आज का भारत दुनिया की एक बड़ी समुद्री शक्ति बन रहा है। उन्होंने कहा , यह पहली बार हो रहा है जब एक डिस्ट्रायर, एक फ्रिगेट और एक सबमरीन को एक साथ कमीशन किया जा रहा है और सबसे गर्व की बात है कि ये तीनों ही प्रमुख प्लेटफार्म मेड इन इंडिया हैं। आज का भारत दुनिया की एक बड़ी समुद्री शक्ति बन रहा है। उन्होंने कहा कि आज भारत पूरे विश्व और विशेषकर ग्लोबल साउथ में एक भरोसमंद और जिम्मेदार साथी के रूप में पहचाना जा रहा है। उन्होंने कहा , भारत विस्तारवाद नहीं, विकासवाद की भावना से काम करता है। भारत ने हमेशा खुले, सुरक्षित, समावेशी और समृद्ध हिन्द प्रशांत क्षेत्र का समर्थन किया है। भारत पूरे हिन्द महासागर क्षेत्र में पहले मदद का हाथ बढ़ाने वाले देश के रूप में उभरा है। जल हो, थल हो , नभ हो या गहरा समुद्र या असीम अंतरिक्ष हर जगह भारत अपने हितों को सुरक्षित कर रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि आज का दिन भारत की समुद्री विरासत, नौसेना के गौरवशाली इतिहास और आत्मनिर्भर भारत अभियान के लिए एक बड़ा दिन है। उन्होंने कहा कि छत्रपति शिवाजी महाराज ने भारत में नौसेना को एक नई ताकत और दृष्टि दी। उन्होंने कहा कि आज सरकार ने शिवाजी महाराज की भूमि पर 21वीं सदी की भारतीय नौसेना को सशक्त बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया है। श्री मोदी ने कहा, आज का कार्यक्रम हमारी गौरवशाली विरासत को हमारी भविष्य की आकांक्षाओं से जोड़ता है। उन्होंने कहा कि भारत का लंबी समुद्री यात्राओं, वाणिज्य, नौसेना रक्षा और जहाज उद्योग से जुड़ा एक समृद्ध इतिहास है। इस समृद्ध इतिहास से प्रेरणा लेते हुए उन्होंने कहा कि आज का भारत दुनिया में एक प्रमुख समुद्री शक्ति के रूप में उभर रहा है। उन्होंने कहा कि आज लॉन्च किए गए प्लेटफॉर्म उसी की एक झलक दिखाते हैं। प्रधानमंत्री ने चोल वंश की समुद्री शक्ति को समर्पित आईएनएस नीलगिरि और सूरत युद्धपोत सहित नए प्लेटफार्मों के लॉन्च का उल्लेख किया, जो उस युग की याद दिलाता है जब गुजरात के बंदरगाह भारत को पश्चिम एशिया से जोड़ते थे।

जर्मन राजदूत ने की कृषि मशीनीकरण पर चर्चा

नयी दिल्ली, एजेंसी। जर्मनी के राजदूत डॉ. फिलिप एकरमैन ने बुधवार को केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के सचिव डॉ. देवेश चतुर्वेदी से मुलाकात की और कृषि मशीनीकरण सहयोग पर चर्चा की। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने यहां बताया कि डॉ. एकरमैन ने डॉ. चतुर्वेदी से कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के लिए अवसर पर विचार विमर्श किया। दोनों अधिकारियों की बैठक में कटाई के बाद की तकनीक, जैविक एवं प्राकृतिक खेती तथा कृषि मशीनीकरण बातचीत हुई। डॉ. चतुर्वेदी ने कृषि क्षेत्र में भारत और जर्मनी के बीच दीर्घकालिक साझेदारी पर जोर दिया तथा द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने में अंतर-सरकारी परामर्श, समझौता ज्ञापन और संयुक्त आशय घोषणा की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया। डॉ. चतुर्वेदी ने आगामी संयुक्त कार्य समूह की बैठक का भी उल्लेख किया।

भारत दो माह में 20 प्रतिशत एथनॉल मिश्रण का लक्ष्य हासिल कर लेगा: नितिन गडकरी

नयी दिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने बुधवार को कहा कि भारत अगले दो माह में 20 प्रतिशत एथनॉल मिश्रण का लक्ष्य हासिल कर लेगा। पेट्रोल के साथ एथनॉल मिश्रण का चलन 2001 में एक प्रायोगिक परियोजना (पायलट प्रोजेक्ट) के रूप में शुरू हुआ था। गडकरी ने एक कार्यक्रम में कहा, हम अगले दो महीनों में 20 प्रतिशत एथनॉल मिश्रण का यह लक्ष्य हासिल कर लेंगे। ई20 (20 प्रतिशत एथनॉल वाला पेट्रोल) के इस्तेमाल से प्रदूषण कम करने में मदद मिलेगी। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि टाटा मोटर्स, महिंद्रा एंड महिंद्रा, मारुति सुजुकी और हुंदै मोटर्स ने 100 प्रतिशत जैव-एथनॉल पर चलने वाले वाहनों का विनिर्माण शुरू कर दिया है। गडकरी ने कहा कि देश में प्रदूषण एक गंभीर समस्या है क्योंकि दुनिया के 50 सबसे प्रदूषित शहरों में 42 भारत में हैं। उन्होंने कहा, हम 22 लाख करोड़ रुपये का जीवाश्म ईंधन आयात करते हैं। इससे भी प्रदूषण हो रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2023 में 20 प्रतिशत एथनॉल-मिश्रित पेट्रोल पेश किया था। इसमें पहले चरण में 15 शहरों को शामिल किया गया था। गन्ने के साथ-साथ टूटे चावल और अन्य कृषि उत्पादों से निकाले गए एथनॉल के इस्तेमाल से दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा कच्चा तेल उपभोक्ता भारत आयात पर अपनी निर्भरता कम कर सकेगा। भारत अपनी कच्चे तेल जरूरतों को पूरा करने के लिए 85 प्रतिशत आयात पर निर्भर है। ई20 के उपयोग से दोपहिया वाहनों में कार्बन मोनोऑक्साइड उत्सर्जन में लगभग 50 प्रतिशत और चारपहिया वाहनों में शुद्ध पेट्रोल की तुलना में लगभग 30 प्रतिशत की कमी आने का अनुमान है। औसतन 10 प्रतिशत मिश्रण प्राप्त करने का लक्ष्य जून, 2022 में प्राप्त किया गया, जो नवंबर, 2022 की समयसीमा से काफी पहले था।

केजरीवाल, राहुल गांधी देशविरोधी ताकतों के साथ

नयी दिल्ली, एजेंसी। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने बुधवार आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल और कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी पर तीखा प्रहार करते हुए देश विरोधी शक्तियों के साथ मिले होने का आरोप लगाया। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता गौरव भाटिया ने पार्टी मुख्यालय में आयोजित संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा, अदालत के आदेश के अनुसार श्री केजरीवाल किसी भी सरकारी फाइल पर हस्ताक्षर नहीं कर सकते हैं। इस कारण वह नेता प्रतिपक्ष भी नहीं बन सकते हैं। वह बंगलादेशी और रोहिंग्या घुसपैठियों को दिल्ली में बसाने वाले अमानतुल्लाह खान या अपराधियों से संबंध रखने वाले नरेश बाल्यान को नेता प्रतिपक्ष बनाएंगे। उन्होंने कहा, कट्टर बेइमान श्री केजरीवाल भारत विरोधी गतिविधियों में शामिल लोगों के साथ मिले हुए हैं।

प्रवेश वर्मा, रमेश बिधूड़ी सहित भाजपा के 13 उम्मीदवारों ने दाखिल किया नामांकन

नयी दिल्ली, एजेंसी। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सर्वश्री प्रवेश वर्मा, रमेश बिधूड़ी और विजेंद्र गुप्ता सहित पार्टी के 13 उम्मीदवारों ने बुधवार को दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिये नामांकन पत्र दाखिल किये। श्री वर्मा के नामांकन पत्र दाखिल करने के दौरान भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बैजयंत जय पांडा, राष्ट्रीय प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी और नयी दिल्ली से सांसद बांसुरी स्वराज मौजूद थीं। श्री वर्मा ने नामांकन दाखिल करने से पहले रोड शो किया। इससे पहले श्री वर्मा ने गौरी शंकर मंदिर, वाल्मीकि मंदिर और हनुमान मंदिर सहित कई मंदिरों में पूजा-अर्चना भी की। इस मौके पर उन्होंने कहा कि उनके प्रतिद्वंद्वी श्री केजरीवाल चुनाव हारने जा रहे हैं और भाजपा आठ फरवरी को सरकार बनायेगी। उन्होंने कहा, मैं हनुमान मंदिर और गौरी शंकर मंदिर गया था और अब वाल्मीकि मंदिर आया हूं। मैं नामांकन पत्र दाखिल करने से पहले आशीर्वाद लेने आया हूं। मुझे उम्मीद है कि मैं नयी दिल्ली विधानसभा के लोगों के लिये काम कर पाउंगा। श्री केजरीवाल हारने जा रहे हैं। न केवल नयी दिल्ली विधानसभा में, बल्कि पूरी दिल्ली में और भाजपा आठ फरवरी को सरकार बनाने जा रही है और इसी वजह से वह (श्री केजरीवाल) अपना संयम खो चुके हैं। नयी दिल्ली के निवासियों ने मुझे बताया है कि वे केजरीवाल को वोट नहीं देंगे। वहीं, श्री बिधूड़ी ने नामांकन पत्र दाखिल करने के दौरान केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी और दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा मौजूद रहे।

समिति ने भारत और अमेरिका विरोधी संगठनों की रिपोर्ट सरकार को सौंपी

नयी दिल्ली, एजेंसी। भारत और अमेरिका के सुरक्षा हितों के खिलाफ काम करने वाले कुछ संगठित आपराधिक समूहों, आतंकवादी संगठनों और मादक पदार्थ तस्करों की गतिविधियों के बारे में एक उच्च स्तरीय जांच समिति ने अपनी रिपोर्ट सरकार को सौंप दी है। यह समिति अमरीकी सरकार के इस आरोप के बाद गठित की गयी थी कि भारतीय एजेन्टों ने गुरपतवंत सिंह पन्नू की हत्या की कोशिश की है। गृह मंत्रालय ने बुधवार को यहां एक वक्तव्य जारी कर कहा कि अमेरिकी अधिकारियों द्वारा दी गई सूचना के आधार पर भारत सरकार ने नवंबर 2023 में एक उच्चस्तरीय जांच समिति गठित की थी। ये संगठन भारत और अमेरिका दोनों के सुरक्षा हितों को नुकसान पहुंचा रहे थे। समिति ने अपनी गहन जांच के साथ ही अमेरिका द्वारा दिए गए सुरागों का भी पता लगाया। अमेरिकी अधिकारियों का इसमें पूरा सहयोग मिला और दोनों पक्षों ने परस्पर दौरे भी किए। समिति ने विभिन्न एजेंसियों के कई अधिकारियों के साथ बात की और संबंधित दस्तावेजों की भी जांच की।

चुनाव के समय हर बार झूठे वादों में फंस जाती है जनता: मायावती

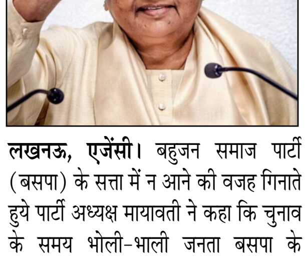

लखनऊ, एजेंसी। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) के सत्ता में न आने की वजह गिनाते हुये पार्टी अध्यक्ष मायावती ने कहा कि चुनाव के समय भोली-भाली जनता बसपा के जनकल्याणकारी कार्यो को भुला कर उन दलों के लुभावने और झूठे वायदों के बहकावे में आ जाती है जिनकी कथनी और करनी में काफी अंतर रहा है। सुश्री मायावती ने अपने 69वें जन्मदिन के अवसर पर पत्रकारों से बातचीत में कहा कि उत्तर प्रदेश में चार बार सत्ता में रही उनकी पार्टी ने जन-कल्याणकारी योजनाओं को न सिर्फ शुरु किया बल्कि इमानदारी से लागू भी किया जिससे ग़रीबों, दलितों, आदिवासियों, पिछड़े वर्गों, मुस्लिम व अन्य अक़लियतों की स्थिति में काफी सुधार आया है और अब उन योजनाओं की देश में दूसरी पार्टियों की राज्य सरकारें भी काफी नकल कर रही है, लेकिन इन लोगों के प्रति उनकी नीति व नीयत साफ नहीं होने की वजह से फिर ये सरकारें इन्हें कोई विशेष लाभ नहीं दे पा रही हैं। उन्होने कहा इस मौके पर मैं अपनी जिम्मेवारी एवं दायित्व को समझते व निभाते हुये अपनी पार्टी व मूवमेन्ट के हित में पार्टी के लोगों को हमेशा की तरह, इस बार भी सावधानी के तौर पर उन्हें यह आगाह करना चाहती हूँ

आपदा प्रबंधन की शिक्षा बचपन से दी जाए: गोयल

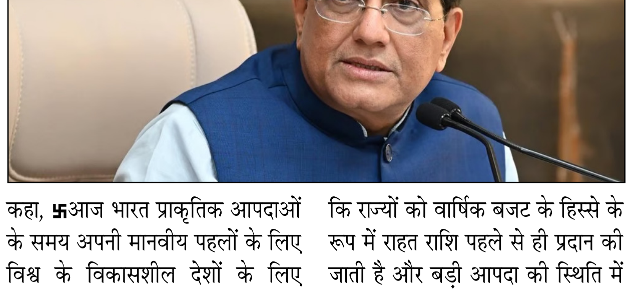

नयी दिल्ली, एजेंसी। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने देश में प्राकृतिक और अन्य बड़ी आपदाओं का सामना करने में भारत की प्रगति को रेखांकित करते हुए बुधवार को कहा कि आपदा प्रबंधन की शिक्षा बचपन से ही दी जानी चाहिए। श्री गोयल ने कहा कि आपदा प्रबंधन की शिक्षा बचपन से देने से आपदाओं से निपटने की देश की क्षमता बढ़ेगी और रोकथाम में भी मदद मिलेगी। वह यहां आपदा प्रबंधन, आपदा जोखिम न्यूनीकरण पर विश्व कांग्रेस (डब्ल्यूसीडीएम-डीआरआर) पुरस्कार समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने मोदी सरकार द्वारा आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में सभी संबंधित विभागों के समन्वय की सोच के साथ उठाए गए कदमों का उल्लेख किया। श्री गोयल ने कहा, 卐आज भारत प्राकृतिक आपदाओं के समय अपनी मानवीय पहलों के लिए विश्व के विकासशील देशों के लिए सबसे पहले सहायता लेकर पहुंचने वाले देने वाले देश के रूप में जाना जाता है।卐 उन्होंने कहा कि पिछले दस वर्षों में आपदा राहत के लिए बजट में तीन गुना वृद्धि की गई है। वाणिज्य मंत्री ने कहा कि राज्यों को वार्षिक बजट के हिस्से के रूप में राहत राशि पहले से ही प्रदान की जाती है और बड़ी आपदा की स्थिति में और सहायता प्रदान की जाती है। राज्य आपदा राहत कोष (एसडीआरएफ) - राष्ट्रीय आपदा राहत कोष (एनडीआरएफ) का संयोजन भी राष्ट्र के लिए बहुत बड़ी राहत है।

हिन्दी दैनिक
तीसरा विकल्प न्यूज़
लखनऊ से प्रकाशित

'बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ' का संदेश देकर उड़ाई पतंगें मकर संक्रांति महोत्सव का भव्य आयोजन

तीसरा विकल्प न्यूज़ - कन्हैया सिंह

जमुई। मकर संक्रांति महोत्सव धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस महोत्सव को भव्यता प्रदान करने के लिए महिला एवं बाल विकास निगम और कला, संस्कृति एवं युवा विभाग ने श्रीकृष्ण स्टेडियम के मैदान पर बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ तथा चित्रकला, मेंहदी के साथ पतंगबाजी प्रतियोगिता का आयोजन किया। पतंगबाजी में आदित्य राज, रितेश राज और अमित कुमार को क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार दिया गया वहीं चित्रकला में सूरज कुमार, साक्षी कुमारी और आल्या चंद्रा ने परचम लहराया। मेंहदी प्रतियोगिता में रिमझिम, नूरजहां और प्रिया कुमारी ने प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार अपने नाम किया। इसके अलावे कई प्रतियोगियों को बेहतर प्रस्तुति के लिए सांत्वना पुरस्कार से सम्मानित किया गया। बेटियों की प्रतिभा को तराशने के लिए कस्तूरबा बालिका विद्यालय खैरा, जमुई, सोनो और चकाई के वार्डन को भी सम्मानित किया गया। जिलाधिकारी ने स्वयं स्टॉल भ्रमण कर प्रतियोगिता का जायजा लिया और प्रतियोगियों की प्रतिभा पर मुहर लगाई। बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ मुहिम में नन्हीं परी अनायशा ने अपनी प्रतिभा का ऐसा जलवा बिखेरा कि सभी उपस्थित जन भौंचक रह गए। लोगों ने तालियों की गड़गड़ाहट से उसकी प्रतिभा को सैल्यूट किया और उसके उज्जवल भविष्य की कामना की। समारोह उत्सवी माहौल में संपन्न हो गया। राज्य उद्घोषक डॉ. निरंजन कुमार ने समारोह का साहित्यिक अंदाज में मंच संचालन कर प्रशंसा के पात्र बने और इसमें चार चांद लगा दिया। जिला कलेक्टर अभिलाषा शर्मा ने अग्नि ज्योति जलाकर और गुब्बारा उड़ाकर समारोह का शुभारंभ करते हुए कहा कि मातृ शक्ति महिला सशक्तिकरण की मिसाल हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 22 जनवरी 2015 को पानीपत, हरियाणा से बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान का आरंभ कर महिलाओं को सशक्त बनाने का संदेश दिया। हमें भी बेटियों को जीवन में सफलता और सम्मान के साथ जीने का हक देना चाहिए। भ्रूण हत्या, बाल विवाह, दहेज प्रथा, महिला उत्पीड़न जैसी कुप्रथाओं पर अंकुश लगाना इस मुहिम का लक्ष्य है। श्रीमती शर्मा ने विकसित भारत के निर्माण के लिए इसे आवश्यक ही नहीं वरन अनिवार्य करार दिया। एसडीएम अभय कुमार तिवारी ने कहा कि एक बेटी के पढ़ने से पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है। उन्होंने आधी आबादी को हर मोड़ पर सम्मान दिए जाने की बात कही। श्री तिवारी ने समारोह आयोजन के लिए आयोजकों की तारीफ की और उन्हें साधुवाद दिया। जिला परिषद अध्यक्ष दुलारी देवी, नजारत उप समाहर्ता अमु आमला, डीसीएलआर मो. तारिक रजा, डीपीआरओ वीरेंद्र कुमार, नीलाम पदाधिकारी शशांक बरनवाल, आईसीडीएस की डीपीओ रश्मि रंजन, सीडीपीओ ज्योति, आभा, प्रेरणा, बिंदु, केंद्र प्रशासक शालू सिन्हा समेत कई अधिकारी, विभागीय कर्मी, पंचायत जन प्रतिनिधि एवं बड़ी संख्या में ग्रामीण अलौकिक आयोजन के साक्ष्य बने। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में कस्तूरबा बालिका विद्यालय चकाई, सोनो, जमुई और खैरा की दुलारियों ने एक से बढ़कर एक गीत और नृत्य प्रस्तुत कर लोगों का मन मोह लिया। बेटियों ने आत्मरक्षा के लिए जूडो कराटे के ज्ञान का प्रदर्शन किया जिसका सभी जनों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की। अद्भुत प्रतिभा की धनी दुलारी सुता अनायशा ने घूमर-घूमर ....पर अचंभित करने वाला नृत्य प्रस्तुत कर मौजूद लोगों को दांतों तले उंगलियां दबाने को मजबूर कर दिया। पंडाल में मौजूद नागरिक खड़े होकर बिटिया को जमकर आशीर्वाद दिया और उसके उज्जवल भविष्य की कामना की। सर्वविदित है कि देशभर में बुधवार को मकर संक्रांति का उत्सव मनाया जा रहा है। श्रद्धालु सुबह से ही पवित्र नदियों में आस्था की डुबकी लगा रहे हैं। सूर्य के मकर राशि में प्रवेश करने का यह उत्सव मकर संक्रांति भारत ही नहीं बल्कि दुनिया के कई देशों में मनाया जाता है। इस त्योहार को भारत में अलग-अलग नामों से जाना जाता है। तमिलनाडु में इसे पोंगल, गुजरात में उत्तरायण, पंजाब में माघी, असम में बीहू कहा जाता है। इस त्योहार का फसल कटनी से भी गहरा ताल्लुक है।

हिलटॉप में हुए घटना में जीएम पर किये गये एफआईआर का अफसर एसोसिएशन ने किया निंदा

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

कतरास / धनबाद। गोविंदपुर क्षेत्रीय कार्यालय में कोल माइंस ऑफिसर एसोसिएशन गोविंदपुर क्षेत्र की बैठक हुई, अध्यक्षता एजीएम सह शाखा अध्यक्ष जेके जयसवाल ने की, बैठक में हिलटॉप आउट सोर्सिंग में घटित घटना में गोविंदपुर क्षेत्र के जीएम जीसी साहा पर किये गये केस की कड़ी निंदा करते हुए कोल अधिकारियों ने क्षेत्रीय कार्यालय में विरोध-प्रदर्शन किया। जीएम पर केस होने से बीसीसीएल के तमाम पदाधिकारी के मनोबल पर इसका गंभीर असर पड़ा है, एसोसिएशन ने मांग किया कि जब-तक जीएम का नाम केस से हटाया नहीं जाता है, तब-तक क्षेत्र के अधिकारी काला बिल्ला लगाकर विरोध प्रदर्शन करेंगे। मौके पर सचिव केएस द्विवेदी, अमित कुमार, संजीव झा, शंभू रजक, अवधेश कुमार, अमित कुमार महतो, वी वेमुला कुमार, एसके शरण, आयुष आनंद, निर्मल कुमार, जयप्रकाश, रामाशीष कुमार, उमेश कुमार आदि थे।

बीसीसीएल के कल्याण समिति की टीम ने किया निरीक्षण

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

तिसरा / धनबाद। बी सि सि एल के केंद्रीय कल्याण समिति के पाँच सदस्यीय टीम ने बुधवार को लोदना क्षेत्र के विभिन्न यूनिटों का निरीक्षण कर संबंधित अधिकारियो से चर्चा किया, जियालगोरा रीजनल अस्पताल में कमिटी के सदस्य व अधिकारियों के सामने क्षेत्र के यूनियन नेताओ ने अस्पताल के समस्याओं से अवगत कराया। इस दौरान यूनियन, अधिकारी और डॉक्टरों के बीच नोक झोंक भी हुई। कमिटी के समक्ष जूनियर डॉक्टर को सीएमओ बनाने और सीनियर को वार्ड में बैठाने का मामला और अस्पताल में शाम को डॉक्टर और स्टाफ के द्वारा खेल खेलने कि बातों को रखा, यूनियन नेताओ ने बताया कि शाम में सभी मिलकर मेन गेट पर खेल का मैदान बना देते है।जिसको देख मरीज लौट जाते है, इसको बंद कराने कि बात कही। कमिटी के सदस्यों में बीसीसीएल के केंद्रीय सलाहकार समिति के सदस्य संजीत सिंह, लक्ष्मण महतो ने कहा कि डॉक्टर का मामला डीपी, सीएमडी से मिलकर रखेंगे। अस्पताल खेल का मैदान नही है।खेलना है तो साइड में खेला जा सकता है, फ्रंट में नहीं।साथ ही टीम ने, नॉर्थ तीसरा श्रमिक कॉलोनो, एनबीसीसी कॉलोनी, में जाकर समस्याओं को जाना। बताया जा रहा है कि वर्ष में एक बार केंद्रीय कमिटी के सदस्य सिविल, अस्पताल, कर्मियों के रहन सहन, आवास आदि का निरीक्षण कर रिपोर्ट सौपते है। कल्याण समिति के टीम में संजीत सिंह, एसएस डे, गंगासागर राय, अशोक साव, निताई महतो सतेंद्र गुप्ता के अलावे प्रबंधन कि ओर से जीएम निर्झर चक्रवर्ती, एपीएम दीपक सिंह, पीएम एडमिन अरिंदम कुंडू, असैनिक अभियंता मुकेश कुमार, डॉक्टर बिकाश रंजन, डॉक्टर रानी पांडेय आदि थें।

9 करोड़ रुपये की हेरोइन बरामद, 4 गिरफ्तार

तीसरा विकल्प न्यूज़ - पंकज नाथ

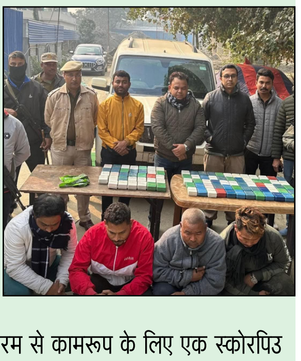

असम। कामरूप जिले के अमिनगाँव इलाके में असम पुलिस के विशेष कार्य बल (एसटीएफ) ने आज मंगलवार को लगभग 10 करोड़ रुपये की 1.128 किलोग्राम हेरोइन बरामद किया है। खबर के अनुसार एसटीएफ टीम ने इस संबंध में चार तस्करों को गिरफ्तार किया। असम पुलिस के सीपीआरओ को स्रोत-आधारित जानकारी मिली थी कि चुराचांदपुर (मणिपुर) का कुख्यात टौथिंग नारकोटिक्स परिवार मिजोरम से कामरूप के लिए एक स्कोरपिउ वाहन में हाजो और गोरेस्वर स्थित तस्करों को नशीले पदार्थ पहुंचाएगा। इस 卐सूचना के आधार पर, मंगलवार सुबह अमीनगांव में अतिरिक्त एसपी कल्याण कुमार पाठक के नेतृत्व में एसटीएफ टीम ने स्कोरपिउ वाहन को रोका और उसमें सवार दो लोगों, ओनखोगिन टूथिंग (चालक) और थांगखेलियन (सह-चालक) को पकड़ा।卐 उन्होंने बताया कि वाहन की जांच की गई और गुप्त कक्षों में रखे गए 94 साबुन के डिब्बे या हेरोइन के पैकेट बरामद किए गए, जिनका वजन बिना ढके 1.128 किलोग्राम था। सीपीआरओ ने बताया, 卐इसे जब्त कर लिया गया है। जब्त की गई दवाओं की बाजार कीमत लगभग 9 करोड़ रुपये होगें।卐 इस सिलसिले में पुलिस ने गाड़ी के चालक ओर सह चालक के अलावा गोरेस्वर निवासी बिटुल अली ओर हाजो के दामपुर निवासी नूरुल हुसैन को गिरफ्तार कर लिया है। इस अभियान के बाद बरामद किये गये हुए सामान ओर तस्करों के खिलाफ असम पुलिस ने आवश्यक कानूनी कार्रवाई शुरू कर दिया है।

लविवि तजाकिस्तान को योग और प्राकृतिक चिकित्सा के क्षेत्र में करेगा सहयोग

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो आलोक कुमार राय के नेतृत्व में ताजिकिस्तान गए प्रतिनिधि मंडल ने तजाकिस्तान के दो चिकित्सा विश्वविद्यालयों इब्न ए सीना स्टेट मेडिकल युनिवर्सिटी दुशांबे एवं मेडिकल युनिवर्सिटी खफलन के साथ महत्वपूर्ण सहयोग ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते के तहत दोनों विश्वविद्यालय शैक्षिक सहयोग, अनुसंधान और छात्रों के आदान-प्रदान के क्षेत्र में सहयोग करेंगे। इस अवसर पर लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो आलोक कुमार राय ने कहा यह समझौता लखनऊ विश्वविद्यालय और ताजिकिस्तान के मेडिकल विश्वविद्यालय के बीच एक नए युग की शुरुआत करेगा। उन्होंने कहा कि वर्तमान शैक्षिक परिवेश में जहां अंतर्विषयिकता एक प्रभावी शैक्षिक आयाम है। चिकित्सा विश्वविद्यालयों को अन्य संकाय के साथ सहयोग और समन्वय स्थापित करके जनमानस की आवश्यकताओं के अनुरूप कार्य किया जा सकता है। यह समझौता लखनऊ विश्वविद्यालय और ताजिकिस्तान के मेडिकल विश्वविद्यालय के बीच एक मजबूत और स्थायी संबंध की नींव रखेगा। ताजिकिस्तान के मेडिकल विश्वविद्यालय भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत योग, प्राकृतिक चिकित्सा और वैकल्पिक स्वास्थ्य के आयामों का अध्ययन करेंगे।

काम बंद करने से डेको आउटसोर्सिंग के दो सौ मजदूर हुए बेरोजगार

➢ वेतन बकाया और बोनस भुगतान को लेकर मजदूरों ने किया प्रदर्शन

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

बाघमारा / धनबाद। बीसीसीएल के फूलारीटांड़ में डेको आउटसोर्सिंग प्रबंधन द्वारा बीना कोई सूचना के काम बंद करने से करीब दो सौ मजदूर बेरोजगार हो गए। वहीं डेको आउटसोर्सिंग प्रबंधन ने नो वर्क नो पे का नोटिस चिपका कर काम बंद किया और अपना मशीन उठाने का प्रयास किया। जिसका मजदूरों ने विरोध किया और प्रबंधन के खिलाफ प्रदर्शन किया। सुनील गोप ने बताया कि वह यहाँ के रैयत हैं जिसको जमीन के बदले डेको आउटसोर्सिंग में काम मिला था। बीसीसीएल प्रबंधन ने पूरा मुवावजा तक नहीं दिया और डेको आउटसोर्सिंग प्रबंधन ने अचानक काम बंद कर दिया। दिसंबर माह और तीन माह का वेतन के बराबर भुगतान किया जाना चाहिए था लेकिन डेको प्रबंधन ने पैसा भुगतान किए बगैर अपना सामान समेट कर जा रही है जिसका हमलोग विरोध कर रहे हैं। सभी मजदूरों का पैसा भुगतान किए बिना नहीं जा सकता। जब भी हम अपनी मांग को प्रबंधन के सामने रखा पुलिस को आगे कर हमे बहलाया जा रहा है। इसमें प्रबंधन को सामने आना चाहिए। वही श्याम पांडेय ने बताया कि डेको आउटसोर्सिंग कंपनी में करीब दो सौ मजदूर आज बेरोजगार है।

योगी आदित्यनाथ ने दी मंजूरी, उत्तर प्रदेश में बनेगा अद्वितीय रामायण कार्यक्रम

➲ उत्तर प्रदेश में लगेगा विश्व स्तरीय रामायण कार्यक्रम

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में भारतीय संस्कृति की गौरव गाथा को जीवंत करने के लिए एक अद्वितीय पहल की शुरुआत हुई है। राज्य सरकार के सहयोग से कल्चरल क्रेस्ट संस्था द्वारा एक भव्य रामायण कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। यह कार्यक्रम विश्व स्तरीय ऑडिटोरियम में आयोजित होगा और इसमें 150 से अधिक कलाकार भाग लेंगे। यह कार्यक्रम विश्व स्तरीय ऑडिटोरियम में आयोजित किया जाएगा और इसकी लागत लगभग 100 करोड़ रुपये होगी। कल्चरल क्रेस्ट संस्था द्वारा इस परियोजना की शुरुआत की गई है, जिसमें संस्था की सचिव सुरभी सिंह और राम उग्रह शुक्ल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुलाकात की और उन्हें इस परियोजना के बारे में बताया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इस परियोजना की प्रशंसा की है और इसके लिए आवश्यक सहयोग प्रदान करने का आश्वासन दिया है। इस कार्यक्रम में 150 कलाकार भाग लेंगे और इसका टिकट भी होगा। यह कार्यक्रम तीन सौ रोज तक चलेगा और इसमें भाग लेने वाले कलाकारों को कला के माध्यम से रोजगार मिलेगा। इसके अलावा, यह कार्यक्रम हमारे सनातन धर्म का प्रचार प्रसार भी करेगा। यह परियोजना उत्तर प्रदेश सरकार के सहयोग से बनाई जा रही है और इसके लिए जमीन का अनुदान और 30 वर्षों के लिए लीज पर देने का निर्णय लिया गया है। संस्था की सचिव सुरभी सिंह और राम उग्रह शुक्ल ने उत्तर प्रदेश सरकार की प्रशंसा की है और कहा है कि यह परियोजना भारतीय संस्कृति को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। संस्था की सचिव सुरभी सिंह और राम उग्रह शुक्ल ने प्रमुख सचिव संजय प्रसाद से मुलाकात की और उन्हें परियोजना के बारे में विस्तार से बताया। संजय प्रसाद ने आश्वासन दिया है कि सरकार की ओर से सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी ताकि यह परियोजना सफलतापूर्वक पूरी हो सके।

सर्व धर्म सामूहिक विवाह में 90 जोड़े परिणय सूत्र में बंधे

☐ अखिल भारतीय किन्नर समाज के प्रदेश अध्यक्ष छम छम देवी ने आशीर्वाद के तौर पर जोड़ों को दिए 51 हजार रुपए

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

धनबाद। सर्वधर्म सामूहिक विवाह सभा के तहत बुधवार को गोल्फ ग्राउंड में कुल 90 जोड़े नए जीवन के परिणय सूत्र में बंधे। जिन्हें आशीर्वाद देने को लिए पुरा धनबाद उमड़ा। सुबह दस बजे गोल्फ ग्राउंड से बैंड, बाजा के साथ पुरे धूमधाम से प्रदूषण रहित के लिए टोटो से बारात निकाली गई। जो रणधीर वर्मा चौक होते हुए वापस गोल्फ ग्राउंड मैदान पहुंची। वहां समधी मिलन की रस्मअदा की गई। इसके बाद महिला विंग की सदस्यों के नव विवाहित दूल्हा दुल्हन की आरती की गई। उसके बाद जयमाला की रस्म अदा की गई। समिति के अध्यक्ष प्रदीप सिंह ने बताया कि हमारे समाज के लोग अपने बेटियों को बोझ ना समझे। क्योंकि बेटियां तो बेटियां हैं चाहे किसी की भी हो। इस सामूहिक विवाह के लिए इस बार जिले के 38 संस्थाओं ने सहयोग के लिए आगे आए हैं। तथा समाज के सभी लोगों से आगाह किया कि सभी लोग अपने बच्चों को दहेज रहित विवाह करें। इस समारोह में खास बात यह रही कि दूल्हा-दुल्हन खुद मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित होकर परिणय सूत्र में बंधे। हर साल की तरह इस बार भी सर्वधर्म सामूहिक विवाह समिति के इस कार्यक्रम में कोयलांचल के हर तबके और समुदाय के लोगों ने भागीदारी निभाई। इसमें जोड़ाफाटक स्थित शक्ति मंदिर समिति ने दुल्हन के लिए चुनरी दी गई। तथा विवाह प्रत्येक वर्ष की तरह गायत्री परिवार की ओर से संपन्न किया गया।

टोटो से निकली बारात:

प्रदूषण रहित के लिए सर्वधर्म सामूहिक विवाह में टोटो से बारात निकाली गई। बारात की पूरी जिम्मेदारी नौजवान कमेटी को दी गई थी। डीजे, बैंड, बाजा और बारातियों के साथ धूमधाम से नागिन गाने पर नृत्य करते हुए वापस गोल्फ ग्राउंड पहुंचा।

दस हजार लोगों को कराया गया भोजन:

गोल्फ ग्राउंड में आयोजित सर्वधर्म सामूहिक विवाह समिति के द्वारा वर वधु के परिजनों के लिए भोजन की व्यवस्था की गई थी। जिसमें करीबन दस हजार लोगों ने भोजन किए। आज इस सामूहिक विवाह समारोह में अखिल भारतीय किन्नर समाज की झारखंड प्रदेश अध्यक्ष छम छम देवी ने 51 हजार की सहयोग राशि प्रदीप सिंह को दी। इस 11 वें सर्व धर्म सामूहिक विवाह की तैयारियों में प्रदीप सिंह के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहे युवा संघर्ष मोर्चा जनवादी के संस्थापक दिलीप सिंह ने कहा प्रदीप सिंह के इस अनुठे प्रयास के बदौलत आज हजारों जोड़े हंसी खुशी जीवन बीता रहे हैं। हमें बस प्रदीप सिंह के इस नेक कार्य में योगदान देते रहना है तकि यह समारोह निरंतर चलता रहे और ज्यादा से ज्यादा जोड़े का विवाह इस सर्वधर्म सामूहिक विवाह समारोह के मंच से हो सके। सर्व धर्म सामूहिक विवाह में नव विवाहित जोड़ों को आशीर्वाद देने के लिए गोल्फ ग्राउंड विवाह स्थल पर धनबाद सांसद, विधायक एवं गणमान्य व्यक्तिगण उपस्थित थे।

खिलाड़ी जिला ही नही देश में खेले और झरिया का नाम रोशन करें: रागिनी सिंह

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

झरिया/धनबाद। लोदना मल्लाहपट्टी में ग्राउंड में पांच दिवसीय जीडी मेमोरियल क्रिकेट टूर्नामेंट सीजन तीन का फाइनल मैच आर बाबा क्लब लोदना छह नंबर और लूज़र क्लब के बीच खेला गया। दस ओवर के मैच में पहले बलेबाजी करते हुए लूज़र क्लब ने आठ विकेट पर 137 रन बनाया। जबाबी पारी में आर बाबा क्लब ने सात ओवर 2 गेंद में मैच जीत ट्राफी पर कब्जा जमाया। मो गनी ने नॉट आउट 105 रन बना कर मैन ऑफ द मैच रहा। लूज़र क्लब के रोहित कुमार मैन ऑफ द सीरीज रहा। झरिया विधायक रागिणी सिंह ने विजेता टीम के खिलाड़ियों को पुरस्कार दिया। कहा कि खेल में जीत हार लगा रहता है। उपविजेता टीम दोबारा खूब मेहनत कर विजयी हासिल करें। यहां के खिलाड़ी जिला ही नही देश में खेले और झरिया का नाम रोशन करें। लोदना ओपी प्रभारी गौरव कुमार ने उपविजेता टीम को पुरस्कार दिया। निर्णायक मौके पर निवर्तमान संजय यादव, ललन पासवान, शैलेंद्र सिंह, रविकांत पासवान, सूरज कुमार, ज्ञान कुमार, नीरज पासवान, सोनू आदि थे।

गिरते कानून व्यवस्था के खिलाफ आक्रोश भाजपा ने बस्ताकोला में जलाया हेमंत सोरेन का पुतला

● जिला प्रशासन की नाकामी के खिलाफ सड़क पर उतरे भाजपाई

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

भगतडीह / धनबाद। गिरते कानून व्यवस्था के खिलाफ भाजपा बस्ताकोला मंडल ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन का पुतला दहन किया। भाजपा नेताओं का कहना है कि जिला प्रशासन और धनबाद पुलिस खुद की सुरक्षा नहीं कर पा रही है तो आम आदमी की सुरक्षा कैसे करेगी। झरिया विधायक रागिनी सिंह के कार्यालय पर गोली चलती है और पुलिस दबाव में आकर जांच में विलंब कर रही है। बाघमारा में पुलिस के आला अधिकारी पर जानलेवा हमला होता है। लेकिन खानापूर्ति के लिए इधर उधर छापेमारी कर रही है। जबकि कोयला चोरी को खुलेआम बढ़ावा पुलिस ही देती है। यही कारण है कि पुलिस बेवस है। वक्ताओं ने कहा कि धनबाद में हत्या और गोली चलना आम बात होती जा रही है। लेकिन पुलिस राज्य सरकार के दबाव में हाथ पर हाथ धरे बैठी है। आम आदमी डर-डर कर जिंदगी जीने को मजबूर है। अगर यही रवैया रहा तो धनबाद से व्यवसायियों का पलायन शुरू हो जाएगा। जिला प्रशासन को राज्य सरकार के दबाव से उठकर कानून व्यवस्था दुरुस्त करना चाहिए। मौके पर मंडल अध्यक्ष तरुण राय, प्रदेश मीडिया प्रभारी बप्पी बाउरी, महामंत्री संतोष रवानी, रामदेव शर्मा, रंजीत दास, शोभा देवी, रूपेश गुप्ता, नंदू साव, रंजीत दास, संजय साव, संजय कुमार, सरिता सिंह, शीला देवी, ईश्वर प्रसाद, अजय वर्मा, अफजल अंसारी, पप्पू वर्मा, राजा पासवान, अजीत मंडल आदि उपस्थित थे।

हजरत अली की यौम ए विलादत के मौके पर धार्मिक समारोह आयोजित

❑ मौला अली की यौम ए विलादत पर समुदाय ने एकजुट होकर मनाया

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

कानपुर। कुल हिंद जमीअतुल आवाम उत्तर प्रदेश द्वारा इस्लाम के चौथे खलीफा पैगंबर ए इस्लाम हजरत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दामाद हजरत मौला अली रजी की 13 रजब यौम ए विलादत (जन्मदिन) के मौके पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।इस संगोष्ठी में हजरत अली द्वारा इस्लाम के लिए दी गई कुर्बानियों को याद किया गया और उनकी दीनी खिदमत पर रोशनी डाली गई। तिलावत ए कुरान पाक एवं नात शरीफ मन्क़बात पढ़ी गईं। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे उपाध्यक्ष कारी आरिफ रजा कादरी ने संगोष्ठी को संबोधित करते हुए हजरत अली की बड़ी फजीलत और उनके मकाम की बुलंदी के बारे में बताया। कारी आरिफ रजा कादरी ने कहा कि हजरत अली की बड़ी फजीलत है और उनका मकाम बहुत बुलंद है। अल्लाह के रसूल ने उन्हें अपना भाई दुनिया और आखिरत जन्नत में बनाया। इस्लाम की सभी जंग में उन्होंने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और हमेशा फतह हासिल की। इस्लाम को सीचने में उनका और उनके खानदान का खून शामिल है, जिसको कभी नहीं भुलाया जा सकता। महामंत्री महबूब आलम खान ने कहा कि हजरत अली के किरदार से हमें सीखना चाहिए कि जब इस्लाम को बहादुरी सुजात की जरूरत थी तब भी वह आगे रहे और जब इस्लाम को बचाने की बात आई तो उनकी औलाद ने अपनी जाने की कुर्बानियां देकर दिन की हिफाजत की। इस्लाम पर हजरत अली और उनकी औलाद का अहले बायते का एहसान है, जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। इस मौके पर नायब सदर कारी आरिफ रजा कादरी, महामंत्री महबूब आलम खान, मोहम्मद उज़ैर अली, मौलाना जाकिर हुसैन, मोहम्मद उस्मान, गुलाम नबी, मोहम्मद असलम, मोहम्मद अफसर, महताब आलम, वसीम खान, मोहम्मद अनस आदि लोग मौजूद थे।

मुख्यमंत्री के आदेशों की धज्जियां उड़ाते एलडीए के अधिकारी

❑ सील बिल्डिंग पर अवैध निर्माण अधिकारियों की मिलीभगत

- अधिकारियों की मिलीभगत से सील बिल्डिंग पर निर्माण कार्य जारी
- शिकायतों की अनदेखी, कानून का उल्लंघन
- अधिकारी नियमों को ताक पर रखकर अवैध निर्माण को बढ़ावा दे रहे हैं,
- मुख्यमंत्री के आदेशों और कानून को खुलेआम तोड़ रहे निर्माण कर्ता,

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। लखनऊ विकास प्राधिकरण में भ्रष्टाचार का घिनौना चेहरा एक बार फिर सामने आया है। अधिकारियों की मिलीभगत से एक सील की गई बिल्डिंग पर खुलेआम निर्माण कार्य जारी है। यह घटना अधिकारियों की मनमानी और कानून को ठेंगा दिखाने की हद को पार कर गई है। इस निर्माण पर 09 जनवरी 2023 को एलडीए विभाग द्वारा सीलिंग की कार्रवाई की गई थी। लेकिन वर्तमान समय में जोनल अधिकारी की संरक्षण में निर्माणकर्ता ने सीलिंग तोड़कर धड़ल्ले से निर्माण कार्य जारी कर दिया है। यह स्पष्ट है कि अधिकारी निर्माणकर्ता को संरक्षण दे रहे हैं। शिकायतकर्ता ने मुख्यमंत्री पोर्टल पर शिकायत दर्ज कराई थी, लेकिन अधिकारियों ने उसकी एक न सुनी। यह साफ है कि अधिकारी जनता की शिकायतों की अनदेखी करते हुए अपने स्वार्थ सिद्ध कर रहे हैं। यह मामला लखनऊ विकास प्राधिकरण में व्याप्त भ्रष्टाचार का एक और उदाहरण है। अधिकारी नियमों को ताक पर रखकर अवैध निर्माण को बढ़ावा दे रहे हैं और शहर के विकास को बाधित कर रहे हैं। एलडीए प्रवर्तन जोन-7 में कई और सीलिंग बिल्डिंगों पर निर्माण कार्य जारी है, जिसमें एलडीए के जोनल अधिकारी और उनके अधीनस्थ कर्मचारियों का संरक्षण प्राप्त है। मुख्यमंत्री के आदेशों को ठेका दिखाकर अवैध निर्माण किया जा रहा है। यह मामला एलडीए की लापरवाही और भ्रष्टाचार को उजागर करता है। स्थानीय लोगों ने बताया कि यहां कई अवैध निर्माण हो रहे हैं, जिनमें एलडीए के अधिकारियों की मिलीभगत है। उन्होंने मांग की है कि अवैध निर्माण पर रोक लगाई जाए और एलडीए के अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की जाए।

सहकारिता मंत्री ने किया ड्रोन पायलट प्रशिक्षण केन्द्र का उद्घाटन,बांटेछात्र-छात्राओं को टैबलेट

लखनऊ । ड्रोन तकनीक ने सहकारिता क्षेत्र में एक नई क्रांति का सूत्रपात किया है। तकनीक से देश ही नहीं उत्तर प्रदेश का भी विकास हो रहा है, जिसमें सहकारिता क्षेत्र भी कहीं छूटा नहीं है। ग्रामीण महिलाओं (ड्रोन दीदियों को रोजगार तथा सक्षम बनाने के लिए प्रथम चरण में तीन बैच का एक साथ 15 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। प्रधानमंत्री द्वारा ड्रोन पायलट प्रशिक्षण एवं कृषि के क्षेत्र में इसके प्रयोग पर अत्यधिक बल दिया जा रहा है तथा राज्य सरकार उनके सपने को साकार करने हेतु कटिबद्ध है। यह बातें उत्तर प्रदेश के सहकारिता राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार जेपीएस राठौर ने लखनऊ के आईसीसीएमआरटी में ड्रोन प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ के अवसर पर कहीं। ड्रोन तकनीक न केवल कृषि क्षेत्र में उपयोगी है, बल्कि सहकारिता क्षेत्र में इसकी व्यापक संभावनाएं हैं। इससे सहकारी समितियों के कार्यों को अधिक पारदर्शी और कुशल बनाया जा सकता है।सहकारिता मंत्री ने कहा कि ड्रोन का उपयोग सहकारी समितियों की भूमि के सर्वेक्षण, फसल की निगरानी, उर्वरकों के वितरण और आपदा प्रबंधन जैसे कार्यों में किया जा सकता है। यह तकनीक समय और संसाधनों की बचत के साथ उत्पादन को बढ़ाने में सहायक है। राज्य सरकार स्वामी विवेकानंद युवा सशक्तिकरण योजना के तहत युवाओं को प्रशिक्षित कर उन्हें रोजगार के नए अवसर प्रदान कर रही है। ड्रोन प्रशिक्षण कार्यक्रम से युवाओं को तकनीकी ज्ञान मिलेगा, जिससे वे सहकारिता क्षेत्र के साथ अन्य क्षेत्रों में भी अपना योगदान दे सकें।प्रथम प्रशिक्षण कार्यक्रम में शाहजहांपुर, गाजियाबाद, अमरोहा, जौनपुर से 60 ग्रामीण महिलाओं को नि:शुल्क 15 दिवसीय महिला ड्रोन पायलट प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। प्रशिक्षण संस्थान द्वारा आवास एवं खानपान की भी व्यवस्था रहेगी।

4000 लोगों को रोजाना भोजन: ताराशक्ति रसोई ने 19 महीनों से समाज की सेवा का संकल्प

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। सरोजनीनगर विधानसभा क्षेत्र के विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह द्वारा शुरू की गई ताराशक्ति रसोई योजना ने मानवता और सेवा का एक नया अध्याय लिखा है। यह योजना कमजोर आर्थिक वर्ग और जरूरतमंद लोगों के लिए संजीवनी बन चुकी है। पिछले 19 महीनों से ताराशक्ति रसोई हर दिन 4000 से अधिक लोगों को स्वादिष्ट और पौष्टिक भोजन उपलब्ध करा रही है।

तीन स्थानों से हर दिन हज़ारों चेहरों पर मुस्कान

सरोजनीनगर में लोकबन्धु अस्पताल, विधायक कार्यालय (पराग चौराहा), और बरबिरवा चौराहा पर संचालित ताराशक्ति रसोई के माध्यम से सुबह और शाम हजारों जरूरतमंदों को निशुल्क भोजन वितरित किया जाता है। 18 जुलाई 2023 से शुरू हुई यह रसोई सेवा आज देशभर में चर्चा का विषय बन चुकी है।

ताराशक्ति रसोई में भोजन की गुणवत्ता और स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। पौष्टिक और विविधतापूर्ण भोजन मेन्यू रोज बदला जाता है ताकि लोगों को भोजन में नयापन और पोषण दोनों मिल सके। पूज्य मां तारा सिंह जी की प्रेरणा से प्रेरित होकर विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह ने इस पहल को मानवता की सेवा के प्रति समर्पित किया। डॉ. सिंह का कहना है, गरीब और जरूरतमंदों की मदद करना हमारी सामाजिक जिम्मेदारी है। ताराशक्ति रसोई इसी दिशा में एक छोटा लेकिन सशक्त प्रयास है। स्थानीय निवासियों ने ताराशक्ति रसोई को एक आशा की किरण बताया है। उनका कहना है कि यह योजना समाज में सेवा और एकजुटता का ऐसा उदाहरण पेश कर रही है, जो अन्यत्र देखने को नहीं मिलता। ताराशक्ति रसोई- प्रेरणा स्रोत बनी सरोजनीनगर की यह पहल ताराशक्ति रसोई समाजसेवा और जनकल्याण का प्रतीक।

महावारी स्वच्छता अभियान से संबंधित दो दिवसीय शिविर का आयोजन

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

लखनऊ। मकर संक्रांति के उपलक्ष में दो दिवसीय शिविर एवं महावारी स्वच्छता अभियान का आयोजन डॉक्टर निरुपमा मिश्रा ने साउथ सिटी लखनऊ स्थित राजेश्वरी हेल्थ क्लीनिक में किया। गाइनेकोलॉजिस्ट डाक्टर निरुपमा मिश्रा ने साउथ सिटी और आसपास के इलाकों से पहुंची महिलाओं को सर्वाइकल कैंसर के प्रति जागरूक किया। वहां उपस्थित महिलाओं की निशुल्क जांच और सलाह प्रदान की तथा साथ ही बच्चों का फ्री चेकअप किया और उनके लिए दवाएं दी। कार्यक्रम में आई हुई बालिकाओं को पर्सनल हाइजीन के बारे में बताया और उपस्थित सभी लोगों को सेनेटरी पैड वितरित किए। कार्यक्रम में मुख्य रूप से रिटायर्ड कर्नल सत्येंद्र सिंह तथा शिक्षिका व समाज सेविका रीना त्रिपाठी उपस्थित रही। रीना त्रिपाठी ने सभी बच्चियों को शिक्षा के प्रति जागरूक किया और स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है इसके लिए स्वास्थ्य की देखभाल आवश्यक है। लड़कियों को मेंस्ट्रूअल साइकिल की जानकारी होनी चाहिए और उस समय डॉक्टर द्वारा बताई गई विधि से पर्सनल अंगों की साफ सफाई का विशेष ध्यान रखने को कहा। महावारी स्वच्छता अभियान के तहत आयोजित कि प्रतियोगिता में विजेता बच्चों को सम्मानित किया। निशुल्क दवा वितरण और आवश्यक सामग्रियां प्रकार सभी लोग काफी खुश थे तथा डॉक्टर की सलाह के अनुसार अपने स्वास्थ्य के देखभाल करने का आश्वासन दिया।

एनएमओपीएस ने की पीएम से पुरानी पेंशन बहाली व निजीकरण समाप्त करने की मांग: विजय बन्धु

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। एनएमओपीएस के राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ.राजेश कुमार ने बताया कि नववर्ष पर एनएमओपीएस के राष्ट्रीय अध्यक्ष विजय कुमार बन्धु द्वारा देश के मा. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी को पत्र भेज कर नववर्ष की शुभकामनाएं देते हुए देश के अर्द्ध सैनिक बलों समेत करोड़ों शिक्षकों की पुरानी पेंशन बहाल करने की मांग करते हुए कहा कि आज एनपीएस में रिटायर होने वालों को 900 से लेकर 1500 रुपये मिल रहे हैं जिससे बुढ़ापे में उनका व उनके परिवार का भरण - पोषण करने में मुश्किल हो रही है। साथ ही निजीकरण को समाप्त करने की मांग करते हुए कहा कि निजीकरण होने से युवाओं को रोजगार नहीं मिल रहा है इसलिये देश के सरकारी संस्थानों को निजीकरण से बचाकर देश के युवाओं को रोजगार प्रदान करें। इसी क्रम में विपक्ष के नेता राहुल गाँधी को नववर्ष की बधाई देते हुए पुरानी पेंशन की बहाली और निजीकरण समाप्त करने के लिये सड़क से सदन तक संघर्ष करने की मांग की 7 कांग्रेस ने जहां राजस्थान, छत्तीसगढ़, हिमाचल में सरकार रहते हुए ओपीएस लागू किया है वहीं कर्नाटक और तेलंगाना में कर्मचारी उम्मीद लगाए बैठा हुआ है इसीलिए संगठन ने कर्नाटक व तेलंगाना राज्य में पुरानी पेंशन बहाल करने की मांग की ।

सिंधी-हिन्दी में समानता एवं संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी की संभावनाएं विषय पर हुई संगोष्ठी

लखनऊ । भाषा विभाग के अपर मुख्य सचिव जितेन्द्र कुमार के मार्गदर्शन में उत्तर प्रदेश सिन्धी अकादमी द्वारा विश्व हिन्दी दिवस के अन्तर्गत लखनऊ में ''सिंधी-हिन्दी में समानता एवं संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी की संभावनाएं'' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।कार्यक्रम में सर्वप्रथम भगवान झूलेलाल की प्रतिमा पर अकादमी निदेशक अभिषेक कुमार 'अखिल', सिंधी विद्वान प्रकाश गोधवानी, सुधामचंद, दुनीचन्द, पदमकान्त शर्मा, उमेश कुमार पाठक, दिनेश मूलवानी आदि ने माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। कार्यक्रम में पदमकान्त शर्मा ने संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी संभावनाओं पर प्रकाश डाला। प्रकाश गोधवानी ने हिन्दी सिंधी में समानता को उदाहरण सहित अवगत कराया। उन्होने बताया कि संयुक्त राष्ट्र संघ में 06 भाषाएं है। पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न अटल बिहारी वायपेयी ने सर्वप्रथम संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी में भाषण दिया था। सुधामचन्द ने भारतीय व सिंधी संस्कृति की समानताओं का उल्लेख करते हुए सिंधी भाषा की विशेषताओं की तुलना हिन्दी से की एवं दोनो की मूलभूत समानताओं पर चर्चा की। उमेश कुमार पाठक ने सिंधी भाषा की प्राचीनता पर विचार रखें। श्री पाठक ने बताया कि संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी भाषा में रेडियों पर प्रसारण होता है। हिन्दी अपनी दस्तक पूरी ताकत से संयुक्त राष्ट्र संघ पर दे रही है। अकादमी निदेशक अभिषेक कुमार अखिल द्वारा आये हुए विद्वानों का आभार व्यक्ति किया और बताया कि हिन्दी विश्व में बोली व समझी जाने वाली प्रमुख भाषाओं में एक हैं और पूरे विश्व में फैली है।

समाचार

अवैध हुक्का बार चलाने वालों पर कसा शिकंजा दो अभियुक्त गिरफ्तार

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता इरफान कुरैशी

लखनऊ। लखनऊ कमिश्नर अमरेन्द्र कुमार सेंगर दिशा निर्देश द्वारा थाना खालाबाजार पुलिस टीम गश्त के दौरान सूचना मिली कि, गुलजार नगर चौकी क्षेत्र में काशा होटल में नियम विरुद्ध से हुक्का का संचालन किया जा रहा है, इस सूचना थाना प्रभारी संतोष कुमार आर्य ने गंभीरता से लेते हुए पुलिस टीम के साथ निकल पड़े, मौके पर जाकर पुलिस टीम द्वारा चेकिंग की गई तो पाया गया कि मौके पर मौजूद होटल कर्मचारियों से उक्त के सम्बन्ध पूछा गया तो कोई स्पष्ट जवाब नहीं दे पाया और न ही कोई हुक्का संचालित किये जाने से सम्बन्धित प्रपत्र जारी नहीं था, मौके से अभियुक्तों हिरासत पुलिस में लिया, नाम पता पूछने पर अपना नाम 1 महेश यादव नि. ग्राम कमरवा थाना मौरावां जनपद उन्नाव,2 अजय कनौजिया नि. सराय पाण्डे थाना लोनी कटरा जनपद बाराबंकी, थाना प्रभारी संतोष कुमार आर्य ने बाड़ी सुझबुझ से आरोपी को किया गिरफ्तार, इस क्रम (पश्चिम) डीसीपी, द्वारा दिशा निर्देश पर गठित कि कई टीमें लगातार अपराधियों को धरपकड़ कर रही हैं,थाना खालाबाजार निरीक्षक संतोष कुमार आर्य के नेतृत्व में पुलिस ने आरोपीयों को गिरफ्तार कर, नियमानुसार विधिक कार्यवाही की गया है।

नगर निगम सफाई कर्मचारियों की बैठक में सफाई व्यवस्था में ठेका प्रथा के खिलाफ जोरदार विरोध

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। नगर निगम के सामने झंडी वाला पार्क में आयोजित सफाई कर्मचारियों की बैठक में नगर निगम की सफाई व्यवस्था में ठेका प्रथा के खिलाफ जोरदार विरोध दर्ज किया गया। बैठक में सफाई संगठनों और कर्मचारियों ने ठेका प्रथा को समाप्त करने, रिक्त पदों पर नियमित भर्ती करने, मृतक आश्रितों की नियुक्ति पर कार्रवाई करने और संविदा कर्मचारियों को नियमित करने की मांगें रखीं। बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि सफाई कार्य में लगे बांग्लादेशी श्रमिकों को हटाया जाए और कर्मचारियों को पदोन्नति का लाभ दिया जाए। अगले चरण के लिए 17 जनवरी 2025 को दोपहर 2 बजे फिर बैठक होगी और उसी दिन नगर निगम प्रशासन को ज्ञापन सौंपा जाएगा।बैठक में राजेंद्र वाल्मीकि, नरेश वाल्मीकि, अशोक कुमार वाल्मीकि, कमल वाल्मीकि सहित कई प्रमुख सफाई कर्मचारी उपस्थित रहे। बैठक की अध्यक्षता जगदीश अटल ने की और जानकारी राहुल कुमार वाल्मीकि ने साझा की।

हुसैनाबाद में अतिक्रमण से राहत

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। हुसैनाबाद ट्रस्ट ने अतिक्रमण के खिलाफ सख्त कार्रवाई करते हुए छोटे इमामबाड़े के आसपास लगने वाली दुकानों का निरीक्षण किया। इस अभियान का नेतृत्व एसीएम-5 मनोज कुमार सिंह और एसीएम-2 ने किया। किरायेदारी नियमों की सख्ती- ट्रस्ट ने निर्देश दिया कि यदि किसी दुकान का काउंटर बाहर निकला पाया गया, तो तुरंत उसकी किरायेदारी निरस्त कर दी जाएगी। हुसैनाबाद क्षेत्र में अतिक्रमण के कारण आम जनता को जाम और आने-जाने में हो रही परेशानी से राहत देने का यह अभियान शुरू किया गया। संयुक्त टीम की भागीदारी, इस कार्रवाई में हुसैनाबाद ट्रस्ट के अधिकारी, हबीबुल हसन, प्रॉपर्टी सुपरवाइजर एजाज रिजवी, रीजवान, और ठाकुरगंज पुलिस भी मौजूद रहे। यह अभियान छोटे इमामबाड़े के दोनों गेटों के सामने की दुकानों पर केंद्रित रहा। यह कार्रवाई यातायात और क्षेत्रीय व्यवस्थापन सुधारने की दिशा में एक बड़ा कदम है। ट्रस्ट ने संकेत दिए हैं कि आगे भी ऐसी कार्रवाइयां जारी रहेंगी।

9वें उत्तर प्रदेश महोत्सव में अधिवक्ता सम्मान समारोह आयोजित किया गया

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। सृजन फाउंडेशन एवं शाइन इवेंट्स द्वारा आयोजित किये गए 9वें उत्तर प्रदेश महोत्सव में एडवोकेट राम प्रकाश सिंह %राम% के तत्वावधान में अधिवक्ता सम्मान आयोजित किया गया। सम्मान समारोह में अध्यक्ष सेंट्रल बार एसोसिएशन एडवोकेट अरविन्द कुमार कुशवाहा, महामंत्री लखनऊ बार एडवोकेट ब्रजभान सिंह (भानु), वरिष्ठ उपाध्यक्ष सेंट्रल बार एसोसिएशन एडवोकेट प्रदीप सिंह, उपाध्यक्ष सेंट्रल बार एसोसिएशन एडवोकेट आशुतोष चौहान, एडवोकेट अमित त्यागी, उपाध्यक्ष लखनऊ बार एडवोकेट सौरभ शुक्ला, पूर्व उपाध्यक्ष सेंट्रल बार एसोसिएशन एडवोकेट लक्ष्मेन्द्र सिंह, एडवोकेट अंकित मिश्रा सहित 51 से अधिक अधिवक्ताओं का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में डॉ अर्चना सक्सेना, रोमा श्रीवास्तव, अनूप सक्सेना, शैलेंद्र मोहन, स्वाति जैन, मोहित श्रीवास्तव, अजय यादव आदि उपस्थित रहे।

जीवन ज्योति सेवा फाउंडेशन ने गरीबों को तहरी के साथ कंबल वितरित किया

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

जौनपुर/ लखनऊ। जीवन ज्योति सेवा फाउंडेशन के तत्वावधान में आज मकर संक्रांति के उपलक्ष्य में शाहगंज विधानसभा क्षेत्र के गैरवाह (हटिया) जौनपुर में तहरी भोज एवं कम्बल वितरण का आयोजन किया गया। सामाजिक समरसता के पर्व मकर संक्रांति के उपलक्ष्य में गैरवाह (हटिया) पेट्रोल पम्प के पास आज प्रातःकाल 11:00 बजे जीवन ज्योति सेवा फाउंडेशन की अध्यक्ष ज्योति सिंह एवं उपाध्यक्ष जितेन्द्र सिंह ने आम जनमानस में तहरी (भोजन) के साथ गरीब - असहाय एवं निराश्रित लोगों को गर्म कंबल का वितरण किया। इस अवसर पर सरपतहा थाने के एस.एच.ओ अशोक सिंह, राकेश वर्मा जिला उपाध्यक्ष भाजपा, अवधेश दुबे मंडल अध्यक्ष भाजपा अरसिया सहित अन्य गणमान्य व्यक्तियों के अलावा तमाम लोग उपस्थित थे।

घने कोहरे का विमान सेवाओं पर पड़ा असर,तीन उड़ाने रद्द,कई उड़ाने घंटो लेट

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। मंगलवार रात से राजधानी लखनऊ सहित अन्य शहरों में पड़ रहे भयंकर घने कोहरे से लो विजिबिलिटी हो गई। इसका विमान सेवाओं पर काफी असर पड़ा। इसकी वजह से बुधवार को लखनऊ आने जाने वाली तीन उड़ाने रद्द कर दी गई। रद्द की गयी उड़ानों में सुबह 5:30 बजे दम्माम से लखनऊ आने वाली और लखनऊ से पुनः 1 घंटे बाद वापस दम्माम जाने वाली फ्लायनास की उड़ान के अलावा शाम 6:50 बजे दिल्ली से लखनऊ आने वाली इंडिगो की उड़ान शामिल है। इसके अलावा कई उड़ाने आधे घंटे से 3 घंटे तक विलंब रहीं। मौसम खराब होने के कारण लखनऊ से सुबह 6:40 बजे अहमदाबाद जाने वाली इंडिगो की उड़ान करीब 1 घंटा, दोपहर 1:25 बजे पटना जाने वाली इंडिगो की उड़ान एक घंटा 45 मिनट, दोपहर 1:45 बजे मुंबई जाने वाली इंडिगो की उड़ान करीब 1 घंटा, दोपहर 2:15 बजे दिल्ली जाने वाली एयर इंडिया की उड़ान एक घंटा 50 मिनट, दोपहर 2:55 बजे पुणे जाने वाली एयर इंडिया एक्सप्रेस की उड़ान करीब ढाई घंटे, अपराह्न 3:35 बजे दिल्ली जाने वाली एयर इंडिया की उड़ान करीब डेढ़ घंटे, शाम 4:50 बजे बेंगलुरु जाने वाली इंडिगो की उड़ान करीब 1 घंटे और लखनऊ से रात 8:10 बजे दिल्ली जाने वाली एयर इंडिया एक्सप्रेस की उड़ान करीब 3 घंटा देरी से उड़ान भर सकी। इसी तरह दुबई से सुबह 7:35 बजे लखनऊ आने वाला एयर इंडिया एक्सप्रेस का विमान करीब एक घंटा देरी से लखनऊ पहुंचा। जबकि शारजाह से सुबह 6:50 बजे लखनऊ आने वाली इंडिगो की उड़ान आधा घंटा, दिल्ली से दोपहर 1:30 बजे लखनऊ आने वाली एयर इंडिया की उड़ान करीब 1 घंटा 45 मिनट, दिल्ली से दोपहर 2:25 बजे लखनऊ आने वाली एयर इंडिया एक्सप्रेस की उड़ान करीब ढाई घंटा, दिल्ली से ही दोपहर 2:35 बजे आने वाली इंडिगो की उड़ान लगभग 2 घंटा, दिल्ली से दोपहर 2:50 बजे लखनऊ आने वाली एयर इंडिया की उड़ान करीब 1 घंटा, रायपुर से 3:45 बजे लखनऊ आने वाली इंडिगो की उड़ान 1 घंटा और पटना से शाम 4:15 बजे लखनऊ आने वाली इंडिगो की उड़ान एक घंटा 15 मिनट देरी से पहुंच सकी। लखनऊ आने-जाने वाली तीन उड़ाने रद्द होने और अन्य उड़ानों के काफी लेट लतीफ होने के कारण यात्रियों को भारी परेशानियां झेलनी पड़ी।

युवती को शादी की नीयत से अगवा कर ले जाने की दर्ज रिपोर्ट

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

सरोजनीनगर। सरोजनीनगर के एक व्यक्ति ने बिजनौर के ठकुराइन खेड़ा गांव में रहने वाले शिवम यादव उर्फ नीतू के खिलाफ बेटी को शादी की नीयत से अगवा कर ले जाने की रिपोर्ट दर्ज कराई है। पीड़ित का कहना है कि बीती 9 जनवरी को सुबह करीब 6:30 बजे शिवम उसकी 24 वर्षीय बेटी को घर के बाहर से बहला फुसला कर अपनी मोटरसाइकिल पर बिठा ले गया। बेटी को गायब होने के बाद जानकारी होने पर उसकी रिश्तेदारी और परिचितों के यहां काफी तलाश की गई। लेकिन उसका कहीं कोई अता-पता नहीं चल सका। पीड़ित ने बेटी के साथ अप्रिय घटना होने की आशंका जाहिर करते हुए मंगलवार रात सरोजनीनगर थाने में आरोपी के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई है। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर युवती और आरोपी की तलाश शुरू कर दी है।

विमल कुमार जोशी की आईरा जिला बिजनौर के जिलाध्यक्ष पद पर नियुक्ति

तीसरा विकल्प न्यूज़ ब्यूरो

बिजनौर/लखनऊ। भारत एव विश्व के सबसे बडे अंतराष्ट्रीय पत्रकार संगठन आईरा इंटरनेशनल रिपोर्टर्स एसोसिएशन आईरा ने आज जिला बिजनौर के कर्मठ पत्रकार विमल कुमार जोशी (वी के जोशी) को बिजनौर जिलाध्यक्ष नियुक्त किया ।उक्त जानकारी आज लखनऊ से सोशल मीडिया के माध्यम से उपलब्ध कराई गयी । सनद रहे कि जिला बिजनौर के अध्यक्ष पद लगभग दो माह से रिक्त था जिसपर पूर्व जिलाध्यक्ष विमल कुमार जोशी की फिरसे नियुक्ती की गयी है, विमल कुमार जोशी पूर्व मे भी इस पद पर रह चुके है । आज लखनऊ स्थित आईरा के प्रदेश कार्यालय से प्रदेश अध्यक्ष ए एस खान द्वारा उक्त नियुक्ति संबंधित जो जानकारी सोशल मीडिया द्वारा उपलब्ध कराई गयी- हर्ष के साथ सुचित किया जाता है कि कर्मठ पत्रकार विमल कुमार जोशी को आईरा इंटरनेशनल रिपोर्टर्स एसोसिएशन आईरा के चेयरमैन एएमबी तारिक ज़की जी से विचार विमर्श के बाद जिला बिजनौर का जिलाध्यक्ष नियुक्त किया जाता है । विमल कुमार जोशी पूर्व मे भी जिला बिजनौर मे आईरा टीम की अगुवाई कर चुके है, तथा इनका कार्य काफी सराहनीय भी रहा था । विमल कुमार जोशी के उज्जवल भविष्य की कामना के साथ आषा करता हूँ कि वे आईरा इंटरनेशनल रिपोर्टर्स एसोसिएशन आईरा को वरिष्ठ उपाध्यक्ष जीशान नजीबाबादी जी से समन्वय बनाकर जिले की प्रत्येक तहसील, ब्लाक मे आईरा की एक सशक्त टीम खडी करने एव संघटन को जिले मे विसतार देने मे सफल होंगे । ए एस खान प्रदेश अध्यक्ष आईरा इंटरनेशनल रिपोर्टर्स एसोसिएशन आईरा उत्तर प्रदेश - लखनऊ

बीएसपी कार्यकर्ताओं ने मायावती का 69 वां जन्मदिन जनकल्याणकारी दिवस के रूप में मनाया।

- पार्टी के लोग हर स्तर पर सावधानी बरतते हुए पार्टी के मूवमेंट को आगे बढ़ाए तभी सत्ता में आ सकते हैं: मायावती
- सत्ता में आने पर ही आत्मसम्मान व स्वाभिमान का जीवन व्यतीत कर सकते हैं: मायावती

तीसरा विकल्प न्यूज़ - संवाददाता लखनऊ

लखनऊ। देश भर में बीएसपी कार्यकर्ताओं ने बीएसपी की राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती का 69 वां जन्मदिन जनकल्याणकारी दिवस के रूप में हर्षोल्लास के साथ मनाया। इस अवसर पर मीडिया को सम्बोधित करते हुए बीएसपी सुप्रीमों मायावती ने देशभर के अपने कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया।मायावती ने कहा कि पार्टी के लोग मेरे जन्मदिन को जनकल्याणकारी दिवस के रूप में मनाते हैं और उन जनकल्याणकारी योजनाओं के बारे में बताते हैं जिन्हे यहां चार बार मेरे नेतृत्व में रही बीएसपी की सरकार में शुरू व लागू भी किया गया है जिनसे गरीबों, दलितों, आदिवासियों, पिछड़े वर्गों, मुस्लिम व अन्य अकलियतों की स्थिति में काफी बदलाव व सुधार आया है।और अब देश में दूसरी पार्टियों की राज्य सरकारें काफी नकल कर रही हैं लेकिन इन्हे कोई विशेष लाभ नही दे पा रहे हैं। मायावती ने कहा कि मेरी सरकार में मजदूरों, बेरोजगारों, किसानों, व्यापारियों व अन्य मेहनतकश लोगों के साथ ही युवाओं, छात्राओं, महिलाओं, बुजुर्गों व विकलांगों आदि के हितों में भी अनेक नई - नई जनकल्याणकारी योजनाएं शुरू व लागू की गई जिनसे इन्हे काफी लाभ पहुंचा जिनसे प्रेरित होकर अब पार्टी के लोग यहां फिर से यूपी में व यूपी की तरह पूरे देश में अब ऐसी ही जनकल्याणकारी सरकार बनाने के लिए पूरे जी जान से लगे हैं। और यदि इसके लिए पार्टी द्वारा किये गये कार्यों के प्रति इनकी पूरी ईमानदारी व निष्ठा होती है तो फिर यही मेरे जन्म दिन पर इनका विशेष तोहफा भी होगा। उन्होने परमपूज्य बाबा साहेब एवं मान्यवर कांशीराम जी के कारवां को आगे बढ़ाने के लिए बीएसपी को पूरे तन मन धन से सहयोग करने के संकल्प को दोहराया। साथ ही उन्होने कार्यकर्ताओं को आगाह किया कि कुछ वर्षों से बीएसपी विशेषकर दलित बेस वोट को कमजोर करने व उसे तोड़ने के लिए कांग्रेस, बीजेपी, सपा व अन्य जातिवादी पार्टियां भी आय दिन किस्म किस्म के साम, दाम, दंड, भेद आदि अनेकों हथकंडे इस्तेमाल कर रही हैं जिनसे इन्हे कदम कदम पर सावधान रहना है। आरक्षण पर बोलते हुए उन्होने कहा कि एससी, एसटी के साथ साथ ओबीसी वर्गों के लोगों को भी आरक्षण व अन्य कानूनी अधिकारों का अभी तक भी पूरा लाभ नही दिया जा रहा है। उन्होने कहा कि यदि पार्टी के लोग हर स्तर पर सावधानी बरतते हुए अपनी पार्टी व मूवमेंट को आगे बढ़ाते हैं और पार्टी के निर्देशों पर निष्ठा से अमल करते हैं एवं पार्टी मूवमेंट को आगे बढ़ाते हैं, तथा सत्ता में भी लाते हैं तो तभी फिर यहाँ अपने लोग विकसित हो सकते हैं तथा वे आत्मसम्मान एवं स्वाभिमान की भी जिंदगी व्यतीत कर सकते हैं, जो इस समय बहुत जरूरी है 7 इस अवसर पर उन्होने अपनी पुस्तक %मेरे संघर्षमय जीवन एवं बीएसपी मूवमेंट का सफरनामा % का विमोचन भी किया 7साथ ही दिल्ली में आप व केन्द्र सरकार से मुक्ति पाने के लिए बीएसपी को चुनाव में समर्थन करने की अपील की।

संपादकीय

बाड़बंदी पर विवाद

गत वर्ष अगस्त में तत्कालीन प्रधानमंत्री शेख हसीना के अपदस्थ होने के बाद बांग्लादेश की कार्यवाहक सरकार के दौरान भारत विरोधी रवैये में कमी नहीं आ रही है। लगातार भारत विरोधी मुहिम व अल्पसंख्यक हिंदुओं पर हमले के बाद अब नया विवाद दोनों देशों की सीमा पर बाड़ लगाने को लेकर पैदा किया जा रहा है। जबकि इस मुद्दे पर दोनों देशों के बीच पहले ही सहमति बन चुकी थी। बड़े हिस्से पर पहले ही बाड़बंदी हो चुकी है। लेकिन टकराव मोल लेने को तैयार बैठे बांग्लादेश के हुकमरान विवाद के नये-नये मुद्दे तलाश रहे हैं। बीते रविवार बांग्लादेश के विदेश मंत्रालय ने ढाका में भारत के उच्चायुक्त प्रणय वर्मा को तलब किया। कयास लगाये जा रहे हैं कि बांग्लादेश ये हरकतें किसी तीसरे देश के इशारे पर कर रहा है। उल्लेखनीय है कि भारत-बांग्लादेश के बीच 4156 किलोमीटर लंबी सीमा में से 3271 किलोमीटर पर कंटीले तार की बाड़ लग चुकी है और अब 885 किलोमीटर सीमा पर बाड़ लगना शेष है। अवैध घुसपैठियों, अपराधियों और चरमपंथियों की रोकथाम हेतु सीमा पर बाड़ लगाना भारत का अधिकार है। मामले का निस्तारण बांग्लादेश को समझदारी से करना चाहिए। दरअसल, बांग्लादेश की कार्यवाहक सरकार पुराने मुद्दे उछाल कर विवाद को हवा दे रही है। ऐसे वक्त में जब पाक से उसकी नजदीकियां लगातार बढ़ी हैं और वहां पाक सेना के अधिकारियों की सक्रियता देखी गई है, भारत को अपनी सुरक्षा चिंताओं के लिये कदम उठाने ही चाहिए। अब तक पंजाब, जम्मू-कश्मीर व नेपाल के रास्ते आतंकवादियों को भारत भेजने की कोशिश पाक करता रहा है। इस आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता कि वह बांग्लादेश से लगी भारत की खुली सीमा का दुरुपयोग न करे। निश्चित रूप से पिछले दिनों बांग्लादेश से रिश्तों में जिस तरह से अविश्वास उपजा है, उसके चलते भारत अपनी सुरक्षा चिंताओं को नजरअंदाज नहीं कर सकता। यहां उल्लेखनीय है कि बाड़बंदी के भारत के फैसले को व्यापकता में देखने की जरूरत है। यह बात भी ध्यान रखने काबिल है कि दोनों देशों में सीमा पर बाड़ लगाने को लेकर विगत में एक राय बनी हुई है। बीएसएफ और बॉर्डर गार्ड बांग्लादेश यानी बीजीबी में कई बार बातचीत के बाद इस मुद्दे पर सहमति बन चुकी है। लेकिन बांग्लादेश भारत की सदाशयता के बावजूद टकराव के मूड में नजर आता है। ऐसा ही रवैया उसका अल्पसंख्यकों की सुरक्षा को लेकर भी रहा है, जिस बारे में वह अब दलील दे रहा है कि हालिया हिंसक घटनाएं सांप्रदायिक नहीं बल्कि राजनीतिक कारणों से हुई हैं। बल्कि अंतरिम सरकार के प्रमुख भारतीय मीडिया पर घटनाओं को बढ़ा-चढ़ाकर बताने का आरोप लगाते हैं। ऐसे वक्त में जब बांग्लादेश की कार्यवाहक सरकार ने पाकिस्तानियों का बांग्लादेश में प्रवेश आसान कर दिया है तो पाक के बांग्लादेश को भारत विरोधी प्लेटफॉर्म के रूप में इस्तेमाल करने की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता। यह हकीकत है कि पाक का जन्म ही भारत विरोधी मानसिकता से हुआ है। ऐसे में अतीत से सबक लेते हुए भारत को अपनी सीमाओं की सुरक्षा को लेकर किसी तरह की चूक नहीं करनी चाहिए। किसी भी तरह की ढिलाई भारतीय सुरक्षा पर भारी पड़ सकती है। भारत की उदारता को बांग्लादेश हमारी कमजोरी न मान ले, इसलिए उसे बताना जरूरी है कि भारत से टकराव की कीमत उसे भविष्य में चुकानी पड़ सकती है। यह भी कि संबंधों में यह कसैलापन लंबे समय तक नहीं चल सकता। उसकी यह कटुता उसके लिये ही कालांतर घातक साबित हो सकती है। यह विडंबना ही है कि नोबेल पुरस्कार से सम्मानित अंतरिम सरकार के प्रमुख मोहम्मद यूनुस से क्षेत्र में शांति व सद्भाव की जो उम्मीदें थी, उसमें उन्होंने कट्टरपंथियों की लाइन लेकर निराश ही किया है। उनकी सरकार लगातार अड़ियल व बदमिजाजी का रुख अपनाए हुए है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि दोनों देशों के संबंध बिगाड़ने में पर्दे के पीछे पाकिस्तान की भूमिका हो। जिस बांग्लादेश को पाकिस्तानी क्रूरता से मुक्त कराकर एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में भारत ने तमाम कुर्बानियों के बाद जन्म दिया, उसका यह रवैया दुर्भाग्यपूर्ण ही कहा जाएगा।

एप केरा एपुरा

गया वो बचपन जब दादा दादी, नाना नानी को घोड़ा बनाकर उनकी पीठ पर सवारी किया करता था। गया वो जमाना जब पिता के कंधे पर सवारी का आनंद लेते दूर दूर तक देखा करता था, पिता से भी बहुत आगे तक। गया वो जमाना जब मां की गोद में मां की थपथपियों के बीच लोरियां आंख बंद कर सोने का नाटक करते सुनी जाती थीं। गया वो जमाना जब बहन भाई की पीठ का आनंद लिया करती थी। गया वो जमाना जितना मजा जब दादा, नाना को दादा, नाना होते हुए भी घोड़ा बनने पर आता था, उससे अधिक आनंद तब नाती, पोते को नाना, दादा की पीठ की सवारी करने में आता था। अपने नाती पोते को अपनी पीठ की सवारी करवा तब उन्हें लगता था ज्यों घोड़ा बनकर भी उन्हें स्वर्ग मिल गया हो। अपने नाना दादा की पीठ पर सवार हो तब नाती पोते को लगता था ज्यों वह नाना, दादा की पीठ पर सवार न होकर पुष्पक विमान की सवारी कर रहा हो। तब दादा दादी, नाना नानी खांसते हुए भी अपने पोते, नाती का घोड़ा बन उसे पीठ पर बिठा सारी दुनिया की सैर करवाते थे। जमाना बदला तो दादा दादी, नाना नानी, पिता, भाई की पीठ के बदले नाती, पोता, बेटा, बहन छोटे छोटे यार दोस्त दोस्तों की पीठ की सवारी करने के बदले लकड़ी के घोड़े की सवारी करने लगे। फिर जमाना बदला तो लकड़ी के घोड़े की सवारी के बदले अपनी उम्र के हिसाब से वॉकर का सवार हो गए और दादा दादी, नाना नानी, पिता, भाई बहन, दोस्त की उंगली पकड़ कर चलना सीखने के बदले वॉकर पर सवार हो चलना सीखने लगे। फिर जब मिडिल क्लास के बाप की जेब में कुछ एकस्ट्रा पैसे आए तो कुछ लोन शोन का जुगाड़ कर बाप साइकिल, मोटर साइकिल पर अपने बच्चे को सवार कर उसे जिंदगी की रेस में रेस लगाना सिखाने लगे। अब दिन एप की सवारी के हैं। एप पर सवार ख्वारी के हैं। बच्चा पैदा होते ही मां की गोद में नहीं, एप की गोद में जाकर लोरियां सुनता सोता है। अब बच्चा एप की उंगलियां पकड़ चलना सीखता है। अब बच्चा एप के कंधे पर सवार होकर दुनिया देखता है। अब बच्चा दादा, नाना, पिता, मां, भाई की पीठ की सवारी करना भूल गया है। अब बच्चा दादा, नाना, पिता, मां, भाई की उंगली पकड़ चलना सीखना भूल गया है। आज न किसी को अपनी पीठ की सवारी कराने का किसी के पास वक्त है और न किसी के पास किसी की पीठ की सवारी करने का। आज कदम कदम पर एप अपनी सवारी करवाने को सज धज कर खड़ा है। किसी को धन से लेकर मन तक उधार देना हो तो एप है साहब! किसी से मन से लेकर धन तक उधार लेना हो तो एप है न साहब! अब एप की सवारी कीजिए और जिंदगी के मजे लीजिए। प्रेम से लेकर प्यार, मनुहार सब एप पर। अब शादी ब्याह के लिए कोई बिचौलिया नहीं। एप पर गए और ढूंढ लिया मन चाहा वर। एप है तो क्या गम है। एप है तो गांव स्वर्ग सिधारे बाप को अपने बेटे के हाथों मुखाग्नि दिलवा स्वर्ग जाने की रत्ती भर भी नहीं टेंशन है। एप पर पंडितजी हाजिर। एप पर प्रभु के लाइव दर्शन! एप पर प्रभु का प्रसाद। एप पर समाज की शांति, एप पर समाज का प्रमाद, उन्माद। आज जीव के पास भले ही हर चीज की कमी हो, पर एप की कोई कमी नहीं है। फाइनेंस सेट करना है तो बस, अपने मोबाइल के एप को टच भर करने की जरूरत है। कैम स्कैनर एप से लेकर आम स्कैमर तक का एप हमारी मुट्ठी में है। एप जन्मघुट्टी है। एप नौकरी है, एप छुट्टी है। एपिया जिंदगी कुछ सच्ची है, बहुत कुछ झुट्टी है। एप केरा एपुरा, अस एपी की जात। एप पर ही जागत है, एप पर सो जात।

कांग्रेस-आप की जंग में इंडिया को नुकसान

> ऐसे समय में जब प्रमुख विपक्षी गठबन्धन इंडिया को मजबूत करने के लिये उसका नेतृत्व कर रहे कांग्रेस पर दबाव है

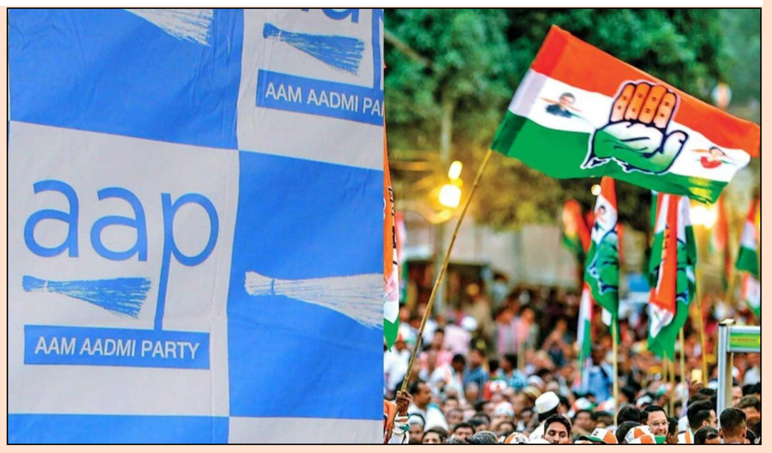

ऐसे समय में जब प्रमुख विपक्षी गठबन्धन इंडिया को मजबूत करने के लिये उसका नेतृत्व कर रहे कांग्रेस पर दबाव है, दिल्ली विधानसभा चुनाव में उसके और सत्तारुढ़ आम आदमी पार्टी के बीच जंग इतनी तेज हो गयी है कि शक है कि गठबन्धन में आप रहेगी या नहीं। चुनाव प्रचार के दौरान एक-दूसरे को नीचा दिखाने पर आमादा कांग्रेस व आप के बीच जो घट रहा है, उससे गठबन्धन की एकजुटता और भविष्य पर भी सवालिया निशान लग रहे हैं। सम्भव है कि इसके बाद आप इंडिया से कांग्रेस को निकालने या उसके हाथों से नेतृत्व छीनने की मुहिम छेड़ दे या स्वयं अलग हो जाये। आप के ताल्लुकात कांग्रेस से हाल के दिनों में काफी बिगड़े हैं। देखना होगा कि यह अदावत क्या गुल खिलाती है। आप का व्यवहार वैसे भी इस मायने में संदिग्ध रहा है कि उसके सभी सियासी कदमों का लाभ केन्द्र की सत्ता में बैठी भारतीय जनता पार्टी को मिलता रहा है। विस्तार की महत्वाकांक्षा के चलते पूर्व मुख्यमंत्री एवं पार्टी अध्यक्ष अरविंद केजरीवाल ने अनेक राज्यों के विधानसभा चुनावों में उम्मीदवार उतारने का सिलसिला बनाये रखा था। जहां तक इंडिया गठबन्धन का हिस्सा बनने के पहले की बात थी, तब तक तो ठीक था क्योंकि यह हर पार्टी का अधिकार है कि वह चाहे जहां से अपने प्रत्याशी उतारे व कहीं से चुनाव लड़े। देश का शायद ही कोई ऐसा महत्वपूर्ण राज्य होगा जहां से उसने पिछले दस वर्षों में अपने उम्मीदवार खड़े न किये हों। यह तो सही है कि इसके चलते उसने दिल्ली के बाहर पंजाब में अपनी सरकार बनाई है तथा उसे इसका श्रेय जाता है कि कांग्रेस व भाजपा के अतिरिक्त वही ऐसा दल है जिसकी दो राज्यों में सरकारें हैं। जहां तक इंडिया गठबन्धन में शामिल होने के बाद की बात है, दिल्ली विधानसभा चुनाव का ऐलान होते ही उसने तत्काल अपने उम्मीदवारों की घोषणा कर दी- सहयोगी दलों से बात किये या तालमेल की गुंजाइशों पर विचार किये बगैर ही। इंडिया गठबन्धन का सबसे बड़ा अंतर्विरोध यह है कि अनेक राज्यों में कांग्रेस जिन दलों के साथ मिलकर चुनाव लड़ती है, विधानसभा चुनावों में उनके सामने होती है। इस बाबत तर्क दिया जाता है कि गठबन्धन लोकसभा के लिये है, विधानसभाओं के लिये नहीं। कई मुद्दों को लेकर सहयोगी दल राज्यों में आमने-सामने होते हैं। ऐसी स्थिति में जब वे लोकसभा का चुनाव मिलकर लड़ते हैं तो लोगों को शक होना स्वाभाविक है। इससे कांग्रेस व जिन दलों के साथ उनका राज्यों में मुकाबला होता है, दोनों के पक्के वोटरों को छोड़कर स्वतंत्र मत अक्सर भाजपा की ओर चले जाते हैं। राहुल गांधी की दो भारत जोड़ो यात्राओं के दौरान कई दलों को साथ देखा गया परन्तु चुनाव में वे अलग-अलग थे या जो दल इन यात्राओं के पहले हुए विधानसभा चुनावों में कांग्रेस के खिलाफ थे, वे इसमें शामिल हुए और अंततरू इंडिया के गठबन्धन का हिस्सा बने। पश्चिम बंगाल में कांग्रेस का सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस पार्टी के साथ गठबन्धन नहीं हो सका क्योंकि ममता बनर्जी तैयार नहीं हुईं। ऐसे ही, इंडिया में शामिल पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी ने राज्य में मिलकर नहीं वरन अलग चुनाव लड़ा। उसने ऐसा यहां नेशनल कांफ्रेंस के साथ स्थानीय मुद्दों पर अपने मतभेदों एवं मुकाबले के कारण किया जबकि एनसी भी इंडिया में शरीक है। आप ने पंजाब में कांग्रेस को हराकर सत्ता पाई है, जबकि उसके बाद आप इंडिया में शामिल हो गयी। यह भी पाया गया कि अनेक स्थानों पर आप के चुनाव लड़ने से अंततरू भाजपा को ही फायदा हुआ जिसके कारण उसे भाजपा की बी टीमश् तक कहा जाता है। हालांकि कई राज्यों में कांग्रेस व सहयोगियों के सम्बन्ध मजबूत बने हुए हैं। तमिलनाडु (द्रविड मुनेत्र कषगम), महाराष्ट्र (उद्धव ठाकरे की शिवसेना व शरद पवार की राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी), झारखंड (झारखंड मुक्ति मोर्चा), बिहार (राष्ट्रीय जनता दल) और कमोबेश उत्तर प्रदेश (समाजवादी पार्टी) के बारे में ऐसा कहा जा सकता है। इसमें भी कई स्थानों पर कोई न कोई घालमेल देखने को मिल ही जायेगा। अब दिल्ली के चुनाव में समाजवादी पार्टी ने आप को समर्थन देकर खुद को कांग्रेस के खिलाफ खड़ा कर दिया है। यह विभाजन दिल्ली विधानसभा के चुनाव में बढ़ता नजर आ रहा है। पहले ही कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं पार्टी के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष अजय माकन ने कुछ अरसा पहले केजरीवाल को राष्ट्रद्रोही कहकर आग सुलगा दी थी, जो सोमवार की रात को सीलमपुर में हुई प्रचार रैली में दावानल बनती दिख रही है। राहुल गांधी ने यह कहकर भाजपा व आप को एक ही तराजू पर बिठा दिया कि सामाजिक न्याय न प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी दिला सकते हैं और न ही केजरीवाल। इसके पहले नयी दिल्ली के प्रत्याशी, पूर्व सांसद तथा दिल्ली की पूर्व सीएम दिवंगत शीला दीक्षित के पुत्र संदीप दीक्षित ने यह कहकर केजरीवाल पर निशाना साधा कि यदि जनता को दिल्ली का मुख्यमंत्री मुस्कुराने वाला चाहिये तो वे कांग्रेस को वोट करें और रोता हुआ चाहिये तो आप के पास जायें! इसी सीट पर केजरीवाल हैं और भाजपा के प्रवेश वर्मा। संदीप दीक्षित ने एक समाचार एजेंसी को दिये साक्षात्कार में कहा कि शपूरी दिल्ली जान गयी है कि केजरीवाल सबसे बड़ा भ्रष्टाचारी है।श् उन्होंने केजरीवाल के शराब घोटाले में जेल जाने तथा उनके 32 करोड़ रुपये के कथित शीशमहल का जिक्र किया। एक्स पर एक पोस्ट डालकर भी केजरीवाल को खूब खरी-खोटी सुनाई है। उन्होंने केजरीवाल के देश बचाने के दावे पर तंज कसते हुए कहा कि जब शीलाजी के बारे में 1000 झूठ फैला रहे थे, सोनिया गांधी को गिरफ्तार करने की धमकी दे रहे थे, अन्ना हजारे के साथ लोकपाल के नाम पर लोगों को बेवकूफ बना रहे थे तब क्या वे (केजरीवाल) देश बचा रहे थे? साफ है कि यह दरार बढ़ेगी जिसका असर गठबन्धन पर पड़ सकता है।

अब क्या चुनाव ही खतरे में है?

राजेंद्र शर्मा

हैरानी की बात नहीं है कि दिल्ली चुनाव के सिलसिले में कम से कम एक बात पर सभी सहमत होंगे। वह यह कि भाजपा, इस चुनाव को जीतने के लिए सचमुच कोई कसर नहीं छोड़ने वाली है। मोदी-शाह की भाजपा के संबंध में यह कथन एक तरह से रूढ़ हो चुका है। अक्सर इससे अर्थ यह लगाया जाता है कि वर्तमान सत्ताधारी पार्टी हरेक चुनाव, छोटे से छोटा चुनाव भी, अपनी पूरी ताकत झोंक कर लड़ती है। इसे मोदी-शाह की भाजपा की एक महत्वपूर्ण विशेषता ही माना जाने लगा है, जो उसे अपने राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों पर जबर्दस्त बढ़त दिला देती है। इस सिलसिले में, जाहिर है कि उसके घनघोर साधनों तथा मुख्यधारा के मीडिया पर लगभग पूर्ण नियंत्रण की मदद से, इस कोई कसर नहीं छोड़ने के हिस्से के तौर पर कई ऐसी चीजों को सामान्य बनाकर स्वीकार्य बना दिया जाता है, जिन पर मोदी-पूर्व भारत में किसी न किसी हद तक सवाल जरूर उठते थे। इनमें एक है चुनाव में संसाधनों का इस तरह झोंका जाना, जिसके सामने चुनाव कानून के अंतर्गत देश में लगी चुनाव खर्च की सीमाएं और उससे संबंधित चुनाव आयोग की सारी कसरतें, एक मजाक ही नजर आने लगी हैं बल्कि मजाक कहलाने भी लगी हैं। चुनावी बांड की व्यवस्था ने, जिसे अब सुप्रीम कोर्ट ने अवैध करार देकर बंद करा दिया है, चुनावी चंदे के प्रवाह को पूरी तरह से इकतरफा सत्ताधारी पार्टी के पक्ष में मोड़ने के जरिए, इस मजाक को और बहुत ऊपर उठा दिया। अब शायद ही कोई इसकी याद दिलाने की जेहमत उठाता होगा कि खर्च की इन सीमाओं का मकसद, चुनाव में धनबल के खेल पर अंकुश लगाना तो था ही, चुनाव के लिए मुख्य प्रतिद्वंद्वियों के लिए एक हद तक बराबरी का मैदान मुहैया कराना भी था। एक और चीज जिसे नये-नये चाणक्यों को अधिष्ठित करने के जरिए सामान्य और इस तरह स्वीकार्य बना दिया गया है, चुनाव का राजनीति और विचारधारा से ऊपर उठा दिया जाना है, जहां जीत के लिए कोई भी पैंतरा, कोई भी तिकड़म जायज है। चुनाव से ऐन पहले दल-बदल से लेकर, निहायत नंगई से जातिवादी गोटियां बैठाए जाने तक, सभी कुछ इसमें आ जाता है। कहने की जरूरत नहीं होनी चाहिए, हालांकि इसकी याद दिलाने की आज बहुत जरूरत है कि इस सब को सामान्य बनाए जाने, जनता की इच्छा की अभिव्यक्ति के रूप में हमारे चुनाव के जनतांत्रिक सार को, पहले ही काफी खोखला कर दिया था। बहरहाल, मोदी-शाह की भाजपा इतने पर भी नहीं रुकी है। चुनाव आयोग को अपनी मुट्ठी में करने के बाद, पिछले अनेक वर्षों में उसने चुनावी नियम-कायदों के हिसाब से जो कुछ अवैध था, उसका भी सहारा लेने का सामान्य बनाना शुरू कर दिया। बेशक, इसकी शुरूआत अपेक्षाकृत छोटी चीजों से हुई। जैसे चरणवार चुनाव में चुनाव प्रचार की खामोशी के दिनों में, संबंधित क्षेत्र के ऐन बगल के क्षेत्र में जाकर, प्रचार करना और उसका मीडिया के जरिए, खामोशी के इलाकों समेत हर जगह प्रचार करानाय मतदान करने के लिए जाने को रैली में बदल देनाय मतदान केंद्र के निषेध के दायरे में चुनाव चिन्ह का प्रदर्शन करना आदि, आदि। यह सब धीरे-धीरे चुनावी विधि-निषेधों में बढ़ती सुरंग बनाए जाने का मामला था। बहरहाल, इस तरह चुनावी पाबंदियों को भीतर से पर्याप्त रूप से खोखला करने के बाद, 2017 के उत्तर प्रदेश के चुनाव से कब्रिस्तान-श्मशान, दीवाली-रमजान करने के सांप्रदायिक इशारों के जरिए, चुनाव में धार्मिक अपील तथा साप्रंदायिकता का सहारा लेने पर लगी कानूनी रोक को लांघने की ओर तेजी से कदम बढ़ाए गए। इसके साथ ही सर्जिकल स्ट्राइक के चुनावी इस्तेमाल के जरिए, चुनावी कानूनों के उल्लंघन का एक और मोर्चा ही खोल दिया गया। इसके बाद, 2019 के आम चुनाव में तो, चुनाव प्रचार में सेना तथा उसकी कार्रवाइयों के इस्तेमाल पर लगी पाबंदियों की सरासर धज्जियां ही उड़ायी गयीं।

कागजों में लिखी तमाम पाबंदियों के बावजूद, 2019 का पूरा का पूरा चुनाव, पुलवामा-बालाकोट की पिच पर ही लड़ा गया और जोरदार तरीके से जीता भी गया। इस दौरान, शीर्ष स्तर पर चुनाव आयोग को पूरी तरह से सत्ता पक्ष के साथ किया जा चुका था और अशोक लवासा रूप में आयोग में असहमति की इकलौती आवाज को बाहर किया जा चुका था। इसी यात्रा को आगे बढ़ाते हुए, 2024 के आम चुनाव में सत्ताधारी पार्टी ने विपक्ष के खिलाफ सांप्रदायिक दुहाई को अपना मुख्य हथियार बना लिया। और यह सिलसिला, पिछले ही महीने हुए महाराष्ट्र तथा झारखंड के चुनाव तक भी जारी था। इसके लिए मैदान तैयार किया गया था, चुनाव से ऐन पहले, चुनाव आयोग में दो सत्तापक्ष के लिए मनमाफिक सदस्यों की भर्ती के जरिए। इसी तरह की भर्ती सुनिश्चित करने के लिए, सत्ताधारी पार्टी ने संसद में अपने बहुमत का इस्तेमाल कर, चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति के संबंध में एक नया कानून सिर्फ इसलिए बनाया था, ताकि चुनाव आयोग की नियुक्तियों में निष्पक्षता लाने के पक्ष में चुनाव आयोग के हस्तक्षेप के बाद, तीन सदस्यीय नियुक्ति समिति में प्रधानमंत्री के साथ, विपक्ष के नेता तथा सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश को रखे जाने की जो व्यवस्था बनी थी, उसे फिर से सरकार के पक्ष में झुकाया जा सके। इस कमेटी में मुख्य न्यायाधीश को हटाकर, प्रधानमंत्री के अलावा, उनके द्वारा नामजद उनके ही एक मंत्री को शामिल कर लिया गया था। हैरानी की बात नहीं है कि उसके बाद से चुनाव आयोग ने खुद प्रधानमंत्री के स्तर तक से खुल्लमखुल्ला धर्म की दुहाइयों तथा सांप्रदायिक अपीलों का सहारा लिए जाने पर चूं तक नहीं की। जाहिर है कि इस सब ने जनता की जानकारीपूर्ण इच्छा की अभिव्यक्ति के रूप में चुनाव के रहे-सहे सार को भी नष्ट कर दिया है। यह कहना गलत नहीं होगा कि इस मुकाम पर पहुंचकर चुनाव, जनतंत्र का खोल भर रह जाता है, जो भीतर से खोखला है। लेकिन, चुनाव जीतने के लिए कुछ भी करने की मोदी-शाह की भाजपा की तत्परता, जैसे अब जनतंत्र के इस खोल को भी नष्ट करने की ओर बढ़ रही है। चुनाव में धांधली की आम शिकायतों और ईवीएम के जरिए गड़बड़ी की आम शिकायतों को, उनमें काफी वजन होने के बावजूद, बहस के लिए यहां हम अगर छोड़ भी दें तो भी, चुनाव मात्र पर दुतरफा हमले की शिकायतों से उठे गंभीर सवालों को, जनतंत्र की परवाह करने वाला कोई भी व्यक्ति अनदेखा नहीं कर सकता है।

मेष:- महत्वाकांक्षाएं मन पर प्रभावी होंगी। घरेलू कायरें में अत्याधिक व्यय का योग है। कार्यक्षेत्र में व्यस्तता बढ़ेगी। परिवार में कोई सुखद स्थिति प्रसन्नता लाएगी। जीवन साथी के स्वास्य के प्रति सतर्कता बरतें।
वृष:- परिश्रम का समुचित लाभ प्राप्त होगा। पारिवारिक वातावरण सुखद व उत्साहपूर्ण होगा। महत्वपूर्ण योजनाओं के क्रियान्वयन हेतु प्रयत्न तीव्र होगा। आर्थिक क्षेत्र में लाभ के आसार हैं।
मिथुन:- मन सुंदर कल्पनाओं से प्रभावित रहेगा। नये संबंधों के प्रति निकटता बढ़ेगी। उपस्थित साधनों में संतुष्ट व तृप्त होने का प्रयत्न करें। रोजगार में लाभकारी स्थिति रहेगी। आलस्य का त्याग करें।
कक:- विभागीय परिवर्तनों से कुछ दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। अपने अंदर धैर्य व वाणी में मधुरता लायें। कुछ नई अभिलाषाएं मन में जागृत होंगी। प्रियजनों का सानिध्य प्राप्त होगा।
सिंह:- राजनीतिक क्षेत्र के लोगों के लिए समय अनुकूल रहेगा। अच्छे कायरे के लिए प्रशंसनीय होंगे। शासन-सत्ता से लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेने में मन दुविधाग्रस्त होगा।
कन्या:- भावनात्मक समस्याओं पर संबंधों में खुलकर बात करें। कुछ नये उत्साह व कार्य क्षमता की अनुभूति करेंगे। महत्वपूर्ण कायरें को कल पर न टालें। परिवार में किसी मेहमान के आगमन से व्यय संभव।
तुला:- निकट संबंधों में शंकाओं को न हावी होने दें। भौतिक आकांक्षाओं की पूर्ति होने के आसार बनेंगे। नौकरी का वातावरण सुखद होगा। संबंधों में प्रगाढ़ता बढ़ेगी। जरूरी कायरे को समय से पूर्ण करें।
वृश्चिक:- अवरोधित कार्य हल होंगे। योजनाओं के फलीभूत होने से मन प्रसन्न होगा। विद्यार्थियों के लिए ग्रहों की अनुकूलता लाभप्रद होगी। जीवन साथी के साथ मधुरता कायम रखें।
धनु:- संबंधों में कटु वचनों का प्रयोग न करें। माता के स्वास्थ के प्रति सचेत रहें। अच्छे कायरे द्वारा प्रशंसा के पात्र बनेंगे। राजनीति से जुड़े लोगों को ग्रहों का सहयोग प्राप्त होगा। परिवार में खुशहाल वातावरण रहेगा।
मकर:- बीती बातों को भूलने की कोशिश करें। रोजगार में कुछ अच्छे अवसर बनेंगे। भौतिक इच्छाएं बलवती होंगी। अभिभावकों के भावनात्मक सहयोग से उत्साह बढ़ेगा। आकांक्षाओं की पूर्ति होगी।
कुंभ:- नकारात्मक चिंताओ को त्यागें। महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां अपनी पूर्ति हेतु मन पर दबाव बनाएंगी। आवेश में किये गये निर्णय से कष्ट संभव। घरेलू जरूरी कार्य समय से पूर्ण करें।
मीन:- किसी नये कार्य की ओर आपका रुझान बढ़ेगा। किसी महत्वपूर्ण फैसले के लिए मन केंद्रित होगा। नवीन योजनाओं द्वारा प्रगति के आसार बनेंगे। नौकरी का वातावरण सुखद होगा।

कनाडा और ग्रीनलैंड को अमेरिका में शामिल करने की बात महज इच्छा नहीं

नन्तू बनर्जी

ऐसा लगता है कि अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की कनाडा और ग्रीनलैंड को अमेरिका में शामिल करने और मैक्सिको खाड़ी का नाम बदलने की बात महज उनकी सामान्य इच्छा नहीं है बल्कि इसके पीछे कोई राज की बात है। कनाडा पर अमेरिका का कब्जा तो ब्रिटिश सम्राट की भागीदारी वाली दोनों देशों के बीच एक संधि या कनाडा के नागरिकों द्वारा अमेरिका में शामिल होने के पक्ष में जनमत संग्रह या बल प्रयोग के माध्यम से ही संभव है। कनाडा की अर्थव्यवस्था संयुक्त राज्य अमेरिका पर अत्यधिक निर्भर है। औपनिवेशिक युग के बाद भी देशों पर जबरन कब्जा करना कोई नई बात नहीं है। अमेरिका, 1867 के ब्रिटिश उत्तरी अमेरिका अधिनियम के तहत इसके निर्माण के बाद से ही कनाडा के विशाल क्षेत्र को हड़पने में रुचि रखता है। कनाडा एक द्विधार्मिक देश है। कानूनी अवधारणाएं अंग्रेजी और फ्रेंच दोनों में व्यक्त की जाती हैं। ब्रिटिश सम्राट, किंग चार्ल्स - तृतीय, कनाडा के संवैधानिक प्रमुख हैं। यद्यपि वह देश पर शासन नहीं करते हैं, ब्रिटिश राजा कनाडा की सरकार और पहचान का एक मूलभूत हिस्सा हैं। हालांकि, अमेरिका ने अभी तक 9.98 मिलियन वर्ग किलोमीटर से अधिक के भौगोलिक क्षेत्र के हिसाब से दुनिया के दूसरे सबसे बड़े देश कनाडा पर कब्जा करने का गंभीर प्रयास नहीं किया है। कनाडा पर अमेरिका का कब्जा इसे रूस से आगे दुनिया का सबसे बड़ा देश बना देगा, जिसका कुल क्षेत्रफल 17,098,242 वर्ग किलोमीटर है। अमेरिका का क्षेत्रीय विस्तार कोई नई बात नहीं है। यह अमेरिकी संविधान द्वारा प्रदान किया गया है। ट्रम्प इसे जानते हैं। ट्रम्प के सुझाव पर अमेरिका में कोई गंभीर राजनीतिक बहस नहीं है कि कनाडा को अपने में मिला लिया जाये और डेनमार्क के साथ संधि के माध्यम से ग्रीनलैंड को हासिल कर लिया जाये। निरंतर क्षेत्रीय विस्तार और अधिग्रहण अमेरिका के भू-राजनीतिक इतिहास का एक हिस्सा है। विश्व इतिहासकार जानते हैं कि अमेरिका ने कैलिफोर्निया, नेवादा, यूटा, न्यू मैक्सिको, एरिजोना, कोलोराडो, ओक्लाहोमा, कंसास और व्योमिंग के वर्तमान राज्यों को कैसे अपने में मिला लिया। कनाडा और ग्रीनलैंड अगले निशाने हो सकते हैं। ऐसा करने के लिए अमेरिका में एक संवैधानिक वास्तुकला मौजूद है। अमेरिका के लिए अधिग्रहण या अधीनता के माध्यम से क्षेत्र हासिल करने की संभावना और मिसाल दोनों हैं। यहां तक कि कनाडा के जबरन विलय का किसी अन्य शक्ति द्वारा सैन्य रूप से विरोध किये जाने की संभावना बहुत कम है। अतीत में, अमेरिका, रूस, चीन, भारत, यूके, फ्रांस और इजरायल सहित कई सैन्य रूप से मजबूत देशों ने कई क्षेत्रों पर जबरन कब्जा किया या उन्हें अपने साथ बनाये रखा तथा इस क्रम में उन्हें किसी तीसरे पक्ष के बहुत कम विरोध का सामना करना पड़ा। 1950 में तिब्बत पर चीन का आक्रमण सभी विदेशी क्षेत्रीय विलयों में सबसे शांत था। तिब्बत पर चीनी सैन्य कब्जे की खबर, जिसे शदुनिया की छतश् के रूप में जाना जाता है, इतनी धीमी गति से फैली कि 1952 तक अधिकांश तिब्बती इसके बारे में अनभिज्ञ थे। चीन ने झिंजियांग, हैनान और झोउशान सहित कई क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया है। तिब्बत चीन के कुल भूभाग का लगभग आठवां हिस्सा है। तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र (टीएआर) झिंजियांग के बाद क्षेत्रफल के हिसाब से चीन का दूसरा सबसे बड़ा प्रांत-स्तरीय विभाजन है। गैर-अनुरूपतावादी कम्युनिस्ट चीन ने झिंजियांग के इस्लामिक राज्य और तिब्बत के बौद्ध क्षेत्र पर कब्जा कर लिया और रूस और कनाडा के बाद कुल भूमि क्षेत्र के हिसाब से दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा देश बन गया। चीन, जो और अधिक चाहता है, का भारत, जापान, वियतनाम, भूटान और फिलीपींस सहित कई देशों के साथ क्षेत्रीय विवाद है। यह ताइवान और दक्षिण चीन सागर के क्षेत्र पर दावा करता है। चीन अक्साई-चीन पर शासन करता है, जिसे भारतीय क्षेत्र माना जाता है। कोई यह कह सकता है कि भारत ने खुद ही हैदराबाद, गोवा, दमन और दीव और सिक्किम पर कब्जा कर लिया। ब्रिटिश शासन से अपनी स्वतंत्रता के समय भारत के भीतर सभी राज्य स्वतंत्र क्षेत्र थे। भारत ने 1961 में गोवा पर कब्जा करने के बाद उसे पुर्तगाली नियंत्रण से अलग कर लिया। इंडोनेशिया ने 1963 में पश्चिमी न्यू गिनी पर कब्जा कर लिया। उत्तरी वियतनाम ने अमेरिकी सशस्त्र बलों के साथ लंबे युद्ध के बाद दक्षिण वियतनाम पर कब्जा कर लिया। इजराइल ने 1967 में पश्चिमी गोलनहाइट्स पर कब्जा कर लिया। उत्तरी साइप्रस 1974 से तुर्की के कब्जे में है। ब्रिटेन द्वारा नियंत्रित 14 विदेशी क्षेत्रों में से ये हैंरू एंगुइलाय बरमूडाय ब्रिटिश अंटार्कटिक क्षेत्र (बीएटी)य ब्रिटिश हिंद महासागर क्षेत्र (बीआईओटी)य ब्रिटिश वर्जिन द्वीपय केमैन द्वीपय फॉकलैंड द्वीपय जिब्राल्टरय मोंटसेराटय पिटकेर्न, हेंडरसन, ड्यूसी और ओनो द्वीपय सेंट हेलेना, असेंशन और ट्रिस्टनदाकुन्हाय और दक्षिण जॉर्जिया। विदेशी फ्रांस में यूरोप के बाहर 13 विदेशी क्षेत्र शामिल हैं। रूस खार्किव और मायकोलाइव के डोनेट्स्क, खेरसॉन, लुहान्स्क और जापोरिज्जिया ओब्लास्ट के कुछ हिस्सों को नियंत्रित करता है। यूक्रेन कुर्स्क ओब्लास्ट के कुछ हिस्सों को नियंत्रित करता है। इस प्रकार, ट्रम्प द्वारा कनाडा और ग्रीनलैंड को अधिग्रहित करने के विचार का खुलेआम प्रचार करना कोई नयी या असामान्य बात नहीं लगती। इससे पहले, कनाडा ब्रिटिश कब्जे में था। ग्रीनलैंड डेनमार्क साम्राज्य का एक स्वायत्त क्षेत्र है। कनाडा में अमेरिकी हित के विपरीत, अमेरिकी सरकार लंबे समय से ग्रीनलैंड को अपने अधीन करने की कोशिश कर रही है। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, अमेरिका ने सैन्य रूप से कब्जा करने के लिए अपने मोनरो सिद्धांत का इस्तेमाल किया था। डेनमार्क के जर्मन सेना के सामने आत्मसमर्पण करने के बाद संभावित हिटलरी हमले से खुद को बचाने के लिए ग्रीनलैंड को 1951 में डेनमार्क सरकार के साथ एक संधि ने अमेरिका को ग्रीनलैंड की रक्षा पर महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी।

चोरी के ई-रिक्शा व गांजा के साथ तीन गिरफ्तार

फतेहपुर, (संवाददाता)। राधानगर थाना पुलिस ने ई-रिक्शा चोरी की घटना का अनावरण करते हुए चोरी के ई-रिक्शा व गांजा के साथ तीन शातिरों को गिरफ्तार कर लिया। जिनके खिलाफ सुसंगत धाराओं में कार्रवाई कर न्यायालय भेज दिया। एसपी धवल जायसवाल के निर्देशन में अपराधियों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत राधानगर थाना पुलिस ने मुखबिर सूचना पर थाना स्थानीय पर पंजीकृत मु0अ0सं0 04/2025 धारा 303(2) बीएनएस का सफल अनारण करते हुए घटना में सम्मिलित विवेक मिश्रा पुत्र स्व0 राम अवतार मिश्रा नि0 18/18 सिंधी का भट्ठा पटेलनगर थाना कोतवाली, दीपक पुत्र पितांबर निवासी पतरिया थाना हुसैनगंज व करन कुमार पुत्र विनोद कुमार निवासी 50 नंबर पुल के नीचे जयरामनगर थाना राधानगर को चोरी के ई रिक्शा नं0-यूपी-71बीटी/9242 व एक किलो 200 ग्राम गांजा के साथ गिरफ्तार किया। गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार मुकदमा उपरोक्त में अपराध धारा 317 (2) बीएनएस की बढोत्तरी व मु0अ0सं0-05/2025 धारा 8/20 एनडीपीएस एक्ट पंजीकृत कर गिरफ्तार अभियुक्तगण को न्यायालय रवाना किया। गिरफ्तारी करने वाली पुलिस टीम में जयरामनगर चौकी प्रभारी अजित सिंह, कांस्टेबल मंजित कुमार, आकाश पाल, विनोद कुमार शामिल रहे।

प्रतिबंधित चाइनीज मांझे का इस्तेमाल करने वालों पर लग सकती है गम्भीर धाराएं

नरायनपुर,मिर्जापुर। जनवरी का महीना आते ही नवयुवकों को खलबली मचाने लगती है। उनके हाथों में खुजली सी होने लगती है। जबतक पतंग न उड़ा ले हाथ की खुजली खत्म नहीं होती। पर उन्हें नहीं पता कि उनकी खुजली किसी की जान भी ले सकता है। आकाश में सैकड़ों रंगबिरंगे पतंग उड़ते हुए दिखाई देने लगते हैं। पतंग उड़ाने में बच्चों को जितना मजा मिलता है उतना ही उनके अभिभावकों सजा भी भुगतना पड़ता है। शाहजहांपुर के युवा पुलिस का जवान शाहरुख़ खान का चाइनीज मांझे से हुए दर्दनाक मौत के बारे में सभी ने पढ़ा और सुन ही होगा। इस तरह की घटनाएं रोजाना कहीं न कहीं हो रहीं। इसी तरह की एक घटना नरायनपुर पुलिस चौकी क्षेत्र के एक सत्रह वर्षीय लड़के के साथ हुआ, जब वह शनिवार की शाम साढ़े चार बजे छतपर खड़ा था। पतंग कटकर जा रहा था, पतंग का मंझा लड़के के हाथ में फंस जाने से लड़के के बाएं हाथ का अंगूठा कट गया और तेजी से खून बाहर निकलने लगा। उसके अभिभावक तत्काल उसे ट्रामा सेंटर बी एच यू के आपातकालीन विभाग ले गए, जहां पर तत्काल डॉक्टरों और उनकी टीम ने लग कर उसका इलाज किया। लड़के के अंगूठे की नस कट जाने की वजह से अंगूठा काम करना बंद कर दिया, जिसकी वजह से प्लास्टिक सर्जरी विभाग के सर्जन ने अंगूठा का ऑपरेशन किया। वहीं पर जूनियर डॉक्टरों ने बताया कि चाइनीज मांझे की शिकायत पर चाइनीज मांझे प्रयोग करने वाले पतंगबाजों के अभिभावक पर गंभीर धारा दफा 302 और 307 लग सकता है, इसलिए चाइनीज मांझे का प्रयोग करने से बचें। इन बातों का वर्णन करने का मकसद यही है कि अभिभावक स्वयं जागरूक हों और अपने बच्चों को भी जागरूक करें, बच्चों को चाइनीज मंझा का प्रयोग करने से रोके और इससे होने वाले नुकसान और गंभीर परिणामों के बारे में अवश्य बताएं ताकि बड़ी अप्रिय घटना न हो सके। गर नहीं माने तो गंभीर परिणाम भुगतने के लिए तैयार भी रहे।

आदेश नहीं माना तो सड़क पर चलाना दूर घर से भी नहीं निकलेगी बाइक

बरेली। अगर आप भी शहर की सड़कों पर बिना हेलमेट के बाइक दौड़ाने के आदी हैं, तो सावधान ! क्यों कि बरेली के डीएम ने जो नया आदेश जारी किया है, उसके लागू होने के बाद आप बाइक को सड़क पर चलाना तो दूर अपने घर की गली से बाहर नहीं निकाल पाएंगे। सड़क हादसों में कमी लाने के मकसद से बरेली प्रशासन ने %नो हेलमेट-नो फ्यूल% नीति को सख्ती से लागू करने का निर्देश दिया है। इसके तहत अब पेट्रोल पंप पर केवल उन्हीं वाहन चालकों को पेट्रोल मिलेगा, जिन्होंने हेलमेट पहन रखा हो। पीछे बैठे व्यक्ति के लिए भी हेलमेट अनिवार्य किया गया है। जाहिर है बिना पेट्रोल के तो आप बाइक चला पाने से रहे। लिहाजा जितना जल्दी हो सके हेलमेट पहनने की आदत डाल लें।जिलाधिकारी रविंद्र कुमार ने सभी पेट्रोल पंप संचालकों को आदेश दिया है कि 26 जनवरी से पहले अपने पंपों पर सीसीटीवी कैमरे और नो हेलमेट-नो फ्यूल के होर्डिंग्स लगाएं। नियम का उल्लंघन करने वालों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी।

बरेली सड़क हादसों में शीर्ष जिलों में शामिल

बरेली उत्तर प्रदेश के उन 20 जिलों में शामिल है, जहां सड़क हादसे सबसे अधिक होते हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, अधिकतर हादसे उन चालकों के साथ होते हैं जो हेलमेट नहीं पहनते। प्रशासन का यह कदम सड़क सुरक्षा को बढ़ावा देने और हादसों को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

क्या बोले वाहन चालक?

इस फैसले पर जनता की मिश्रित प्रतिक्रियाएं सामने आई हैं। कुछ वाहन चालकों ने इस कदम का स्वागत किया है, तो कुछ ने इसे असुविधाजनक बताया है। हालांकि, सड़क सुरक्षा विशेषज्ञ इसे एक सकारात्मक और प्रभावी निर्णय मानते हैं, जो हेलमेट पहनने की आदत को बढ़ावा देगा।

सड़क सुरक्षा को प्राथमिकता

प्रशासन की यह पहल सड़क हादसों को रोकने और जनजीवन की सुरक्षा सुनिश्चित करने का प्रयास है। नागरिकों से भी अपील की गई है कि वे नियमों का पालन करें और अपनी सुरक्षा को प्राथमिकता दें।

पीएम संग्रहालय में अभिलेख अधिकारी बने अनुरूद्ध

गांव का नाम रोशन करने वाले लाल के घर बधाई देने वालों का लगा तांता

फतेहपुर, (संवाददाता)। जनपद के खागा तहसील के आलमपुर गेरिया ग्राम निवासी अनुरुद्ध कुमार शुक्ला का चयन संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत राष्ट्रीय अभिलेखागार, प्रधानमंत्री संग्रहालय नई दिल्ली मे अभिलेख अधिकारी के पद पर हुआ है। अनुरुद्ध ने अपनी सफलता का श्रेय माता-पिता एवं गुरुजनों को दिया है। प्राथमिक शिक्षा प्राइमरी पाठशाला आलमपुर गेरिया से पूरी करने के पश्चात खागा तहसील के रक्षपालपुर स्थित चौधरी शिव सहाय इंटर कालेज से हाईस्कूल व इंटरमीडियट की परीक्षा उत्तीर्ण की। बचपन से होनहार छात्र अनुरुद्ध ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बीए व एमए इतिहास विषय से करने के बाद पीएचडी पूरी की। पढ़ाई व परीक्षा की तैयारी को लेकर इलाहाबाद में रह रहे अनुरुद्ध के पिता भगवती प्रसाद शुक्ला कृषक व माता सुधा शुक्ला गृहणी हैं। तीन भाइयों में दूसरे नंबर के अनुरुद्ध के बड़े भाई मनोहर शुक्ला पिता के साथ खेती बाड़ी में हाथ बंटाते है जबकि छोटे भाई रामानुज अभी बीएससी के छात्र है। एक शादीशुदा बहन रत्ना है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के आधुनिक इतिहास विभाग के प्रो. पीएस हरीश के मार्गदर्शन में पहचान की राजनीति विषय पर पीएचडी की उपाधि प्राप्त की है। अपने पहले ही प्रयास में संघ लोकसेवा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षा में अभिलेख अधिकारी बनने के बाद अनुरुद्ध की इच्छा संघ लोकसेवा आयोग द्वारा आयोजित सिविल सेवा में जाने की है। अनुरुद्ध की सफलता पर ग्रामवासियों मे जश्न का माहौल है।

बाइक की टक्कर से साइकिल सवार समेत तीन जख्मी

सरकारी एंबुलेंस ने घायलों को अस्पताल में कराया भर्ती

फतेहपुर, (संवाददाता)। थरियांव थाना क्षेत्र के कस्बे में स्थित एकारी मोड़ के पास बाइक व साइकिल की टक्कर से बाइक सवार चालक सहित तीन लोग घायल हो गए। घायल अवस्था में इलाज के लिए सरकारी एंबुलेंस से सभी को जिला अस्पताल में पहुंचाया गया। जानकारी के अनुसार थरियांव थाना क्षेत्र के एकारी गांव निवासी मोहनलाल पुत्र श्यामलाल व राजू बाइक में सवार होकर बाजार जा रहे थे। तभी एकारी मोड के पास जानवर जो बचाने के प्रयास में उनकी बाइक साइकिल से जा टकराई जिससे बाइक सवार समेत दो लोग गम्भीर रूप से घायल हो गए। सभी घायलो को सरकारी 108 एम्बुलेन्स के ईएमटी प्रशुनेंद्र व पायलेट वीरेंद्र ने जिला अस्पताल में सकुशल भर्ती कराया जहां डॉक्टर द्वारा उनका उपचार किया जा रहा है।

प्रगति फाउंडेशन के संस्थापक विकास अग्रहरि बिहार के दरभंगा में हुए सम्मानित

दुद्धी,सोनभद्र। बिहार के दरभंगा में आयोजित राष्ट्रीय रक्तदाता प्रतिनिधि सम्मान समारोह में दुद्धी के प्रगति फाउंडेशन के संस्थापक विकास कुमार अग्रहरि को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। यह कार्यक्रम मिथिला समर्पण संस्था द्वारा आयोजित किया गया था, जिसमें देश भर के लगभग 400 से अधिक रक्तदाता और समाजसेवी शामिल हुए थे। कार्यक्रम का आयोजन डॉक्टर मृदुल कुमार शुक्ला और दीपक महथा के नेतृत्व में किया गया। इस भव्य आयोजन में प्रगति फाउंडेशन के संस्थापक विकास कुमार अग्रहरि को उनकी नि:शुल्क व नि:स्वार्थ सेवाओं के लिए मेडल, अंगवस्त्र और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।विकास कुमार अग्रहरि, जो दुद्धी में सक्रिय रूप से रक्तदान के क्षेत्र में कार्यरत हैं। जो प्रगति फाउंडेशन के नाम से एक टीम का गठन किया है। यह टीम जरूरतमंद लोगों को समय पर रक्त उपलब्ध कराने में निरंतर योगदान दे रही है। उनकी इस पहल ने न केवल दुद्धी बल्कि अन्य क्षेत्र में कई जीवन बचाने का कार्य किया है। ऊक्त जानकारी मंगलवार को शाम 4 बजे मिली।

रेहान क्लब चुनार ने विक्ट्री क्लब को हराकर कप और 51 हजार रुपए पुरस्कार पर जमाया कब्जा

मिर्जापुर। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी तिरंगा क्लब द्वारा क्रिकेट प्रतियोगिता आयोजित किया गया था ।ग्राम सभा नुआंव के छिलहिया गांव के शंकर जी मंदिर के ग्राउंड में, क्रिकेट समापन समारोह के मुख्य अतिथि सिद्धनाथ सिंह भारतीय किसान यूनियन के प्रदेश उपाध्यक्ष तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में एस के कनौजिया समाज सेवी रहें।कार्यक्रम की अध्यक्षता राम ध्यान सिंह व सुरेश सिंह ने किया।खेल प्रतियोगिता के आयोजन कर्ताओं द्वारा आए अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया गया।इस क्रिकेट प्रतियोगिता में कुल 16 टीमों ने भाग लिया जिसमें फाइनल मैच विक्ट्री क्लब चुनार और रेहान क्लब चुनार के द्वारा खेला गया।

फाइनल मैच प्रारंभ होने से पहले टास कराया गया जिसमें टास विक्ट्री क्लब ने जीतकर फिल्डिंग करने का फैसला लिया ।वहीं बल्लेबाजी करते हुए रेहान क्लब चुनार ने 118 रन का लक्ष्य रखा जिसमें 6 विकेट पर 108 रन पर ही सिमट गई विक्ट्री क्लब चुनार ।वहीं कप और फाइनल मैच का 51 हजार का पुरस्कार पर कब्जा जमाया रेहान क्लब चुनार ने ।उप विजेता टीम को 25 हजार रुपए का पुरस्कार दिया गया तथा मैन ऑफ द सिरीज़ व हैट्रिक लगाने पर संतोष आटो पार्ट के तरफ़ से विशेष पुरस्कार दिया गया। हीरो रेंजर सायकिल, छक्के चौके की बौछार लगने पर दर्शकों द्वारा पुरस्कार भी दिया गया खिलाड़ियों को ।क्रिकेट प्रतियोगिता में विशेष योगदान रहा दिनेश सिंह कल्लू कोटेदार का ।इस दौरान अध्यक्ष मनोज सिंह तिवारी, सुशील सिंह, मनीष पाल, उपाध्यक्ष सुबोध सिंह, सुनील सिंह, अजित सिंह पटेल, रमेश पाल, अंकित पाल, रितेश सिंह, श्याम सुन्दर पाल, अनिल पाल, विकास यादव, गनेश सिंह, सर्वेश सिंह पटेल, सुभम मोदनवाल, अंपायर प्रशांत सिंह, सुबोध सिंह, दिनेश पाल, प्रेमनाथ पाल, कमलेश पाल, सुरेश पाल सहित अन्य मौजूद रहे।

विद्यालयों में समय परिवर्तन व अवकाश बढ़ाने को लेकर शिक्षक संघ ने सौंपा ज्ञापन

बस्ती। शिक्षक संघ के जनपदीय अध्यक्ष चंद्रिका सिंह के नेतृत्व में शिक्षको ने ठंड,गलन व बारिश के कारण मौसम में परिवर्तन को लेकर परिषदीय विद्यालयों में अवकाश बढ़ाने व समय परिवर्तन को लेकर जिलाधिकारी के आवास पर उनके प्रशासनिक अधिकारी को ज्ञापन सौंपा ।ज्ञापन सौंपने के बाद जिलाध्यक्ष ने बताया कि पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम केंद्र लखनऊ के उश्रप्रश उपप्रभाग दैनिक मौसम बुलेटिन के अनुसार जनपद व अगल बगल के जनपदों में ऑरेन्ज व यलो एलर्ट भी जारी किया गया है ।परिषद के विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चो के पास गर्म व ऊनी कपड़ों का अभाव रहता है,ग्रामीण अंचल में कोहरा व गलन अधिक रहता है ।जिससे बच्चो को पठन पाठन में अधिक समस्या और बीमार होने का भी भय रहता है। जिला उपाध्यक्ष प्रवीण श्रीवास्तव और शिवप्रकाश सिंह ने बताया कि वर्तमान में विद्यालयों का समय 9 बजे से ही है जिससे बच्चो को विद्यालय आने में भी कोहरे आदि से समस्या होगी ।विद्यालय समय 10ः00 बजे से किया जाना आवश्यक है ।ज्ञापन सौंपने वालो में ब्लॉक अध्यक्ष अखिलेश पाण्डेय, मोहम्मद अनीश मोहम्मद मुस्तकीम,अशोक यादव व अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

अपमान से बौखलाए नासिर ने सोनू का गला रेतकर शव बहा दिया नहर में

बरेली। बीती आठ जनवरी को बहेड़ी थाना क्षेत्र में चार दिन से लापता अकबराबाद गांव के रहने वाले सोनू का शव नहर से बरामद हुआ था। जिसकी हत्या धारदार हथियारों से की गई थी। अब इस मामले में पुलिस ने हत्या के मास्टरमाइंड नासिर समेत तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। मां और बीवी के अपमान का बदला लेने के लिए नासिर ने अपने दो साथियों के साथ मिलकर हत्या को अंजाम दिया था। दरअसल आठ जनवरी को ग्राम अकबराबाद के पास सकरस की ओर जाने वाली नहर से एक शव बरामद हुआ था। युवक के शरीर पर धारदार हथियार से कई वार किये गये थे और गला रेतकर हत्या की गई थी। शव की शिनाख्त ग्राम अकबराबाद निवासी 18 वर्षीय सोनू के रूप में हुई थी। मृतक के पिता धर्मपाल ने गांव के ही रहने वाले तीन नामजद आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई थी। मंगलवार को बहेड़ी पुलिस ने तीनों आरोपियों जीशान पुत्र छोटा खां, नासिर पुत्र शफी रजा खां, विशाल पुत्र राकेश पाल को गिरफ्तार कर लिया। तीनों आरोपियों ने सोनू की गला रेतकर हत्या के बाद शव को नहर में फेंकने की वारदात को कबूल किया। उनकी निशानदेही पर हत्या में इस्तेमाल तीन छुरियां भी बरामद की गईं। फिलहाल आरोपियों को कोर्ट में पेश कर जेल भेजा गया है।

सोनू के खास दोस्तों को भी अपने साथ मिलाया

नासिर ने सोनू को अंजाम तक पहुंचाने के लिए पूरी प्लानिंग की थी। उसने सोनू के गहरे दोस्त जीशान और विशाल को भी अपने साथ मिला लिया। जीशान और विशाल सोनू के साथ बैठकर शराब पीते थे। लिहाजा पहले जीशान और विशाल को भरोसे में लेकर सोनू की हत्या का प्लान बनाया। चार जनवरी को विशाल के जरिए शाम करीब सात बजे सोनू को घर से बुलवाया और नहर के पास खूब शराब पिलाई। सोनू के ज्यादा नशे में हो जाने पर तीनों ने छुरियों से सोनू पर कई वार किए। हत्या के बाद शव को बहती नहर में फेंक दिया।

अलाव लगाने से मना किया तो की थी गाली गलौज

पुलिस से ने जब मुख्य आरोपी नासिर से पूछताछ की तो उसने बताया कि करीब 20-25 दिन पहले सोनू उसके घर के सामने अलाव लगाकर आग ताप रहा था। अलाव लगाने से मना किया तो दो-तीन दिन बाद सोनू ने उसके घर आकर उसकी मां, पत्नी व मेरी बेटी के साथ गाली गलौज करते हुए उनका खूब अपमान किया। जिसके बाद उसने सोनू को ठिकाने लगाने की ठान ली थी।

अनियंत्रित बाइक सवार गिरकर घायल

फतेहपुर, (संवाददाता)। जाफरगंज थाना क्षेत्र के गढ़ी गांव के समीप अनियंत्रित बाइक सवार रोड पर गिरकर घायल हो गया। हादसे की जानकारी परिजनों को हुई तो तुरंत उसको इलाज के लिए नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र लेकर पहुंचे। जहां डॉक्टर ने प्राथमिक उपचार के बाद रेफर कर दिया। जानकारी के अनुसार थाना क्षेत्र के गढ़ी गांव निवासी अब्दुल हनीफ का 32 वर्षीय पुत्र अफ़ज़ल घर से बाइक पर सवार होकर किसी काम से निकला था। जैसे ही उसकी बाइक गांव के बाहर पहुंची तभी बाइक अनियंत्रित होकर रोड पर गिर गई। जिससे बाइक चालक अफ़ज़ल घायल हो गया। हादसे की जानकारी परिजनों को हुई तो तुरंत उसको इलाज के लिए बिंदकी सीएचसी लेकर पहुंचे। जहां डॉक्टर ने प्राथमिक उपचार के बाद सरकारी 108 एंबुलेंस से जिला अस्पताल के लिए रेफर कर दिया। वहीं जिला अस्पताल पहुंचते ही डॉक्टर उसका इलाज कर रहे हैं।

हल्द्वानी से बरेली आ रही कार खाई में पलटने से भाई-बहन की मौत और 4 घायल

बरेली। बरेली के हाफिजगंज थाना क्षेत्र में मंगलवार तड़के दर्दनाक सड़क हादसा हो गया।। हल्द्वानी से लौट रही कार अनियंत्रित होकर खाई में पलट गई, जिससे भाई-बहन की मौके पर ही मौत हो गई और परिवार के चार लोग घायल हो गए।

नींद की झपकी आने से हादसा

जानकारी के मुताबिक, हादसा कार चालक को नींद की झपकी आने के कारण हुआ। हादसा हाफिजगंज के सेंथल रोड पर कर्बला के निकट तड़के करीब चार बजे हुआ।

मृतक और घायल

हादसे में जान गंवाने वालों में गांव भंडसर निवासी मुन्ने 30 वर्ष और उनकी बहन मुस्कीन 40 वर्ष शामिल हैं। घायलों में चालक युनुस, मुन्ने के भाई मेहंदी हसन, बन्ने बख्श और उनकी पत्नी सीमा शामिल हैं।

बहन से मिलने गए थे हल्द्वानी

मुन्ने अपनी बड़ी बहन खुशनुमा से मिलने हल्द्वानी गए थे, जहां उन्होंने बच्चे को जन्म दिया था। लौटते समय मुस्कीन भी उनके साथ मायके आ रही थीं। सफर के दौरान कार अनियंत्रित होकर खाई में पलट गई।

पुलिस और स्थानीय सहायता

राहगीरों की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया। मृतकों के शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया है।

शोक में परिवार

हादसे की खबर सुनते ही मृतकों के परिवार में कोहराम मच गया। पूरे गांव में शोक का माहौल है।

तत्काल रैयती जमीन पर ओबी डंप बंद हो - चन्द्र देव महतो

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

धनबाद। बुधवार को सिंदरी विधायक चन्द्रदेव महतो बीसीसीएल के सीएमडी से मुलाक़ात कर सुरंगा और गोल्डन पहाड़ी में रैयत के रैयती जमीन पर ओबी डंप को रोकने और बंद किए गए पुराने सड़क को पुनः चालू करने का मांग किया, सीएमडी ने आश्वस्त कि जो मुख्य सड़क को बंद कर दिया गया उसको पुनः शुरू किया जाएगा और जो भी रैयती जमीन पर ओबी डंप की समस्या है उसका निदान अविलंब किया जाएगा, सिंदरी विधायक महतो ने कहा कि सुरंगा गोल्डन पहाड़ी समेत प्रभावित क्षेत्र में ओबी डंप एक बहुत बड़ी समस्या है जिसमें संवेदक के द्वारा लगातार रैयतों के खेतिहर जमीन समेत झारखण्ड सरकार के जमीन में बिना किसी अनुमति के ओबी डंप किया जा रहा है जिस समस्या को कई बार ग्रामीणों ने आंदोलन कर और लिखित रूप से दिया है लेकिन अभी तक किसी प्रकार का समाधान नहीं किया गया है , यदि अब इसका समाधान नहीं किया गया तो ग्रामीण बीसीसीएल के खिलाफ उग्र आंदोलन करने के लिए बाध्य होंगे ।

हर घर नल लगने के बाद भी दो साल से पानी का इंतजार कर रहे पुरैनी गांव के लोग

नरायनपुर, मिर्जापुर। जमालपुर विकास खंड अंतर्गत पुरैनी ग्राम सभा में विगत एक वर्ष पहले जल जीवन मिशन अंतर्गत बने नई पानी टंकी में लीकेज होने की जानकारी मिली। जल जीवन मिशन और हर घर नल योजना अंतर्गत गांव - गांव नल लगाया गया और नल कनेक्शन की संख्या के अनुसार पानी टंकी भी बनकर तैयार हो गया । पर घरों तक आज भी पानी नहीं पहुंचा। सारे नल सूखे पड़े हुए हैं और पानी का इंतजार कर रहे हैं। घर - घर नल कनेक्शन लगे दो वर्ष से भी ज्यादा का समय हो चुका है फिर भी अभी तक पुरैनी पानी टंकी से संबंधित किसी भी गांव में पानी की सप्लाई जारी नहीं हुआ। कभी - कभी जब अधिकारी गण का दौरा होता है तो किसी - किसी एरिया के लिए सप्लाई जारी कर दिया जाता है और जांच के बाद स्थिति ज्यों का त्यों हो जाता है। पानी अभी तक क्यों जारी नहीं हुआ जब इस की जानकारी किया गया तो एक बड़ी गंभीर समस्या सामने आई। कुछ लोगों ने नाम न बताने के शर्त पर बताया कि नई पानी टंकी बना तो जरूर है, पर सप्लाई शुरू होने से पहले ही टंकी में लीकेज पाया गया। इसी कारण पानी का बराबर सप्लाई दे पाना मुमकिन नहीं है। जबकि लोगों ने बताया कि दो ऑपरेटरों की नियुक्ति भी हो चुकी है। लेकिन उनको करने के लिए कुछ भी नहीं। आज भी सरकार का मिशन का लक्ष्य अधिकारियों और ठीकेदारों की उदासीनता से अधूरा पड़ा हुआ है। गांव के लोग गर्मी आते ही पानी के लिए दिक्कत उठाने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

आन्ध्र प्रदेश में काम करने गए धोरपा गांव निवासी युवक की करेन्ट लगने से हुई मौत

विंढमगंज,सोनभद्र। आंध्र प्रदेश के एक प्लांट में काम करने गए दुद्धी तहसील के विंढमगंज थाना क्षेत्र के धोरपा गांव निवासी 23 वर्षीय युवक संजय की मौत हो गई। विद्युत करंट की चपेट में आने से युवक की मौत का कारण बताया जा रहा है। यह दुखद घटना ऐसे समय में हुई जब वह मकर संक्रांति पर अपने घर आने की तैयारी कर रहा था और टिकट भी करा चुका था। परिजनों से मिली जानकारी के अनुसार संजय जो धोरपा गांव निवासी रंगलाल यादव का पुत्र था। पिछले 2-3 वर्षों से आंध्र प्रदेश में आ जा कर काम कर रहा था और अगस्त 2024 में अपने गांव से वहां काम करने गया था। 9 जनवरी को प्लांट के एक कर्मचारी ने युवक के परिजनों को फोन पर संजय के अस्पताल में भर्ती होने की सूचना दी। कुछ घंटों बाद ही उसकी मृत्यु की खबर मिली जिससे परिवार में कोहराम मच गया।

घटना की जानकारी मिलते ही संजय के पिता तुरंत आंध्र प्रदेश के लिए रवाना हुए, जहां उन्हें पता चला कि उनके बेटे की मौत करंट लगने से हुई है। युवक के असामयिक मृत्यु से पूरे गांव व परिवार में शोक की लहर है। ग्राम प्रधान खुशहाल यादव के अनुसार, ग्रामीणों ने प्लांट प्रबंधन से मुआवजे की मांग की है। उनका कहना है कि दुर्घटना के लिए प्लांट प्रबंधन जिम्मेदार है और पीड़ित परिवार को उचित आर्थिक सहायता मिलनी चाहिए। वही मंगलवार की दोपहर लगभग 12 बजे एंबुलेंस से मृतक संजय का पार्थिव शरीर उसके घर पहुँचते ही परिजनों में कोहराम मच गया।

फाइनल मैच में काशी विद्यापीठ बनारस को हराकर शिव विद्या मंदिर रमसापुर ने ट्राफी जीता

नसीराबाद, रायबरेली। विकास खण्ड छतोह क्षेत्र के बभनपुर गांव में शिवपती शिव दर्शन पांडेय सेवा समिति द्वारा आयोजित पंडित बाबा क्रिकेट प्रतियोगिता का समापन हुआ।फाइलन मैच काशी विद्यापीठ वाराणसी और शिव विद्या मंदिर रमसापुर के बीच खेला गया।जिसमे काशी विद्यापीठ बनारस को हराकर शिव विद्या मंदिर रमसापुर ट्राफी अपने नाम किया।प्रतोयोगिता में काशी विद्यापीठ बनारस के कप्तान मनजीत सिंह ने टास जीत कर पहले बल्लेबाजी का निर्णय लिया और 15 ओवर में सिर्फ 54 रन बनाकर ऑलआउट हो गई। वही लक्ष्य का पीछा करने उतरी शिव विद्या मंदिर रमसापुर की टीम ने आठ ओवर 3 गेंद में ही 2 विकेट खोकर 8 विकेट से मैच जीत ली।विजेता व उपविजेता टीम को मुख्य अतिथि शिवपती देवी शिवदर्शन पाण्डेय सेवा समिति के संस्थापक अखिलेश आर. पाण्डेय, कार्यक्रम के अध्यक्ष जिला पंचायत के पूर्व अध्यक्ष अवधेश सिंह और विशिष्ट अतिथि ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि बिशाल सिंह ने ट्राफी देकर सम्मानित किया। कमेन्ट्री राजेश कुमार सिंह एवं अखिलेश मिश्र ने किया। निर्णायक की भूमिका जे.पी.सिंह और राहुल सिंह ने तथा स्कोरर की भूमिका आलोक त्रिपाठी ने निभाई।मैन ऑफ द मैच मो वकार को दिया गया।मैन ऑफ द सीरीज नितिन को दिया गया। इस मौके पर राम नरेश पाण्डेय, राम विशाल पाण्डेय, सतीश कुमार पाण्डेय, भूपेन्द्र सिंह,मनोज द्विवेदी, धर्मेंद्र विक्रम सिंह, आदित्य नारायण पाण्डेय, राधे रमन अग्रहरि, सन्त शरण द्विवेदी, मनोज त्रिपाठी, अंजनी कुमार त्रिपाठी, अतुल सिंह,प्रदीप त्रिपाठी आदि मौजूद रहे।

काशीपुर रामनगर मार्ग पर धामी के पीले पंजे ने मजार को किया ध्वस्त

● भाजपा प्रत्याशी दीपक बाली ने मजार को हटाने की उठाई थी मांग

काशीपुर। प्रदेश में धामी सरकार द्वारा हटाए जा रहे अतिक्रमण अभियान के तहत आखिरकार काशीपुर रामनगर हाईवे पर बनी मजार को मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के पीले पंजे ने ध्वस्त कर दिया और प्रशासन ने खड़े होकर जेसीबी से इसे हटा दिया। उल्लेखनीय है कि काशीपुर के भाजपा मेयर प्रत्याशी दीपक बाली ने इसे हटाने के लिए आवाज उठाई थी। उत्तराखंड के नैनीताल जिले के पीरुमदारा इलाके में काशीपुर रामनगर हाइवे पर बनी,एक राइस मिल के बाहर बनायी गयी एक अवैध मजार को प्रशासन ने ध्वस्त कर दिया, यह मजार एनएच के चौड़ीकरण में बाधक हो रही थी जिस कारण दो हफ्ते पहले इसे हटाने के लिए नोटिस जारी किया गया था, लेकिन इसे नहीं हटाया गया जिस कारण नोटिस की अवधि पूरी होने पर डीएम नैनीताल के निर्देश पर इसे एन एच के अभियंताओं ने हटा दिया। मजार को हटाने की कारवाई के दौरान एन एच केअभियंता, एसडीएम रामनगर, तहसीलदार, कोतवाल रामनगर और भारी संख्या में पुलिस फोर्स तैनात रही । मजार के हटने से अब सड़क चौड़ीकरण में आ रही परेशानी खत्म हो जाएगी।

पुलिस ने 293 ग्राम स्मैक के साथ युवक को किया गिरफ्तार

काशीपुर। कुंडा थाना पुलिस ने 2-93 ग्राम स्मैक के साथ एक युवक को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के विरुद्ध एनडीपीएस एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज किया है। पुलिस अब उसका चालान कर कोर्ट में पेश करेगी। बीती रात एसआई अर्जुन सिंह, अपर उप निरीक्षक दीपक चौहान रात्रि गश्त कर रहे थे। इस दौरान ढेला नदी पुल से पहले नवनिर्मित कालोनी में एक संदिग्ध युवक दिखाई दिया। जिसको उन्होंने रोकने का प्रयास किया, तो वह डर गया। शक होने पर पुलिस टीम ने उसकी तलाशी ली, तो उसकी जेब से 2-93 ग्राम स्मैक बरामद हुई। पूछताछ के दौरान आरोपी ने अपना नाम उमेश कुमार पुत्र प्रेम सिंह निवासी सरस्वती शिशु मंदिर स्कूल के पास मोहल्ला किला काशीपुर बताया। इसके बाद पुलिस टीम ने उसको गिरफ्तार कर लिया। टीम की तहरीर के आधार पर कुंडा थाना पुलिस ने आरोपी के विरुद्ध एनडीपीएस एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज किया है। पुलिस अब उसका चालान कर कोर्ट में पेश करेगी।

मकर संक्रांति पर लोगों ने सरयू नदी में लगाई आस्था की डुबकी

बस्ती। कलवारी थाना क्षेत्र के सरयू नदी के माझा खुर्द घाट पर मकर संक्रान्ति पर्व के अवसर पर मंगलवार को सुबह से ही श्रद्धालुओं ने स्नान कर तिल गुड़ अन्न का दान किया।क्षेत्र के श्रद्धालुओं ने मोटर साइकिल व साइकिल से जाकर इस पर्व पर स्नान दान किया।और सरयू मां से प्रार्थना भी किया।थानाध्यक्ष कलवारी जनार्दन प्रसाद ने बताया कि सरयू नदी माझा खुर्द घाट पर श्रद्धालुओं के स्नान के समय सुरक्षा को लेकर पुलिस कर्मी व नाव की व्यवस्था रही। जिससे किसी को कोई असुविधा न हो सके।

कामायनी फाउंडेशन द्वारा शहर में विभिन्न स्थानों पर प्रसाद स्वरुप वितरित की गई खिचड़ी

महिला एवं बालिकाओं के उत्थान हेतु कृत संकल्पित है कामायनी फाउंडेशन

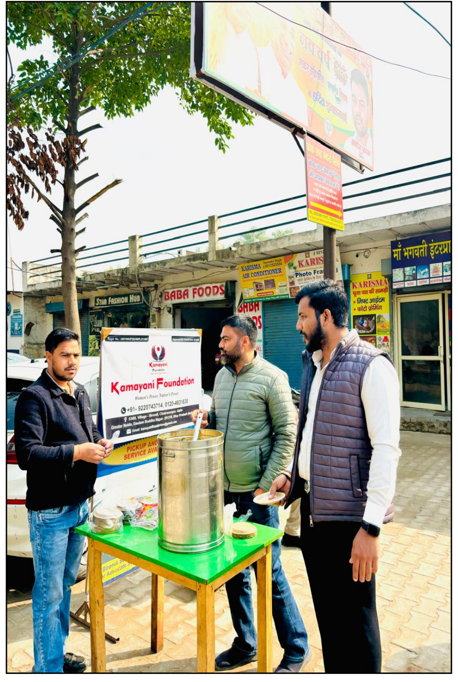

ग्रेटर नोएडा। मकर संक्रांति का पावन पर्व आज बड़े ही हर्षोउल्लास के साथ मनाया गया। मकर संक्रांति के पर्व को समाज सेवाओं से जुड़े हुए लोग गरीब एवं असहाय लोगों की मदद करके तथा दान पुण्य करके मनाते हैं।मकर संक्रांति के पावन पर्व के अवसर पर कामायनी फाउंडेशन द्वारा भी ग्रेटर नोएडा में अल्फा फर्स्ट, कमर्शियल बेल्ट, बिरोड़ी चक्रसेनपुर, डेल्टा फर्स्ट, सेक्टर मयू-टू तथा अन्य स्थानों पर प्रसाद स्वरूप खिचड़ी का वितरण कराया गया।कामायनी फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रवीण कुमार सेन एवं राष्ट्रीय महासचिव मनोज कुमार ने बताया कि कामायनी फाउंडेशन का उद्देश्य महिला सशक्तिकरण है। महिलाओं एवं बालिकाओं को समाज की मुख्य धारा से जोड़कर उनके उत्थान के लिए कार्य करना है। उन्होंने बताया इसी प्रकार आगे भी कामायनी फाउंडेशन द्वारा भारतीय संस्कृति की धरोहर पावन पर्वों पर इसी प्रकार गरीब एवं असहाय लोगों की मदद तथा जरूरतमंद लोगों में भोजन तथा अन्य खाद्य सामग्री वितरण करने का कार्य किया जाएगा।कामायनी फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रवीण कुमार सेन ने आम जनपद वासियों से भी अपील करते हुए कहा कि वह भी महिलाओं एवं बालिकाओं के उत्थान के लिए आगे आए, ताकि हमारे और आपके सहयोग से हम अपने समाज की महिलाओं एवं बालिकाओं को सशक्त बना सकें।

जिले के व्यापारी भयमुक्त होकर करें व्यापारः पुलिस अधीक्षक

नवागत पुलिस अधीक्षक अनुपम सिंह का पुष्पगुच्छ एवं अभिनंदन पत्र देकर किया गया स्वागत

सुलतानपुर। काउंसिल आफ उद्योग व्यापार मंच के जिलाध्यक्ष कुलदीप गुप्ता के नेतृत्व में मंच का प्रतिनिधि मंडल नवागत पुलिस अधीक्षक अनुपम सिंह को पुष्पगुच्छ एवं अभिनंदन पत्र देकर स्वागत किया। इस परिचयात्मक भेंट में पुलिस अधीक्षक ने कहा कि व्यापारी भयमुक्त होकर अपना व्यापार करें। पुलिस 24 घंटे आपकी सुरक्षा हेतु उपलब्ध है और रहेगी। प्रतिनिधि मंडल में मण्डल अध्यक्ष अशोक कसौधन, जिला उपाध्यक्ष बृजेश खत्री,ज़िला महामंत्री राजेश माहेश्वरी, ज़िला कोषाध्यक्ष अरविंद द्विवेदी, नगर अध्यक्ष रवि सोनी, नगर उपाध्यक्ष राजीव श्रीवास्तव, सुधीर गुप्ता, नगर महामंत्री हरिशंकर,नगर सचिव मानिक लाल आदि मौजूद रहे।

बघौला गांव में आयोजित बैठक में विकास का खाका हुआ तैयार

आप सभी को मकर संक्रांति की हार्दिक शुभकामनाएं
बघौला विकास मंच
कम्बल वितरण एवं दिव्यांग जन, वृद्ध जन व विधवा माताओं बहनों का सम्मान समारोह
JUST DO IT

सूची, रायबरेली। सलोन ब्लाक के ग्राम पंचायत बघौला में बघौला विकास मंच की ओर से कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें खंड विकास अधिकारी, ग्राम विकास अधिकारी, ग्राम प्रधान , शिक्षको ने ग्रामीणों के साथ मिलकर विकास कार्यों की रूपरेखा तैयार की कार्यक्रम में अच्छा कार्य कराने के लिए अधिकारियों को सम्मानित किया गया । कार्यक्रम की अध्यक्षता समाजसेवी हरिशंकर मौर्य ने की। ग्राम पंचायत बघौला में आयोजित कार्यक्रम में ग्रामीण रामशंकर मौर्य ने गोशाला में लाइट लगवाने और शौचालय निर्माण कराने की मांग की , मशौदाबाद से जूनियर स्कूल तक इंटलाकिंग लगवाने की मांग की गयी , गांव में आवास के पात्रों को आवास की मांग हुई जिसमें खंड विकास अधिकारी शशि कुमार त्रिपाठी ने बताया की गांवों में आवास योजनान्तर्गत आवास के पात्रों का सर्वे कराया जा रहा है ,बघौला की गोशाला में 10 लाइट और शौचालय निर्माण करा दिया जायेगा इसके लिए ग्राम विकास अधिकारी मनीष श्रीवास्तव को निर्देश दिए , प्राथमिक विद्यालय फरीद गढ़ के प्रधानाध्यापक श्याम सुंदर पांडेय ने विद्यालय में बच्चों को बैठकर पढने के लिए डेस्क बेंच की व्यवस्था कराने पर खंड विकास अधिकारी और प्रधान प्रतिनिधि अरविंद मौर्य का आभार व्यक्त किया , ग्राम प्रधान प्रतिनिधि अरविंद मौर्य ने कहा की पेंशन, आवास , इंटरलांकिग , खड़ंजा सहित अन्य विकास कार्यों की रूपरेखा तैयार की गयी है एक वर्ष में कार्य पूर्ण कर लिया जायेगा कार्यक्रम में प्रधान प्रतिनिधि अरविंद मौर्य ने गांव के 500 ज़रूरत मंदों को ठंड से बचाव के लिए कंबल का वितरण किया गया कार्यक्रम में सुमंत पांडेय , अवधेश तिवारी सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

बाइक की टक्कर से साइकिल सवार घायल

फतेहपुर, (संवाददाता)। हथगाम थाना क्षेत्र के डिगरवा गांव के समीप बाइक की टक्कर से साइकिल सवार गंभीर रूप से घायल हो गया। हादसे की जानकारी परिजनों को हुई तो तुरंत उसको इलाज के लिए नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र लेकर पहुंचे। जहां डॉक्टर ने प्राथमिक उपचार के बाद रेफर कर दिया। जानकारी के अनुसार थाना क्षेत्र के कस्बा निवासी स्व. सुखराम का 70 वर्षीय पुत्र गिरधारी लाल साइकिल पर सवार होकर घर से किसी काम के लिए निकला था। जब वह थाना क्षेत्र के डिगरवा गांव के समीप पहुंचा। तभी बाइक सवार ने उसकी साइकिल को जोरदार टक्कर मार दिया। हादसे की जानकारी उसके परिजनों को हुई तो तुरंत उसको इलाज के लिए हथगांम सीएचसी लेकर पहुंचे। जहां डॉक्टर ने प्राथमिक उपचार के बाद सरकारी 108 एंबुलेंस से जिला अस्पताल के लिए रेफर कर दिया।

किसान दिवस कल

फतेहपुर, (संवाददाता)। उप कृषि निदेशक राममिलन सिंह परिहार ने बताया कि चालू माह का किसान दिवस 15 जनवरी को 12 बजे से दो बजे अपरान्ह तक विकास भवन सभागार में आयोजित कराया जायेगा। किसान दिवस में किसानों की समस्याओं के निदान हेतु बैठक में उपस्थित अधिकारियों/विषेशज्ञों द्वारा अपने विभाग से संबंधित योजनाओं, कार्यक्रमों की जानकारी उपलब्ध करायी जायेगी।

शिशिक्षु मेले में 20 अभ्यर्थी चयनित

फतेहपुर, (संवाददाता)। राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान के प्रधानाचार्य ने बताया कि प्रातः 11 से 3 बजे तक नोडल राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में प्रधानमंत्री राष्ट्रीय शिशिक्षु मेला का आयोजन किया गया। इस मेंले में जनपद के अधिष्ठान/उद्योग जेके इंजीनियरिंग राधानगर एवं बाके बिहारी प्लाई बोर्ड मलवॉ, फरीदाबाद की कम्पनी केआर आटो कम्पोनेन्ट ने प्रतिभाग किया। मेले में 76 अभ्यर्थियों ने प्रतिभाग किया जिसमें से 20 अभ्यर्थियों को चयनित किया गया।

मकर संक्रांति सामाजिक समरसता का पर्वः डॉ0 आरए वर्मा

गोमती हास्पिटल के 25 वें स्थापना दिवस पर आयोजित हुआ खिचड़ी भोज

सुलतानपुर। मकर संक्रांति का पावन पर्व जिले भर में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।शहर के गोमती नगर स्थित गोमती हास्पिटल एवं रिसर्च सेंटर के 25 वें स्थापना दिवस पर हास्पिटल परिसर में हवन- पूजन व खिचड़ी भोज का आयोजन किया गया। हास्पिटल की निदेशक पल्लवी वर्मा एवं भाजपा जिलाध्यक्ष डॉ0 आरए वर्मा ने प्रातः सुन्दरकाण्ड पाठ एवं हवन-पूजन के बाद आगन्तुकों का स्वागत करते हुए मकर संक्रांति की शुभकामनाएं दी।इस दौरान यहां पर लोगों के शुगर व ब्लड प्रेशर की निःशुल्क जांच भी की गई।भाजपा जिलाध्यक्ष डॉ0 आरए वर्मा ने कहा पावन पर्व मकर संक्रांति सामाजिक समरसता का पर्व है।यह पर्व सभी को उन्नति,कर्तव्य परायणता एवं सामाजिक समरसता का संदेश देता है। गोमती हॉस्पिटल परिसर में आयोजित खिचड़ी भोज में बड़ी संख्या में समाजसेवी, डॉक्टर्स, बुद्धिजीवी एवं भाजपा के लोग शामिल हुए।जिसमें प्रमुख रूप से पूर्व क्षेत्रीय अध्यक्ष डॉ0 एमपी सिंह, क्षेत्रीय महामंत्री सुशील त्रिपाठी, पूर्व जिलाध्यक्ष,पूर्व मंत्री ओम प्रकाश पाण्डेय, पूर्व जिलाध्यक्ष डॉ0 सीताशरण त्रिपाठी,करुणा शंकर द्विवेदी, जगजीत सिंह छंगू,विधायक सीताराम वर्मा,नगर पालिका अध्यक्ष प्रवीन कुमार अग्रवाल, पूर्व जिला महामंत्री कृपा शंकर मिश्रा,शशीकांत पाण्डेय,भाजपा प्रवक्ता विजय सिंह रघुवंशी, आलोक आर्या, भाजपा नेता रुपेश सिंह,डॉ0 सीबीएन त्रिपाठी,डॉ0 सुधाकर सिंह,मदन सिंह,डॉ0 कपूर,धर्मेन्द्र कुमार,डॉ0 प्रीति प्रकाश,एलके दूबे,डॉ0 राजेश शुक्ला,सुमन राव कोरी, लालजी वर्मा,धर्मेन्द्र सिंह, जिला सह मीडिया प्रभारी अशोक कुमार सिंह, इन्द्रजीत वर्मा, दिनेश चौरसिया, रजनीश मिश्रा, मंडल अध्यक्ष प्रदीप शर्मा,दान बहादुर तिवारी, प्रवीण मिश्रा, अनिल मिश्रा समेत बड़ी संख्या में संभ्रांत लोग मौजूद रहे।

रेलवे ट्रैक के पास मिला महिला का शव

अमेठी। जनपद के रामगंज थाना क्षेत्र में अयोध्या-प्रयागराज रेलखंड पर एक अज्ञात महिला का शव मिलने से सनसनी फैल गई। रामपुर गांव के पास रेलवे ट्रैक से करीब 20 मीटर दूर कच्चे रास्ते पर शव पड़ा मिला। सुबह शौच के लिए गए ग्रामीणों की नजर शव पर पड़ी, जिसके बाद मौके पर बड़ी संख्या में लोग जमा हो गए।सूचना मिलते ही रामगंज थाने की पुलिस मौके पर पहुंची और शव की शिनाख्त कराने का प्रयास किया। स्थानीय लोगों से पूछताछ के बाद भी महिला की पहचान नहीं हो सकी। रामगंज प्रभारी निरीक्षक अजयेंद्र पटेल ने बताया कि प्रथम दृष्टया मामला ट्रेन से गिरकर मौत का प्रतीत हो रहा है।पुलिस ने पंचनामा की कार्रवाई के बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। महिला की पहचान कराने का प्रयास किया जाएगा। इस दौरान शव को मॉर्च्यूरी में सुरक्षित रखा जाएगा। पहचान न होने की स्थिति में पोस्टमार्टम करवाकर आवश्यक कार्यवाही की जाएगी।

भोपाल में डा. अनुराग को मिला सम्मान

फतेहपुर, (संवाददाता)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आनुसांगिक संगठन आरोग्य भारती के मुख्यालय भोपाल में आयोजित आरोग्य भारती विषय विकास कार्यशाला में जनपद के चौधराना निवासी आरोग्य भारती के जिला सचिव व पर्यावरण प्रमुख कानपुर प्रान्त को पर्यावरण संरक्षण के लिए पूरे देश में जनजागरुकता हेतु अखिल भारतीय पर्यावरण संरक्षण की 6 सदस्यीय समिति में स्थान दिया गया। इस समिति में डॉ अनुराग के साथ डॉ मुरलीकृष्ण विजयवाड़ा, पुरुषोत्तम देवास्य मंगलौर, बी चन्द्रशेखर मदुरई, आशीष मंडलोई महाराष्ट्र, वैद्य दीपक अयोध्या शामिल हैं। इस अभियान के तहत पूरे देश में पर्यावरण संरक्षण के मुख्य घटक पेड़, पानी, प्लास्टिक व स्वच्छता विषय पर प्रत्येक जिले तक कार्यकर्ताओं के माध्यम से सभी नागरिकों को जागरूक किया जाएगा। समिति में स्थान मिलने पर डा. अनुराग को सम्मानित भी किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ अनुराधा नरवणे व राष्ट्रीय संगठन सचिव डॉ अशोक कुमार वार्ष्णेय भी मौजूद रहे।

ब्लॉक प्रमुख द्वारा मकर संक्रांति पर किया गया खिचड़ी वितरण

AVON FOOTWEAR

अमेठी। मकर संक्रांति के पावन अवसर पर हनुमान गढ़ी अमेठी में मंगलवार को खिचड़ी वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस शुभ आयोजन की शुरुआत ब्लॉक प्रमुख आकर्ष शुक्ल ने की।कार्यक्रम में बड़ी संख्या में स्थानीय निवासियों ने भाग लिया और मकर संक्रांति की खुशियां साझा कीं। खिचड़ी वितरण के दौरान श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया और आयोजन से हनुमान गढ़ी में एकता और उत्साह का माहौल रहा। इस दौरान ब्लाक प्रमुख आकर्ष शुक्ला ने कहा की 卐मकर संक्रांति का पर्व हमें एकता, सामूहिकता और भाईचारे का संदेश देता है। खिचड़ी वितरण कार्यक्रम का आयोजन करके हम इस पर्व की खुशियों को सभी के साथ साझा करने का प्रयास कर रहे हैं। यह कार्यक्रम न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि हमारे समाज में सामाजिक संबंधों को मजबूत करने का भी एक अहम अवसर है। मैं सभी को मकर संक्रांति की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं और आशा करता हूं कि इस पर्व से सभी की ज़िंदगी में सुख और समृद्धि आए।इस मौके पर दिवाकर पांडे, अशोक शुक्ल, पूर्व प्रधान गौरव पाठक, ऋषभ शुक्ल, और विपिन सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे जिन्होंने कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान दिया।

महाकाल धाम पर खिचड़ी भोज का हुआ भव्य आयोजन

सुलतानपुर। शहर के मध्य रेलवे स्टेशन रोड पर स्थित महाकाल धाम मंदिर पर मकर संक्रांति के पावन पर्व पर विशाल खिचड़ी भोज का भव्य आयोजन किया गया ! जिसमें दोपहर से लेकर शाम तक अनवरत हजारों भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया ! जिले के वरिष्ठ समाजसेवी राम प्रकाश मिश्रा दधीचि ने खिचड़ी भोज के संयोजक सच्चिदानंद पाठक की प्रशंसा करते हुए कार्यक्रम की खूब सराहना की ! कार्यक्रम को सफल बनाने में दीपक मिश्रा, सूरज पांडेय, शुभम मिश्रा, संदीप सिंह, विक्रम सिंह, दुर्गेश सिंह, आदि का विशेष सहयोग रहा!

संगम स्नान करने गए पूर्व प्रधान की हृदयगति रुक जाने से हुआ निधन क्षेत्र में शोक की लहर

परशदेपुर, रायबरेली। प्रयागराज संगम स्नान करने गए पूर्व प्रधान दिलीप सिंह की हृदयगति रूकने से मौत हो गयी। मौत की खबर पहुचते ही क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गयी।वही घर मे कोहराम मच गया पत्नी बेटा व भाई का रो रो कर बुरा हाल हो गया। डीह ब्लाक क्षेत्र के अटावां गांव निवासी पूर्व प्रधान दिलीप सिंह सोमवार देर रात प्रयागराज कुम्भ स्नान करने गए थे।सुबह लगभग तीन बजे गंगा स्नान कर बाहर निकले की कुछ देर बाद हालत बिगड़ने लगी ।साथियों ने एम्बुलेंस से अस्पताल पहुचाया जहा इलाज के दौरान उनकी मौत हो गयी।

वही मौत की खबर घर पहुचते ही कोहराम मच गया।मृतक की पत्नी निशा व बुजुर्ग माँ का रो रो कर बुरा हाल हो गया। पत्नी निशा पति की मौत से सहम सी गयी और रोते हुए मुख् से बस यही निकलता की हे भगवान इकाव होई गवा और रोने लगती ।मृतक अपने पीछे पत्नी सहित दो बेटे अभय सिंह व चन्दन सिंह को छोड़ गया।

पूर्व प्रधान की मौत, क्षेत्र में शोक की लहर

प्रयागराज कुम्भ स्नान करने गए डीह ब्लाक क्षेत्र के अटावां गांव निवासी पूर्व प्रधान दिलीप सिंह की हृदयगति रूकने से मौत हो गयी।पूर्व प्रधान की मौत से क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई।मृतक का अंतिम संस्कार गांव में ही किया गया।मृतक को मुखागिन मृतक के भाई पत्रकार संजीव सिंह ने दी।क्षेत्रीय विधायक अशोक कुमार कोरी ,पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष अवधेश सिंह , अखिलेश आर पाण्डेय,ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि विशाल सिंह, पूर्व ब्लाक प्रमुख आजाद सिंह,जगत प्रताप सिंह बघेल,राजकुमार द्विवेदी,पंकज सिंह,सुधीर सिंह,संजय पाण्डेय, अजय कुमार सिंह ,मो हारून सहित आदि लोगो ने मृतक के घर पहुचकर शोक संवेदना व्यक्त करते हुए ढांढस बंधाया

सोना महापात्रा

बोलीं- फेम मिलने के बाद ऐश्वर्या बदल गई

पहले वो हंसती रहती थीं, सुंदर के साथ होशियार भी बहुत थीं

सोना महापात्रा ने बताया कि मिस वर्ल्ड का खिताब जीतने के बाद ऐश्वर्या राय में बहुत सारे बदलाव आ गए हैं। सोना ने कहा कि पहले ऐश्वर्या बहुत हंसती थीं। शायद वो उनका दौर था। सुंदर होने के साथ-साथ वो बहुत होशियार भी थीं। हालांकि अब ऐसा नहीं है। 'वह बहुत स्मार्ट थीं, बहुत अच्छा बोलती थीं' यूट्यूब चौनल स्वअम स्पदहव में शो की होस्ट ने बातचीत में कहा- अगर कोई व्यक्ति थोड़ा बेचारा भी हो तो वह इको-सिस्टम में बेहतर तरीके से फिट हो सकता है। फिर शो के होस्ट ने सोना से इस बात का मतलब पूछा तो सिंगर ने कहा- हमने इसे देखा है। मुझे याद है कि ऐश्वर्या राय से मेरी पहली मुलाकात तब हुई थी, जब मैं बॉम्बे में एनआईडी का एंट्रेंस एग्जाम देने आई थी। वह आर्किटेक्चर की पढ़ाई कर रही थीं। वह मुझसे उम्र में बड़ी हैं। वह बहुत खूबसूरत दिखती थीं। वह बहुत स्मार्ट थीं, बहुत अच्छा बोलती थीं। सोना बोलीं- वो पहले बहुत हंसती थीं, शायद वह उनका दौर था सोना ने आगे कहा- फिर एक समय ऐसा भी आया था जब मैं उन्हें इंटरव्यू में देखकर कहती थी- यह वह ऐश्वर्या नहीं हैं, जिसे मैंने देखा था। वह पहले बहुत हंसती थीं। शायद वह उनका दौर था। वह बहुत बुद्धिमान महिला थीं। लेकिन जिस इंडस्ट्री में ऐश्वर्या हैं, शायद वो इंडस्ट्री उन्हें बहुत ज्यादा स्मार्ट नहीं बनने के लिए मजबूर करती है। शायद मेरा यह कहना गलत भी हो सकता है। ऐश्वर्या ने 1997 में एक्टिंग की दुनिया में कदम रखा था बताते चलें, ऐश्वर्या राय आर्किटेक्ट बनना चाहती थीं। हालांकि बाद में उन्होंने मॉडलिंग के लिए पढ़ाई छोड़ दी। 1994 में उन्होंने मिस वर्ल्ड का खिताब अपने नाम किया। इसके बाद उन्होंने 1997 में मणिरत्नम की तमिल फिल्म इरुवर से एक्टिंग करियर की शुरुआत की। उन्होंने उसी साल 'और प्यार हो गया' से बॉलीवुड में डेब्यू किया। इसके बाद वह कई फिल्मों का हिस्सा रहीं। वहीं उन्हें आखिरी बार पोन्नियिन सेलवनरू प्प् (2023) में देखा गया है।सोना महापात्रा ने बताया कि मिस वर्ल्ड का खिताब जीतने के बाद ऐश्वर्या राय में बहुत सारे बदलाव आ गए हैं। सोना ने कहा कि पहले ऐश्वर्या बहुत हंसती थीं। शायद वो उनका दौर था। सुंदर होने के साथ-साथ वो बहुत होशियार भी थीं। हालांकि अब ऐसा नहीं है। 'वह बहुत स्मार्ट थीं, बहुत अच्छा बोलती थीं' यूट्यूब चौनल स्वअम स्पदहव में शो की होस्ट ने बातचीत में कहा- अगर कोई व्यक्ति थोड़ा बेचारा भी हो तो वह इको-सिस्टम में बेहतर तरीके से फिट हो सकता है। फिर शो के होस्ट ने सोना से इस बात का मतलब पूछा तो सिंगर ने कहा- हमने इसे देखा है। मुझे याद है कि ऐश्वर्या राय से मेरी पहली मुलाकात तब हुई थी, जब मैं बॉम्बे में एनआईडी का एंट्रेंस एग्जाम देने आई थी। वह आर्किटेक्चर की पढ़ाई कर रही थीं। वह मुझसे उम्र में बड़ी हैं। वह बहुत खूबसूरत दिखती थीं। वह बहुत स्मार्ट थीं, बहुत अच्छा बोलती थीं। सोना बोलीं- वो पहले बहुत हंसती थीं, शायद वह उनका दौर था सोना ने आगे कहा- फिर एक समय ऐसा भी आया था जब मैं उन्हें इंटरव्यू में देखकर कहती थी- यह वह ऐश्वर्या नहीं हैं, जिसे मैंने देखा था। वह पहले बहुत हंसती थीं। शायद वह उनका दौर था। वह बहुत बुद्धिमान महिला थीं। लेकिन जिस इंडस्ट्री में ऐश्वर्या हैं, शायद वो इंडस्ट्री उन्हें बहुत ज्यादा स्मार्ट नहीं बनने के लिए मजबूर करती है। शायद मेरा यह कहना गलत भी हो सकता है। ऐश्वर्या ने 1997 में एक्टिंग की दुनिया में कदम रखा था बताते चलें, ऐश्वर्या राय आर्किटेक्ट बनना चाहती थीं। हालांकि बाद में उन्होंने मॉडलिंग के लिए पढ़ाई छोड़ दी। 1994 में उन्होंने मिस वर्ल्ड का खिताब अपने नाम किया। इसके बाद उन्होंने 1997 में मणिरत्नम की तमिल फिल्म इरुवर से एक्टिंग करियर की शुरुआत की। उन्होंने उसी साल 'और प्यार हो गया' से बॉलीवुड में डेब्यू किया। इसके बाद वह कई फिल्मों का हिस्सा रहीं। वहीं उन्हें आखिरी बार पोन्नियिन सेलवनरू प्प् (2023) में देखा गया है।ष्लव लिंगोष् के यूट्यूब चौनल पर बात करते हुए सोना ने कहा कि वह हर दिन ष्18 घंटे काम करती हैं ताकि वह स्वतंत्र रह सकें और किसी के नियंत्रण में न रहें।ष् सोना ने यह भी बताया कि वह कब ऐश्वर्या राय से पहली बार मिली थी और उसके बाद उन्होंने एक्ट्रेस में कैसे बदलाव देखे। सोना ने कहा, ष्मैं याद करती हूं, जब मैं पहली बार ऐश्वर्या राय से मिली थी, तब मैं बॉम्बे में एनआईडी के एंट्रेंस एग्जाम देने आई थी। तब वह आर्किटेक्चर की पढ़ाई कर रही थी। वह बहुत स्मार्ट और खूबसूरत थी, बहुत अच्छी बात करती थी और एक टॉप स्टूडेंट थी।ष् सोना ने आगे कहा, ष्फिर एक वक्त आया जब मुझे ऐश्वर्या के इंटरव्यूज में बदलाव महसूस हुआ। वो शायद बहुत ज्यादा हंसी-मजाक करती थीं। मुझे लगता था कि वह एक बहुत समझदार महिला हैं, लेकिन जिस इंडस्ट्री में वह थीं, शायद वह ज्यादा स्मार्ट न दिखने के लिए मजबूर की जाती होंगी। हो सकता है, मैं गलत हूं, लेकिन वह अपने आप को थोड़ा कम कर देती थीं।ष् ठच्ब् च्तवजमेजरू बवाल के बाद च्चमत रद्द होगा या नहीं, आयोग के चेयरमैन ने बताया द्य ठपींत द्यवनइंडिया हिंदी बवाल के बाद च्चमत रद्द होगा या नहीं, आयोग के चेयरमैन ने बताया द्य ठपींत द्यवनइंडिया हिंदीठच्ब् च्तवजमेजरू बवाल के बाद च्चमत रद्द होगा या नहीं, आयोग के चेयरमैन ने बताया द्य ठपींत द्यवनइंडिया हिंदी ऐश्वर्या राय का सपना आर्किटेक्ट बनने का था, इसलिए उन्होंने रचनासन सद अकादमी ऑफआर्किटेक्चर में दाखिला लिया था। लेकिन बाद में उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी और मॉडलिंग में करियर बनाने का फैसला किया। 1994 में उन्हें मिस वर्ल्ड का ताज मिला। 1997 में उन्होंने मणि रत्नम की तमिल फिल्म ष्इरुअरष् से अभिनय की शुरुआत की और उसी साल बॉलीवुड फिल्म ष्और प्यार हो गयाष् से भी डेब्यू किया। ऐश्वर्या ने कई हिट फिल्में की हैं, और वह हाल ही में ष्पोन्नियिन सेलवनरू प्प्ष् (2023) में नजर आई थीं।

की।

वापसी को तैयार दीपिका!

बॉलीवुड अभिनेत्री दीपिका पादुकोण को आखिरी बार कल्कि 2898 ई. में देखा गया था और बाद में उन्होंने 8 सितंबर, 2024 को अपनी बेटी दुआ पादुकोण सिंह को जन्म देने के बाद फिल्मों से ब्रेक ले लिया। बॉलीवुड अभिनेत्री दीपिका पादुकोण को आखिरी बार कल्कि 2898 ई. में देखा गया था और बाद में उन्होंने 8 सितंबर, 2024 को अपनी बेटी दुआ पादुकोण सिंह को जन्म देने के बाद फिल्मों से ब्रेक ले लिया। फैंस कल्कि 2898 ई. के सीक्वल का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। खैर, ऐसा लग रहा है कि दीपिका अब फिल्म की शूटिंग फिर से शुरू करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं और फैंस इसके लिए काफी उत्साहित हैं। यह वीनर्स नकली दांतों से 300 गुना बेहतर है! और कीमत बहुत सस्ती हैऔर जानें 5 जनवरी को एक साल की हुईं दीपिका को कल्कि 2898 ई. के निर्माताओं ने शुभकामनाएं दीं और अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर एक वीडियो पोस्ट किया, जिसके अंत में एक नोट था, %सेट पर जल्द ही मिलते हैं%। कई फैंस ने कैप्शन देखा और दीपिका की बड़े पर्दे पर वापसी का जश्न मनाना शुरू कर दिया। दीपिका ने अपनी बेटी के जन्म के बाद अपने करियर से कुछ समय के लिए ब्रेक लिया और अब एक और बेटी होने के बाद शूटिंग पर लौटने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। एक यूजर ने लिखा, %दीपिका के किरदार के बिना कल्कि फिल्म कुछ भी नहीं है%, और दूसरे ने कमेंट करते हुए कहा, %पार्ट 2 कब आ रहा है? कृपया अपडेट करें%। तीसरे यूजर ने लिखा, %कल्कि की मां सुमति%। कल्कि 2898 ई. की निर्माता स्वप्ना दत्त ने बताया कि दीपिका गोवा में आयोजित भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव (आईएफएफआई) में शामिल होने के दौरान सीक्वल के कुछ हिस्सों में मां की भूमिका निभाएंगी। स्वप्ना की बहन और सह-निर्माता प्रियंका दत्त ने बताया कि सीक्वल का एक महत्वपूर्ण हिस्सा, लगभग 30-35 प्रतिशत, पहले ही फिल्माया जा चुका है। कल्कि 2898 ई. में प्रभास, अमिताभ बच्चन, कमल हासन, दिशा पटानी और दीपिका हैं। यह फिल्म सुपरहिट रही और इसने वैश्विक स्तर पर 1200 करोड़ रुपये की कमाई की।

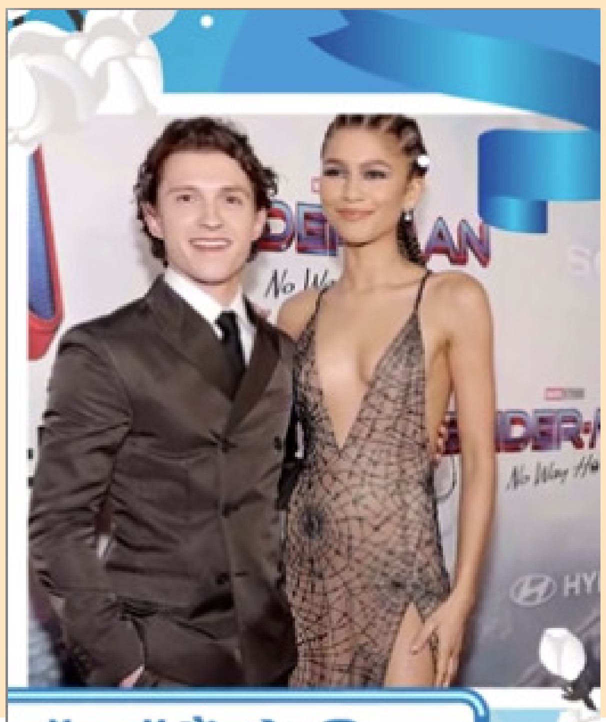

टॉम हॉलैंड ने की जेंडया से गुपचुप सगाई

स्पाइडर मैन स्टार टॉम हॉलैंड ने अपनी लॉन्ग टाइम गर्लफ्रेंड और एक्ट्रेस जेंडया से सगाई कर ली है। सगाई की खबरें तक सामने आईं, जब एक्ट्रेस जेंडया गोल्डन ग्लोब अवॉर्ड सेरेमनी में बड़ी सी डायमंड रिंग पहनकर पहुंची थीं। हाल ही में ज्र्ड वेबसाइट ने टॉम हॉलैंड और जेंडया की सगाई की खबरों को कन्फर्म किया है। रिपोर्ट के अनुसार, दोनों ने गुपचुप तरीके से सगाई की है। प्राइवेट सेरेमनी में पावर कपल के घरवाले भी मौजूद नहीं थे। जेंडया की डायमंड रिंग की कीमत 1 करोड़ 70 लाख से ज्यादा कैलिफोर्निया में हुई 82वीं गोल्डन ग्लोब अवॉर्ड सेरेमनी में जेंडया भी पहुंची थी। इस दौरान उन्होंने बुलगारी की बॉडीकॉन लॉन्ग गाउन पहनी थी। इसी दौरान उनकी अंगूठी ने हर किसी का ध्यान खींच लिया। दरअसल, जेंडया ने जो डायमंड रिंग पहनी थी, वो उनके बुलगारी आउटफिट का हिस्सा नहीं थी। ये डायमंड रिंग जेसिका मैककॉर्मैक की बताई जा रही है, जिसकी कीमत 2 लाख डॉलर यानी करीब 1 करोड़ 71 लाख रुपए है। बीते साल सगाई की खबरों पर दी थी एक्ट्रेस ने सफाई करीब एक साल पहले जेंडया ने एक तस्वीर शेयर की थी, जिसमें उन्होंने रिंग फिंगर में डायमंड रिंग पहनी हुई थी। तस्वीरें सामने आने के बाद फैंस ने उनकी सगाई के कयास लगाने शुरू कर दिए। अफवाहों के बढ़ने पर जेंडया ने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए अफवाहों पर रिएक्ट किया था। उन्होंने एक वीडियो शेयर की, जिसमें कहा, क्या अब मैं कुछ पोस्ट भी नहीं कर सकती। मैंने वो फोटो अपनी हेट के लिए डाली थी, रिंग के लिए नहीं। आप लोगों को वाकई लगता है कि मैं इस तरह सगाई की खबर दूंगी? 3 साल से रिलेशनशिप में हैं टॉम हॉलैंड और जेंडया जेंडया और टॉम हॉलैंड पिछले तीन सालों से डेट कर रहे हैं। सितंबर 2021 में जेंडया के 25वें बर्थडे पर टॉम हॉलैंड ने उन्हें सोशल मीडिया पर विश कर अपने रिलेशनशिप को ऑफिशियल कर दिया था। इसके बाद कपल कई बार साथ दिख चुका है। दोनों साल 2021 की हॉलीवुड फिल्म स्पाइडर मैनः वो वे होम में साथ नजर आ चुके हैं।

ठुमकों से लूट लिया दिल

धनश्री वर्मा अपने डांस वीडियोज के लिए चर्चा में रहती हैं. डांसर सोशल मीडिया पर काफी चर्चा में रहती हैं. उन्होंने रियलिटी शो में भी हिस्सा लिया था. कातिल अदाएं और लटके-झटके, युजवेंद्र चहल की पत्नी धनश्री वर्मा के किलर डांस मूव्स वायरल वींदेीतमम टमतउं कंदबमरू धनश्री वर्मा अपनी पर्सनल लाइफको लेकर चर्चा में बनी हैं. उनकी शादी क्रिकेटर युजवेंद्र चहल के साथ हुई थी. हालांकि, अब खबरें हैं कि उनकी शादीशुदा जिंदगी ठीक नहीं चल रही है और दोनों तलाक लेने वाले हैं. कपल ने अभी तक इन खबरों पर रिएक्ट नहीं किया है. म्यूजिक वीडियोज में नजर आईं धनश्री धनश्री वर्मा की बात करें तो वो पॉपुलर डांसर और कोरियोग्राफर हैं. धनश्री वर्मा सोशल मीडिया पर अपने डांस के वीडियोज शेयर करती रहती हैं. धनश्री वर्मा ने युजवेंद्र चहल को भी डांस सिखाया था. वो युजवेंद्र की डांस टीचर थीं. उनकी लव स्टोरी यहीं से शुरू हुई थी.उनके किलर डांस मूव्स वायरल रहते हैं और फैंस को उनकी कातिल अदाएं पसंद आती हैं. धनश्री वर्मा को म्यूजिक वीडियो श्प्यार चाहिएश् के लिए जाना जाता है. उन्हें जस्सी गिल और सिमर कौर के ओए होए होए में भी देखा गया था. उन्होंने ठंससम छप ठंससम में भी अदाएं बिखेरी. वायरल रहते हैं डांस वीडियो धनश्री सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर भी हैं. वो सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव हैं और पर्सनल लाइफसे जुड़े अपडेट देती रहती हैं. वो इंस्टाग्राम पर डांस वीडियोज शेयर करती हैं. इस वीडियो में वो गजनी फिल्म के गाने लट्टू लट्टू पर डांस करती दिख रही हैं. वीडियो में उन्हें ब्लैक कलर की ब्रालेट और पैंट में देखा गया. धनश्री ने अपनी हॉट अदाएं बिखेरी और सिजलिंग डांस से फैंस को दीवाना बना दिया. उनका ये डांस वीडियो काफी वायरल हुआ. डांस रियलिटी शो में बिखेरा जलवा धनश्री वर्मा ने डांस रियलिटी शो झलक दिखला जा 11 में भी हिस्सा लिया था. इस शो वो वाइल्ड कार्ड कंटेस्टेंट थीं. जब वो शो में थीं तो युजवेंद्र चहल ने भी उन्हें सपोर्ट किया था और उनकी तारीफकी थी. इस शो में उनके डांस को काफी पसंद किया गया था. धनश्री ने अपनी अदाओं और ठुमकों से दिल जीत लिया था.

हिन्दी दैनिक
तीसरा विकल्प न्यूज़
लखनऊ से प्रकाशित
गुरुवार, 16 जनवरी, 2025

अब मैच हारने पर होगी खिलाड़ियों की जेब ढीली

ROHIT
45
SIRAJ
73

हाल में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफटेस्ट सीरीज में भारत की हार से भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड काफी नाराज है। हाल में हुई बैठक में कई अहम मुद्दों पर चर्चा की गई जिसमें टेस्ट क्रिकेट की अहमियत को बढ़ाने को लेकर भी बात हुई।

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफटेस्ट सीरीज में भारत की हार से भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड काफी नाराज है। हाल में हुई बैठक में कई अहम मुद्दों पर चर्चा की गई जिसमें टेस्ट क्रिकेट की अहमियत को बढ़ाने को लेकर भी बात हुई। वहीं बीसीसीआई चाहता है कि खिलाड़ी हार की जिम्मेदारी लें जिस कारण बोर्ड इस पर बड़ा फैसला ले सकता है। इंडियन एक्सप्रेस की खबर के मुताबिक बोर्ड ने फैसला किया है कि अब टीम की हार का असर खिलाड़ियों की जेब पर भी होगा। बैठक में सुझाव दिया गया कि खिलाड़ी को अपने प्रदर्शन और हार की जिम्मेदारी लेनी होगी। अगर किसी का प्रदर्शन उम्मीद के मुताबिक नहीं होगा तो उनकी सैलरी में कटौती होगी। बोर्ड के अनुसार खिलाड़ी इससे और जिम्मेदार होंगे। भारतीय टीम को बीते साल न्यूजीलैंड के खिलाफअपने घर पर ही टेस्ट सीरीज में 0-3 से हार का सामना करना पड़ा। इसके बाद जब टीम ऑस्ट्रेलिया गई तो वहां भी सीरीज 1-3 से हारी। इस सीरीज में टीम के कई स्टार बल्लेबाज रन नहीं बना पाए। पिछले साल टेस्ट क्रिकेट की लोकप्रियता बढ़ाने के लिए उन्होंने बड़ा फैसला किया था। बीसीसीआई ने साल में टेस्ट मैच खेलने वाले खिलाड़ियों के लिए इनसेंटिव देने का फैसला किया था। इसके मुताबिक जो खिलाड़ी सीजन के 50 प्रतिशत से ज्यादा मैच खेलते हैं तो उन्हें हर मैच के लिए 30 लाख रुपये का इनसेंटिव दिया जाएगा। ऐसे ही 75 प्रतिशत टेस्ट खेलने वालों को 4 लाख रुपये प्रति मैच रुपये दिए जाएंगे। उनकी कोशिश थी कि पैसों के कारण टी20 लीग की और आकर्षित हो रहे युवा खिलाड़ी टेस्ट की अहमियत भी समझें। बोर्ड ने बैठक में चर्चा की कि, खिलाड़ियों का टेस्ट मैच को खेलने के लिए इच्छाशक्ति यानी इंटेंट कम हो रहा है। उन्हें टीम की हार से फर्क नहीं पड़ रहा है। खिलाड़ी टेस्ट की जगह लीग्स को तवज्जो देने लगे हैं। बोर्ड ऐसा नहीं चाहता है।

भारत के लिए सबसे तेज वनडे शतक लगाने वाली बल्लेबाज बनीं स्मृति मंधाना, हरमनप्रीत को पीछे छोड़ा

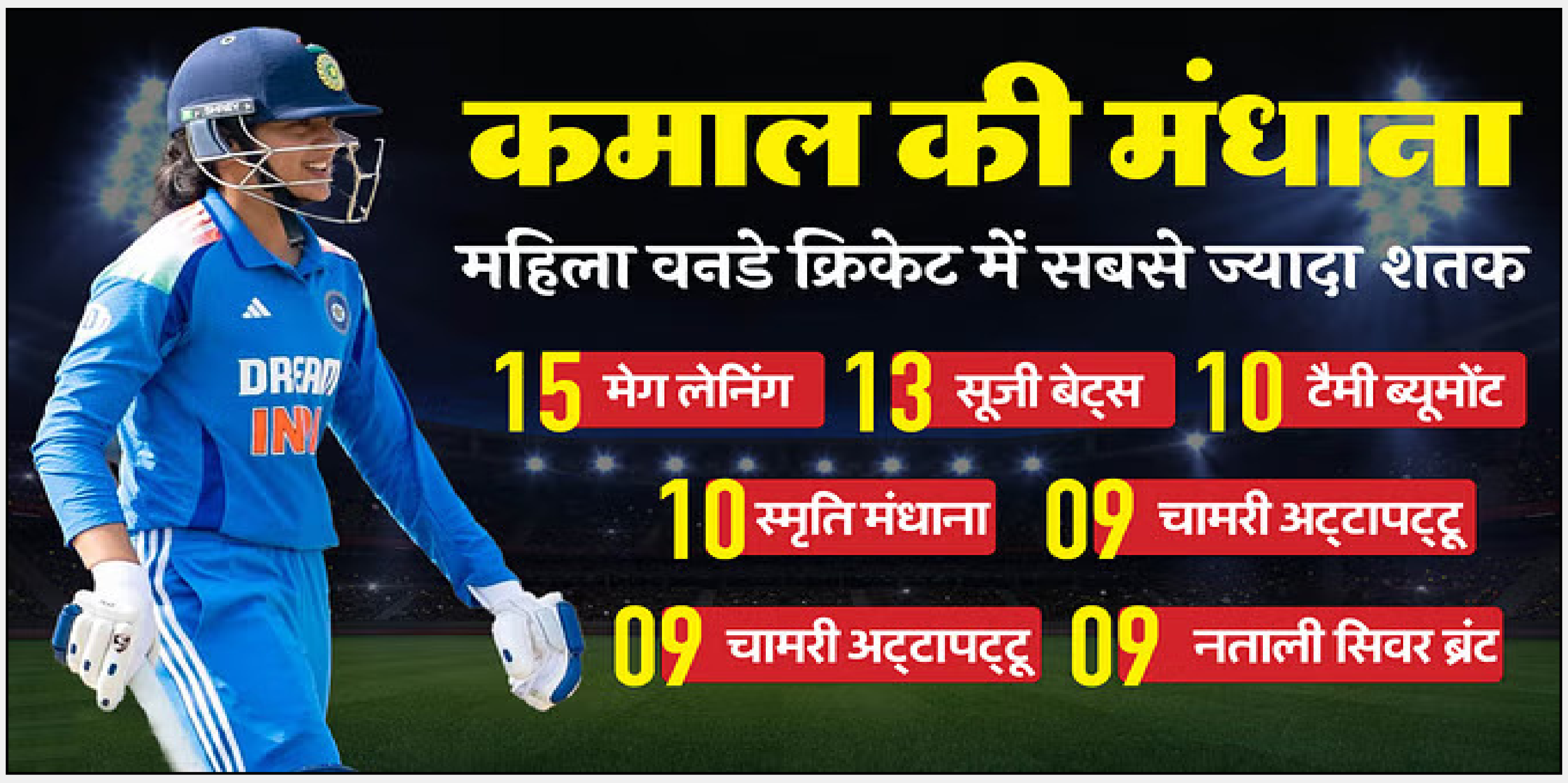

राजकोट। मंधाना के वनडे करियर का यह 10वां शतक है और महिला वनडे क्रिकेट इतिहास में सबसे ज्यादा शतक लगाने वाली संयुक्त रूप से तीसरी बल्लेबाज बन गई हैं। महिलाओं में 50 ओवर के प्रारूप में सबसे ज्यादा शतक लगाने का रिकॉर्ड मेग लेनिंग के नाम है जिन्होंने 15 शतक लगाए हैं। भारतीय महिला टीम की स्टार बल्लेबाज स्मृति मंधाना ने आयरलैंड के खिलाफ राजकोट में खेले जा रहे तीसरे वनडे मुकाबले में शतक जड़ दिया। मंधाना ने महज 70 गेंदों पर शतक लगाया जो भारत के लिए महिला क्रिकेट में किसी बल्लेबाज द्वारा लगाया सबसे तेज शतक है। मंधाना ने इस मामले में हरमनप्रीत कौर को पीछे छोड़ा जिन्होंने पिछले साल दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 87 गेंदों पर शतक जमाया था। मंधाना शतक लगाने के बाद ज्यादा देर क्रीज पर नहीं टिक सकीं और अपना विकेट गंवा बैठीं। ओरला प्रेंडरगास्ट ने मंधाना को आउट कर टीम को पहली सफलता दिलाई। मंधाना 80 गेंदों पर 12 चौकों और सात छक्कों की मदद से 135 रन बनाकर आउट हुईं। इसके साथ ही मंधाना और प्रतिका रावल के बीच पहले विकेट के लिए 233 रनों की साझेदारी का अंत हो गया। मंधाना ने तेज तर्रार पारी खेली और टीम को मजबूत स्थिति पर पहुंचा दिया। भारत के लिए महिला वनडे क्रिकेट में सबसे तेज शतक गेंद बल्लेबाज बनाम वर्ष 70 स्मृति मंधाना आयरलैंड 2025 87 हरमनप्रीत कौर दक्षिण अफ्रीका 2024 90 हरमनप्रीत कौर ऑस्ट्रेलिया 2017 90 जेमिमा रोड्रिग्ज आयरलैंड 2025 98 हरलीन देओल वेस्टइंडीज 2024 भारत के लिए वनडे में तीसरी सबसे बड़ी साझेदारी भारतीय महिला टीम आयरलैंड के खिलाफतीसरे मैच में भी दमदार शुरुआत करने में सफल रही है। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए भारत को मंधाना और रावल ने मजबूत शुरुआत दिलाई और 24 ओवर की समाप्ति के बाद स्कोर 200 के पार पहुंचा दिया था। मंधाना ने इस दौरान आक्रामक बल्लेबाजी की और लगातार बड़े शॉट खेलती रहीं, जबकि दूसरे छोर पर रावल भी डटी रहीं। मंधाना और रावल ने इसके साथ ही पहले विकेट के लिए 233 रन जोड़े जो वनडे में भारतीय महिला टीम के लिए तीसरी सबसे बड़ी साझेदारी है। वनडे में भारत के लिए सबसे बड़ी साझेदारी का रिकॉर्ड पूनम राउत और दीप्ति शर्मा के नाम है, जिन्होंने 2017 में आयरलैंड के खिलाफ 320 रन जोड़े थे। भारत के लिए किसी भी विकेट के लिए महिला वनडे क्रिकेट में सबसे बड़ी साझेदारी रन साझेदार बनाम वर्ष 320 पूनम-दीप्ति आयरलैंड 2017 258′ मिताली-रेशमा आयरलैंड 1999 233 मंधाना-रावल आयरलैंड 2025 223′ अंजुम-जया पाकिस्तान 2005 190 मंधाना-रोड्रिग्ज न्यूजीलैंड 2019 करियर का 10वां वनडे शतक जड़ा मंधाना के वनडे करियर का यह 10वां शतक है और महिला वनडे क्रिकेट इतिहास में सबसे ज्यादा शतक लगाने वाली संयुक्त रूप से तीसरी बल्लेबाज बन गई हैं। महिलाओं में 50 ओवर के प्रारूप में सबसे ज्यादा शतक लगाने का रिकॉर्ड मेग लेनिंग के नाम है जिन्होंने 15 शतक लगाए हैं। इसके बाद सूजी बेट्स हैं जिन्हें वनडे में 13 शतक लगाए हैं। वहीं, मंधाना अब टैमी ब्यूमोंट के साथ इस सूची में तीसरे स्थान पर आ गई हैं जिन्होंने इस भारतीय बल्लेबाज की तरह वनडे में 10 शतक लगाए हैं।

अर्जुन क्रिकेट लीग सीजन 4 सम्राट तिवारी का आक्रमक शतक, चंदन हास्पीटल की जीत की फोर्ट्रिक

U-16 ARJUNA CRICKET LEAGUE
ORG. BY: ARJUNA CRICKET ACADEMY
MAN OF THE MATCH
Sponsored By: DHARA WORLD / KIRAN FOUNDATION
GAME CHANGER OF THE MATCH
Medd cs
SAS HYUNDAI
MARINERS
KIRAN FOUNDATION

तीसरा विकल्प न्यूज़ - ब्यूरो

लखनऊ। राजधानी मे किरन फाउंडेशन के तत्वावधान मे धरा वर्ल्ड द्वारा आयोजित अर्जुन क्रिकेट लीग अंडर-16 क्रिकेट टूर्नामेंट के अंतर्गत आज खेले गये मैच मे चंदन हास्पीटल ने गोल्डन ईगल को 86 रनो के भारी अंतर से हराकर टूर्नामेंट में अपनी लगातार चौथी जीत दर्ज की । टास जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए चंदन हास्पीटल की टीम ने निर्धारित 35 ओवरो मे 7 विकेट खोकर 275 रनो का विशाल स्कोर खडा किया । सम्राट तिवारी ने 64 गेंदो पर 15 चौकों की मदद से 121 रनो की आतिशी शतकीय पारी खेली । रुद्रांष वैश्नव ने 22 गेंदो पर 5 चौकों की मदद से 35 साबिर रजा ने 29 गेंदो पर 5 चौकों की मदद से 29 तथा आश्चर्य ने 60 गेंदो पर 5 चौकों की मदद से 28 रन बनाए । गोलाडन ईगल की ओर से गेंदबाज़ी करते हुए द्रियाशु मिश्रा ने 5 ओवर मे 60 रन देकर 4 विकेट लिए, सुमित निर्मल, अमर चंद्र अरीब खान तथा सचिन तिवारी ने एक एक विकेट हासिल किया । लक्ष्य का पीछा करते हुए गोलडन ईगल का एक छोर ताश के पत्तों की तरहां बिखर गया, जब्की दूसरे छोर पर अमर चंद्र चट्टान की तरहां डटे रहकर शतकीय पारी खेल गये । अमर चन्द्र ने 63 गेंदो पर 13 चौकों की मदद से 110 रनो की शानदार पारी खेली, दूसरा सर्वोच्च स्कोर एकमात्र आदित्य मिश्रा का रहा जिनहूने 24 गेंदो पर 2 चौकों की मदद से 13 रन बनाए अन्य कोई भी बल्लेबाज दहाई का आकडा दहाई का आकडा भी पार ना कर सका । चंदन हास्पीटल की टीम 86 रनो की धमाकेदार जीत दर्जकर लगातार चौथा मैच जीतने मे सफल रही । गोल्डन ईगल की ओर से वारिस अली ने 7 ओवरों में 2 मेडन डालते हुए 25 रन देकर 3 विकेट सम्राट तिवारी ने 6 ओवरों में 39 रन देकर 3 विकेट चटकाएं, अंचल अग्रहरि ने 5 ओवरों में 24 रन देकर 2 विकेट तथा अनुज क्षेत्रीय ने 7 ओवरों में 35 रन देकर 2 विकेट लिए । सम्राट तिवारी को उनके हरफनमौला प्रदर्शन के लिए मैन आफ द मैच घोषित किया गया । आज के मैच मे मुख्य अतिथी रहे धरा वर्ल्ड के डायरेक्टर मिस्टर चन्द्र प्रकाश यादव ने विजयी टीम सहित चुने हुए खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया ।

ग्रेग चौपल को लेकर रॉबिन उथप्पा ने किए बड़े खुलासे, कहा- वो ड्रेसिंग रूप की बातें लीक करते थे

पूर्व भारतीय क्रिकेटर ने बताया कि ग्रेग चौपल भारतीय ड्रेसिंग रूम में ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट संस्कृति को लागू करना चाहते थे और उन्हें वरिष्ठ खिलाड़ियों के प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। रॉबिन उथप्पा ने कहा कि, एक युवा खिलाड़ी के रूप में ग्रेग चौपल मेरे लिए बहुत अच्छे थे। मैं तब टीम में आया ही था। मैं युवा था और वह युवाओं का समर्थन करते थे।

रॉबिन उथप्पा ने टीम इंडिया के पूर्व कोच ग्रेग चौपल को लेकर कई बड़े खुलासे किए हैं। उन्होंने बताया कि ग्रेग चौपल के दौर में टीम इंडिया के ड्रेसिंग रूप में क्या गलत हुआ था। ग्रेग चौपल टीम इंडिया ड्रेसिंग रूम में जानकारी लीक कर देते थे। ग्रेग चौपल जब टीम इंडिया के कोच तब ही भारत 2007 के वनडे वर्ल्ड कप में ग्रुप स्टेज से बाहर हो गया था। रॉबिन उथप्पा ने द लल्लनटॉप को बताया कि, उस टीम का माहौल बहुत खराब था। क्रिकेट में सबसे दिलचस्प बात ये है कि अगल-अलग राज्यों, संस्कृति और घरों से 15-20 लोग एक ही लक्ष्य के लिए खेल रहे होते हैं और वह है भारत के लिए खेलना। वहीं उथप्पा ने कहा कि, इसमें एक जादू है। जब आप इसे सही कर लेते हैं तो क्रिकेट खेलने का मजा ही कुछ और होता है। हमने 2007 के टी20 वर्ल्ड कप में एक-दूसरे की सफलता का आनंद लिया। हम एक इकाई की तरह खेले। भले ही मैं आउट हो जाऊं, लेकिन मैं चाहूंगा कि आप रन बनाएं। जाओ और हमारे लिए मैच जीतो। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कौन रन बना रहा है या कौन विकेट ले रहा है। पूर्व भारतीय क्रिकेटर ने बताया कि ग्रेग चौपल भारतीय ड्रेसिंग रूम में ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट संस्कृति को लागू करना चाहते थे और उन्हें वरिष्ठ खिलाड़ियों के प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। रॉबिन उथप्पा ने कहा कि, एक युवा खिलाड़ी के रूप में ग्रेग चौपल मेरे लिए बहुत अच्छे थे। मैं तब टीम में आया ही था। मैं युवा था और वह युवाओं का समर्थन करते थे। 20 साल के खिलाड़ी के रूप में मेरा सपना भारत के लिए खेलना, भारत के लिए जीतना था। उथप्पा ने कहा कि, मुझे उम्मीद थी कि मैं भारत के लिए एक वर्ल्ड कप जीतूंगा। जब आपको देश के लिए खेलने का मौका मिलता है।

रोहित शर्मा जाएंगे पाकिस्तान? क्रिकेट खेलने के लिए नहीं बल्कि ये है वजह

चौंपियंस ट्रॉफी 2025 में मैच खेलने के लिए भारतीय टीम पाकिस्तान नहीं जाएगी। भारतीय टीम ने सुरक्षा कारणों से पाकिस्तान जाने से मना कर दिया है। ऐसे में भारत के मैच दुबई में होंगे। हालांकि, भारतीय टीम के कप्तान रोहित शर्मा को पाकिस्तान जाना पड़ सकता है। चौंपियंस ट्रॉफी 2025 से पहले फोटोशूट के लिए उन्हें पाकिस्तान जाना पड़ा सकता है। आमतौर पर इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल के किसी भी टूर्नामेंट से पहले मेजबान देश सभी कप्तानों की मौजूदगी में एक इवेंट आयोजित करता है। इस कार्यक्रम में सभी कप्तानों का फोटोशूट और एक प्रेस कॉन्फ्रेंस होता है। इस दौरान कप्तान टूर्नामेंट से अपनी उम्मीदों के बारे में बात करते हैं। आगामी चौंपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए सभी आठ देशों के कप्तान आईसीसी द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में हिस्सा लेंगे। रोहित के पाकिस्तान जाने की संभावनाओं पर आधिकारिक घोषणा अभी बाकी है। बीसीसीआई की ओर से अभी तक इस पर कोई बयान नहीं आया है। बोर्ड से बयान आने पर ही कुछ साफहोगा। चौंपियंस ट्रॉफी 2025 की शुरुआत 19 फरवरी को होगी। जब मेजबान पाकिस्तान टूर्नामेंट के शुरुआती मुकाबले के लिए न्यूजीलैंड से भिड़ेगा। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड इस मेगा इवेंट की मेजबानी कर रहा है। जहां भारतीय अपने सभी मैच दुबई में खेलेगा और बाकी मैच मेजबान देश में खेले जाएंगे।

इस मामले में इतिहास रच देंगे श्रेयस अय्यर, बन जाएंगे भारत के पहले क्रिकेटर

आईपीएल फ्रेंचाइजी पंजाब किंग्स ने बीते रविवार को श्रेयस अय्यर को टीम का नया कप्तान घोषित किया है। वे आईपीएल 2025 में पंजाब की कमान संभालते हुए नजर आएंगे। जब वे पहले मैच में कप्तान करेंगे तो ये भारतीय क्रिकेटर के तौर पर एक इतिहास लिखा जाएगा। वे भारत के पहले ऐसे कप्तान बन जाएंगे, जिन्होंने दो से ज्यादा टीमों की कप्तानी की है। अभी तक सिर्फ दो ही क्रिकेटर ऐसा कर पाए हैं, लेकिन दोनों विदेशी थे। किसी भारतीय को पहली बार तीन टीमों की कप्तानी करने का मौका मिला है। 21 मार्च से आईपीएल 2025 की शुरुआत होनी है। पंजाब ने 26.75करोड़ रुपये में दाएं हाथ के मध्य क्रम के बल्लेबाज श्रेयस अय्यर को खरीदा था। केकेआर को उन्होंने कप्तानी करते हुए 2024 में चौंपियंस बनाया था। ऐसे में वे इस समय आईपीएल चौंपियंस कप्तान हैं। लेकिन चौंपियंस टीम का हिस्सा नहीं हैं। बता दें कि, श्रेयस अय्यर 18 सीजन में पंजाब किंग्स के 17वें कप्तान हैं। किसी भी अन्य टीम ने इतने कप्तान नहीं बदले हैं जितने पंजाब किंग्स ने बदले हैं। श्रेयस अय्यर ने आईपीएल में इतिहास रच दिया है, क्योंकि वह तीन आईपीएल टीमों की कप्तानी हासिल करने वाले पहले भारतीय खिलाड़ी बन गए। अय्यर 2018 सीजन के मध्य से 2020 तक दिल्ली कैपिटल्स के कप्तान रहे और एक सीजन उन्होंने टीम को फाइनल में भी पहुंचाया। वहीं आईपीएल 2022 से 2024 तक वे केकेआर के कप्तान रहे। वह आईपीएल इतिहास में दो टीमों के साथ आईपीएल फाइनल खेलने वाले एकमात्र कप्तान भी हैं।

अब आईपीएल प्लेयर्स की खैर नहीं, मैदान में की ये गलती तो मिलेगी कड़ी सजा

आईपीएल 2025 मेगा ऑक्शन के बाद अब फैंस को लीग मैचों का बेसब्री से इंतजार है। आईपीएल 2025 के मार्च के आखिरी हफ्ते में शुरू होने की उम्मीद है। हालांकि, बीसीसीआई के उपाध्यक्ष और पूर्व आईपीएल चेयरमैन राजीव शुक्ला ने कहा कि उसकी शुरुआत 23 मार्च से भी हो सकती है। वहीं, विमेंस प्रीमियर लीग का ओजन चार अलग-अलग शहरों में किया जाएगा। वहीं आईपीएल की शुरुआत से पहले मैदान पर खिलाड़ियों के अनुशासन से जुड़े कई नियम सख्त कर दिए गए हैं। आईपीएल अपने नए सीजन में मैदान पर खिलाड़ियों के अनुशासन को लेकर काफी सख्त हो गई है। अब आईपीएल में इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल की आचार संहिता का पालन किया जाएगा। रविवार को हुई गर्वनिंग काउंसिल की बैठक में ये अहम फैसला लिया गया। इसके तहत लेवल 1,2 और 3 के उल्लंघन पर खिलाड़ियों को आईसीसी के नियमों के मुताबिक सजा दी जाएगी। गर्वनिंग काउंसिल के एक सदस्य ने बताया कि, अब इस आईपीएल में आईसीसी के टी20 इंटरनेशनल प्लेइंग कंडीशंस का पालन होगा। पहले लीग के अपने नियम होते थे, लेकिन अब आईसीसी द्वारा निर्धारित कोड ऑफकंडक्ट लागू किया जाएगा।

चौंपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए टीम इंडिया के ऐलान में देरी? यहां जानें कारण

आईसीसी चौंपियंस ट्रॉफी के लिए अबतक 8 में से 6 टीमों ने अपने स्क्वाड का ऐलान कर दिया है। भारत और पाकिस्तान ही ऐसे देश हैं जिन्होंने अपनी टीम का ऐलान नहीं किया है। 19 फरवरी से खेले जाने वाले इस टूर्नामेंट को हाइब्रिड मॉडल के तहत खेला जाएगा। जहां टीम इंडिया के सभी मैच दुबई में होंगे। वहीं सभी टीमों को आईसीसी की गाइडलाइन के तहत 12 जनवरी तक टीमों का ऐलान कर देना था। हालांकि, 12 जनवरी तक 4 ही टीमका ऐलान हुआ था। इसके एक दिन बाद ऑस्ट्रेलिया और साउथ अफ्रीका ने अपनी टीम का ऐलान किया। वहीं टीम इंडिया के स्क्वाड का फैंस बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। लेकिन सवाल भी है कि आखिरी टीम इंडिया ऐलान में इतनी देरी क्यों हो रही है।

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफबुरी तरह सीरीज हारने का बाद की जा सकती है सख्ती

भारतीय कंट्रोल बोर्ड अब अपने खिलाड़ियों पर पांबदियां लगाने पर विचार कर रहा है। जिन नियमों पर विचार किया गया है, उनमें कुछ नियम पुराने हैं। जैसे बड़ी सीरीज या टूर्नामेंट के दौरान पत्नी, गर्लफ्रेंड या परिवार क्रिकेटरों के साथ नहीं ठहरेगा।

पहले भारतीय रेसिंग ड्राइवर बनने से लेकर स्टार्टअप शुरू करने तक

फॉर्मूला वन रेसिंग और भारत का नाम जब भी साथ में लेने पर लोगों की जवान पर सबसे पहला नाम नारायण कार्तिकेयन का ही आता है। कार्तिकेयन भारत के एकमात्र फॉर्मूला वन रेसर थे। उन्होंने 2005 में जॉर्डन टीम के साथ ऑस्ट्रेलियन ग्रैंड प्री से अपने फॉर्मूला वन करियर की शुरुआत की थी। नारायण के पिता जी.आर. कार्तिकेयन पूर्व भारतीय राष्ट्रीय रैली चौंपियन हैं। इसी वजह से नारायण की कार रेसिंग गेम्स में बचपन से ही दिलचस्पी थी। उन्होंने बचपन से ही भारत का प्रथम फार्मूला वन ड्राइवर बनने का सपना देखा हुआ था जो उन्होंने सिर्फ16 साल की उम्र में पूरा कर लिया। चेन्नई के पास श्री पेरम्बूर में हुई नारायण की पहली रेस का नाम था 'फार्मूला मारुति'। उन्होंने इस रेस में न सिर्फइसमें भाग लिया बल्कि विनर भी रहे। उन्होंने फ्रांस के एल्फविन्फील्ड रेसिंग स्कूल से ट्रेनिंग ली और 1992 को फार्मूला रिनॉल्ट कार की पायलट एल्फ प्रतियोगिता में सेमी फाइनलिस्ट बने। नारायण के नाम एक दो तीन नहीं कई सारे खिताब हैं। 1993 में नारायण फार्मूला मारुति रेस में भाग लेने भारत आए। उन्होंने 'फार्मूला वॉक्सहाल जूनियर चौंपियनशिप' में ब्रिटेन में भी भाग लिया। यूरोपीय रेसिंग में अनुभव के बाद 1994 में 'फार्मूला फोर्ड जेटी सीरीज' में फाउंडेशन रेसिंग टीम में नम्बर दो ड्राइवर के रूप में उन्होंने ब्रिटेन में भाग लिया। उसी साल एस्टोरिल रेस में भी वह जीत गए। वह 'ब्रिटिश फार्मूला फोर्ड सीरीज' में यूरोप में चौंपियनशिप जीतने वाले प्रथम भारतीय बने। उसके बाद नारायण कार्तिकेयन ने 'फार्मूला एशिया चौंपियनशिप' की ओर रुख किया। 1995 में उन्होंने कार रेस में भाग लिया और अपनी काबिलियत को साबित किया।

जय जवान
पंजी सं० 14959
जय किसान
भारतीय किसान यूनियन
(महात्मा टिकैत)
(भारत का किसान संगठन)
महात्मा टिकैत
(अमर रहें)
राष्ट्रीय अध्यक्ष
चौ. अनिल तालान
भारतीय किसान यूनियन (महात्मा टिकैत) किसानों/मजदूरों एवं पीड़ितों के कल्याण हेतु सदैव तत्तपर । भारत का सबसे ईमानदार व सच्चा संगठन आपका हार्दिक स्वागत करता है।
राष्ट्रीय महासचिव
सुरेन्द्र शर्मा
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
मनोज सिंह भारद्वाज
आइये भारत के किसानों का कल्याण करें-धन्यवाद

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक, श्रीमती विजय लक्ष्मी शर्मा द्वारा त्रिपाठी प्रिंटिंग प्रेस 12/29, पुराना किला, कैण्ट रोड, लखनऊ 226001 (उ.प्र.) से मुद्रित कराकर 1372/12 न्यू गुडौरा बेहसा शहीदपथ लखनऊ 226008 (उ.प्र.) से प्रकाशित। सम्पादक-अनूप सिंह
आरएनआई न० UPHIN/2023/87118 मोबाइल नं. 7905289865,9839177720 Email- tvnews1979@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा।